नागरी संगम

(आचार्य विनोबा भावे की सत्प्रेरणा से स्थापित नागरी लिपि परिषद् की मुख्यपत्रिका)

वर्ष 34 अंक 136 अक्टूबर-दिसम्बर 2012

35वाँ अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन पणजी (गोवा)

स्मारिका

गोवा के समुद्र तट का एक मनोरम दृश्य

नागरी लिपि परिषद्
19, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-110002

9वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन जोहन्सवर्ग (दक्षिण अफ्रीका)

9वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर
सम्मानित मिजोरम की हिन्दी विदूषी
डॉ० (प्रो०) सी. ई. जीनी तथा
नागालैण्ड के हिन्दी सेवी
श्री पियांग तमजन ज़ामीर
तथा साथ खड़े हैं डॉ० परमानन्द पांचाल

9वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर
'सूचना प्रौद्योगिकी देवनागरी लिपि और
हिन्दी का सामर्थ्य संगोष्ठी में
बोलते हुए डॉ. परमानन्द पांचाल
बाएं से दायें - डॉ. परमानन्द पांचाल,
सुश्री अलका बलराम क्षत्रिय (संसद सदस्य)
माननीय रघुवंश प्रसाद सिंह (संसद सदस्य)
डॉ० अशोक चक्रधर (अध्यक्ष)
डॉ० ओम विकास (बीज भाषण कर्त्ता)
डॉ० बालेन्दु दाधीच (संचालक)

9वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर
विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर,
डॉ० परमानन्द पांचाल की पुस्तक
'हिन्दी भाषाः विविध आयाम'
का लोकपर्ण करते हुए।
बाएं से डॉ० श्री भगवान शर्मा
डॉ. परमानन्द पांचाल
माननीय श्रीमती प्रनीत कौर
तथा अन्य

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

नागरी - संगम

35वाँ अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन

गोवा विश्वविद्यालय, पणजी के सभागार में

दिनांक 19 तथा 20 जनवरी 2013 को आयोजित

अखिल भारतीय कोंकणी परिषद् गोवा

तथा

कोंकणी विभाग गोवा विश्वविद्यालय के सहयोग से

प्रधान सम्पादक :

डॉ. परमानन्द पांचाल

सम्पादक :

डॉ. आनन्द स्वरूप पाठक

प्रबन्ध सम्पादक :

श्री विनोद बब्बर

सह सम्पादक :

श्री रामकुमार पाराशर

श्री ओम प्रकाश आचार्य

अतिथि सम्पादक :

अरविन्द पी0 भाटिकर (आई.ए.एस. सेवा निवृत)

प्रियदर्शिनी तोडकोडकर

आयोजक :

नागरी लिपि परिषद

19, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-110002

फोन / फैक्स : 23329841 E-mail : nagarilipi@gmail.com

(नागरी संगम में प्रकाशित लेखों के सभी विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। वे विचार लेखक के अपने हैं।)

नागरी लिपि परिषद्

संरक्षक :
पद्मभूषण डॉ0 लोकेश चन्द्र पूर्व सांसद
श्री बलदेव राज कामराह शिक्षाविद
डॉ. राम प्रकाश - संसद सदस्य

अध्यक्ष :
श्री सी. वी. चारी

कार्याध्यक्ष :
श्री सतपाल सैनी

उपाध्यक्ष :
डॉ0 शहाबुद्दीन नियाज़ मुह0 शेख
डॉ0 व्यासनारायण दुबे

महामन्त्री :
डॉ. परमानन्द पांचाल

कोषाध्यक्ष :
श्री उमेश चन्द्र त्यागी

वार्षिक चंदा : ₹ 100/-
(विदेश के लिए 4 डालर)
एक प्रति : ₹ 25/-

आजीवन सदस्यता शुल्क : ₹ 1000/- मात्र
(विदेश के लिए 20 डालर)

प्रकाशक :

नागरी लिपि परिषद

19, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-110002

मुद्रक :

आदर्श प्रैस

2023, कूचा चेलान दरियागंज, नई दिल्ली-110002

अनुक्रमणिका

1. "विश्व लिपि नागरी" 3
2. सम्पादकीय 4
3. सन्देश 5
4. राष्ट्रीय एकता के लिए नागरी लिपि
   -सी. वी. चारी 8
5. नागरी लिपि परिषद - इतिहास और कार्य
   -डॉ. परमानन्द पांचाल 9
6. नागरी लिपि परिषद-सामान्य परिचय
   -श्री रामकुमार पाराशर 12
7. देवनागरी लिपि ही कोंकणी भाषा के उत्कर्ष का मार्ग *-डॉ. आनन्द स्वरूप पाठक* 16
8. कोंकणी भाषा और नागरी लिपि
   -डॉ. परमानन्द पांचाल 20
9. देवनागरी लिपि और कोंकणी भाषा
   -डॉ. भारती हिरेमठ 22
10. कोंकणी भाषा और देवनागरी लिपि
   -डॉ. स्नेहलता, शरे 25
11. कोंकणी और नागरी लिपि
   -डॉ. चन्द्रलेखा डि'सौजा 28
12. कोंकणी भाषा के लिए नागरी-प्रयोग की सार्थकता
   -प्रो0 डॉ. एल0 सुनीता वाई 31
13. भारतीय लिपियाँ मानव मस्तिष्क की श्रेष्ठतम कृति है *-डॉ. रामनिवास साहू* 37
14. सूचना प्रौद्योगिकी और नागरी लिपि
   -भवेश खन्ना 41
15. गोंय, कोंकणी आनी देवनागरी लिपी
   -अरविंद भाटीकार 45
16. अखिल भारतीय कोंकणी परिशद :
   -डॉ. तानाजी हळर्णकार 48
17. आन्तर भारती 55
18. नागरी लिपि का प्रयोग करें रोमन का मोह छोड़ें 56
19. 9वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन जोहन्सवर्ग (दक्षिण अफ्रीका) में सम्पन्न 57
20. समाचार सूचना 60
21. पाठकों के पत्र 65
22. नागरी लिपि परिषद के प्रमुख कार्यकर्ताओं का परिचय 66

नागरी संगम

देश की सभी भाषाएं नागरी लिपि में ही लिखी जाएँ।

वर्ष 35 अंक 136 अक्टूबर-दिसम्बर 2012

"विश्व लिपि नागरी"

विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है भाषा।
लिपियों से भाषाओं की उन्नति की आशा।।
विश्व में भाषाओं की, लिपियां हैं अनेक।
देवनागरी लिपि है, सब लिपियों से नेक।।
कहते हैं बर्नाडशा, अवैनिक है रोमन लिपि।
दूँगा सम्पत्ति का अंश एक, जोबता सके आदर्श लिपि।।
कमियाँ लिपि रोमन की खलती हैं विद्वानों को।
व्यूलर हार्न ले-हुक्श मैकडानल ने सराहा है नागरी को।।
थामस आइजेक टेलर की राय में, नागरी है अच्छी।
कहा इजेक पिटमैंन, सर्वश्रेष्ठ नागरी है सच्ची।।
उत्तम अक्षर दूसरी लिपि में नहीं, नागरी से बढ़कर।
प्रो. मोनियर विलियम्स ने कहा, पूर्ण है रोमन से बढ़कर।।
मानव को मस्तिष्क से निकली है, नागरी वर्णमाला।
कहते हैं जान क्राइस्ट पूर्ण नागरी की वर्णमाला।।
सर विलियम जोन्स कहते हैं नागरी रोमन से श्रेष्ठ।
अंग्रेजी भाषा की वर्तनी, अवैज्ञानिक है ठेठ।।
हास्यास्पद है रोमन वर्णमाला की वर्तनी।
पूर्ण अक्षर हे रखती, देवनागरी की वर्तनी।।
ध्वनियों के लिए संकेत चिन्ह हैं नागरी में।
जो बोला वही लिखा जाता है, देवनागरी में।।
कैसी विचित्र हैं सब रोमन की ध्वनियाँ।
पढ़े बट लिखे बी-यू-टी की ध्वनियाँ।।
'क' ध्वनि की अभिव्यक्ति होती है सी.एच.के सी।
'ज' ध्वनि के लिए लिखते हैं जे.जेड़जी।।
रोमन में क्षमता नहीं, विश्वलिपि बनने की।
नागरी मे अधिक गुण 'विश्व लिपि' बनने की।।

-डॉ0 गया प्रसाद विश्वकर्मा
सम्पर्क : पो0 किटहा (सतना) म0प्र0

सम्पादकीय

भारत की प्रायः सभी प्रमुख भाषाओं की लिपियों का स्रोत्र यहाँ की प्राचीन लिपि ब्राह्मी है। इसी से सभी लिपियों का विकास हुआ है। देवनागरी लिपि इसी का विकसित रूप है।

यह लिपि विश्व की सर्वोत्तम लिपि मानी जाती है क्योंकि यह सबसे अधिक वैज्ञानिक और ध्वन्यात्मक लिपि है। इसकी वर्णमाला का वर्गीकरण और आधार मनुष्य के मुख से निःसृत होने वाली ध्वनियां ही है, जो विश्व की अन्य लिपियों में दुर्लभ है।

विश्व के वैज्ञानिकों ने भी इसे कम्प्यूटर के लिए अधिक उपयुक्त और सहज माना है, क्योंकि जिस लिपि में वाक् की अधिकतम ध्वनियों के लिए अनुकूलतम व सहजतम लेखनीय संयोग हो वही लिपि सर्वाधिक सहज, श्रेष्ठ, तथा वैज्ञानिक हो सकती है। देवनागरी लिपि में ये गुण सर्वाधिक हैं। नासा के प्रसिद्ध वैज्ञानिक रिक ब्रिग्स ने तो 1985 के अपने लेख में यह घोषित कर ही दिया है कि संस्कृत भाषा और देवनागरी लिपि ही कम्प्यूटर के लिए अधिक़ सहज और उपयुक्त है।

हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को देश की राजभाषा स्वीकार करते हुए देवनागरी लिपि को ही इसकी अधिकृत लिपि माना है। हिंदी के अतिरिक्त इसे संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कई भाषाओं यथा संस्कृत, मराठी, डोगरी, नेपाली, बोडो, नेपाली, तथा मैथिली ने भी इसे स्वीकार किया है। अपने सहज गुणों के कारण कोंकणी, संताली तथा सिंधी भी इसे स्वीकार कर रही है। उर्दू भाषा का जितना साहित्य अब देवनागरी में आ रहा है उतना शायद फारसी लिपि में भी नहीं है।

विडम्बना यह है कि आज देवनागरी लिपि सर्वगुण सम्पन्न होते हुए भी प्रयोग में पीछे होती जा रही है। हिंदी की बात करें तो हिंदी विश्व में बोली तो खूब जा रही हैं, किंतु लिखी नहीं जा रही है। एक त्रुटिपूर्ण और अवैज्ञानिक लिपि होते हुए भी, सर्वत्र रोमन लिपि का ही, बोल बाला है। हमें निश्चय ही इस पर ध्यान देना होगा। भारत सरकार ने सभी कार्यालयों में इंस्क्रिप्ट की-बोर्ड और यूनिकोड को अनिवार्य बना दिया है, फिर भी इनका प्रयोग न होना एक आश्चर्य की बात है। भारत की सभी भाषाओं को इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड द्वारा आसानी से टंकित किया जा सकता है। हमें इसका पालन करना चाहिए। फोनेटिक की-बोर्ड द्वारा रोमन के माध्यम से हिंदी की टाइपिंग हिंदी के लिए घातक है। हमें सीधे देवनागरी की-बोर्ड पर हिंदी को प्रोत्साहन देना चाहिए। यही सरकार की नीति है फिर भी खेद है कि सरकारी कार्यालय में द्विभाषिक की-बोर्ड अभी भी देखने को नहीं मिल रहे हैं। यदि हमें देवनागरी लिपि को लोकप्रिय बनाना है, तो कम्प्यूटर की-बोर्ड पर भी देवनागरी मौजूद होनी चाहिए, अन्यथा देवनागरी में टाइपिंग को लोकप्रिय नहीं बनाया जा सकेगा।

जहां तक कोंकणी भाषा का प्रश्न है यह भाषा भारोपीय परिवार की एक प्राचीन भाषा है, जिसका संस्कृत से सीधा संबंध है। यह भाषा प्राचीनकाल में देवनागरी लिपि में ही लिखी जाती थी, जिसका उदाहरण हे शक सव्त 1675 ईसवीं का वह लेख जिस पर तीन विद्वानों के हस्ताक्षर हे, देवनागरी लिपि में ही लिखा गया था।

पुर्तगाली साम्राज्य के कारण कोंकणी रोमन में भी लिखा जाने लगा था जो इसकी स्वभाविक लिपि नहीं है।

(डॉ. परमानंद पांचाल)

शीला दीक्षित
मुख्यमंत्री

सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार
दिल्ली सचिवालय, आई. पी. एस्टेट
नई दिल्ली-110113
फोन : 23392020, 23392030
फैक्स : 23392111
अ.शा. पत्र संख्या : OSDCM/221903
दिनांक : 17/10/2012

सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि देवनागरी लिपि परिषद् की ओर से 35 वां अखिल भारतीय देवनागरी लिपि सम्मेलन 19 एवं 20 जनवरी, 2013 गोवा में हो रहा है।

इस अवसर पर परिषद् की ओर से एक स्मारिका का प्रकाशन भी होना है। जिसमें देवनागरी लिपि संबंधित शोधपरक लेख शामिल किये जाऐंगे।

मैं सम्मेलन के आयोजन एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

शीला दीक्षित
(शीला दीक्षित)

डॉ. रत्नाकर पाण्डेय
पूर्व संसद सदस्य (राज्य सभा)
सदस्य : अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

फ्लैट न०. 2-4, प्लाट न० 113-114
कृष्ण कुंज, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092
फोन : 011-22051017, 22051018

28.9.2012

मान्यवर श्री परमानन्द पांचाल जी,

सादर प्रणाम !

आपका फा सं. 8/ना.लि.परि./2012-2013 दिनांक 17.9.2012 पत्र मिला। गोवा में 19 एवं 20 जनवरी, 2013 को आयोजित 35 वें अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका हेतु आपने संदेश मांगा है।

वास्तव में विनोबा जी द्वारा स्थापित नागरी लिपि परिषद् को जिस गतिशीलता के साथ आपके महामंत्रित्व और समस्त पदाधिकारियों के अथक यत्न से पूरे देश और विदेश में अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर मान्यता प्राप्त है और जितने आयोजन देश के कोने–कोने में आप करते हैं वह सभी के लिए आदर्श कर्म के प्रतिष्ठापक होते हैं और लोगों को काम करने की प्रेरणा भी देते हैं।

नागरी लिपि विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है और बिना उसकी सर्वव्यापकता के हिन्दी विश्व भाषा नहीं बन सकती। नागरी लिपि ने सिद्ध किया है कि वह प्रौद्योगिकी की तकनीक के लिए सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है और यह नागरी लिपि की ही देन है कि आज दुनिया में सर्वकम्प्यूटीकरण तथा अन्य उपकरण विकसित हो रहे हैं जिसमें भारत नेतृत्व कर रहा है। आगे आने वाले दिनों में नागरी लिपि विश्व लिपि बने इसमें और किसी को संदेह हो सकता है मुझे नहीं। मुझे विश्वास हे कि 19-20 जनवरी, 2013 को गोवा में आयोजित सम्मेलन, सफलता के नए मानदण्ड स्थापित करेगा और समस्त भारतीय भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि सर्वस्वीकृत लिपि बनेगी। मेरी शुभकामनाएं आयोजन हेतु स्वीकारें।

आशा है, सानन्द हैं।

सादर,

आपका

(डॉ० रत्नाकर पाण्डेय)

श्री परमानन्द पांचाल
महामंत्री, नागरी लिपि परिषद
19, गांधी स्मारक निधि,
राजघाट, नई दिल्ली–110002

प्लाट नं0 28–29, एम 20/53, बुद्ध विहार, द माल कैण्ट, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)–221002

सत्यमेव जयते

Justice Dr. M. Rama Jois

Member of Parliament, (Rajya Sabha)

Former Chief Justice of Punjab and Haryana High Court and
Former Governor of Jharkhand and Bihar

सन्देश

ॐ

भारत में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से नागरी लिपि का प्रयोग सभी जगह होता है। इसी को ध्यान में रखकर राष्ट्रीय ऐक्यता एवं राष्ट्रीय समग्रता की दृष्टि से प्रत्येक भारतीय भाषा में आावश्यकता के अनुसार नागरी लिपि का प्रयोग करना चाहिए।

अतः भारतः के प्रत्येक नागरिक को नागरी लिपि सीखना अपना राष्ट्रीय कर्तव्य समझना होगा।

डॉ. एम. रामा जोयस

राष्ट्रीय एकता के लिए नागरी लिपि

सी. वी. चारी, अध्यक्ष, नागरी लिपि परिषद

उत्तर भारत की भाषाएं और दक्षिण तथा पूर्वोत्तर भारत की भाषाएं आजतक अधिक निकट सम्पर्क में नहीं आ पाईं है। एक देश के निवासी होने पर पर भी हम भाषा की दृष्टि से परस्पर करीब नहीं आ सके। भारतीय भाषाओं के आपसी संबंधों को साबित करने के विभिन्न सूत्रों और माध्यमों पर संजीदगी से विचार करना होगा। इस बहुभाषा-भाषी विशाल देश में हरेक नागरिक, हर एक शिक्षित व्यक्ति नागरी लिपि का जानकार हो, यह आज के परिवेश में आवश्यक है। भारतीय भाषाओं को समझने और उनसे पचिय होने के लिए आज नागरी से बढ़कर दूसरा कोई उत्तम माध्यम नहीं है। भारतीय भाषाओं के आपस में संपर्क और सम्बन्ध जोड़ने का एकमात्र साधन नागरी लिपि है। सारे देश में सौहाद्र, सद्भावना, स्नेह तथा भारतीय भाषाओं की प्रगति चाहने वाले समस्त नागरिकों का कर्तव्य है कि वे इस पवित्र कार्य को आगे बढ़ाएं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती चाहते थे कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक और अटक से कटक तक नागरी अक्षरों का ही उपयोग और प्रचार हो। उन्होंने आर्यावर्त भर में भाषा का ऐक्य संपादन करने क लिए ही अपने सकल ग्रंथ आर्य भाषा में लिखे और प्रकाशित किए हैं।

इसी उद्देश्य को समक्ष रखते हुए गांधीजी ने नागरी लिप को समस्त भारत की राष्ट्रीय लिपि बनाने पर जोर दिया था। गांधी जी की इसी मनोकामना को कार्यान्वित करने और इसको विकसित करने के लिए पूज्य विनोबा जी ने नागरी लिपि के प्रचार को अपने जीवन का मूल उद्देश्य बना लिया था। विनोबाजी केवल भारतीय भाषाओं के लिए ही नहीं विश्व की अन्य भाषाओं के लिए भी नागरी लिपि के वैकल्पिक प्रयोग पर बल देते थे, जिससे यह लिपि एक विश्व लिपि का रूप ले सके और नागरी लिपि अपनी वैज्ञानिकता और श्रेष्ठता के कारण विश्व में अपना स्थान बना सके। सभी भारतीय भाषाओं को नागरी लिपि में लिखने का तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि किसी भाषा या लिपि को दबाने या समाप्त करने का षड्यंत्र है। अनेक प्रकार की जीवन-शैलियां अपनी विशिष्टता के साथ भारतीय रंगमंच पर सुशोभित हो रही हैं, उसी प्रकार प्रादेशिक भाषाएं और शैलियां भी शाश्वत रूप में रहेंगी। उनके अस्तित्व पर आंच नहीं आयेगी। यह भ्रमकाल भ्रम में स्वतः दूर हो जाएगा। किसी भी भाषा के श्रेष्ठ ग्रंथों का नागरी लिप्यन्तरण संभव है परन्तु उस भाषा के समस्त साहित्य के अनुवाद की दुरूहता ही नहीं, असंभव भी होगा।

वास्तविकता यह है कि नागरी में भाषाओं की आत्मा का निवास है। यह वैज्ञानिक लिपि है और भावों को मूर्त रूप देने की इनमें अद्भुत क्षमता है। यह ऐसी लिपि है, जो बोलते हैं, उसी को उसी रूप में लिखते हैं यह इस लिपि की विशेषता है। यही कारण है कि नागरी लिपि को हिन्दी, मराठी, सिंधी, डोंगरी, कोंकणी, राजस्थानी, मगही एवं भोजपुरी आदि भाषाओं नेअपना लिया है और थोड़े प्रयास से इसका बोध सहज रूप में संभव है। मुद्रा लेखन, टेलिप्रिंटर, तार आदि दैनिक व्यवहार के कार्यों में सुगम है।

आशा है गोवा में आयोजित यह 35वां नागरी लिपि सम्मेलन, राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने में सार्थक होगा।

सम्पर्क : सर्वोदय कार्यालय, गांधीभवन, हैदराबाद (आंध्रप्रदेश)

नागरी लिपि परिषद - इतिहास और कार्य

-डॉ. परमानन्द पांचाल

नागरी लिपि परिषद् भारत की एक मात्र संस्था है जो केवल देवनागरी लिपि के ही प्रचार-प्रसार में निरंतर लगी है। इसके पूर्व भी भारत के मनीषियों ने नागरी लिपि के महत्व को समझा और इसके प्रयोग पर बल दिया था। गुजरात के मूल निवासी और आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देवनागरी लिपि को राष्ट्रलिपि के रूप में अपनाने पर बल दिया। बंगाल के विद्वान, न्यायमूर्ति श्री शारदा चरण मित्र ने .एक लिपि विस्तार संस्था की स्थापना कर नागरी के प्रचार-प्रसार के लिए देवनागर नाम से एक पत्र भी निकाला। गांधी जी ने नागरी लिपि के महत्व को समझा और और राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक माना।

आचार्य विनोबा भावे जी ने भारतीय भाषाओं के लिए जोड़-लिपि के रूप में नागरी लिपि को अपनाने की वकालत की! वे चाहते थे कि भारत की सभी भाषाएं अपनी-अपनी लिपियों के साथ-साथ एक अतिरिक्त लिपि के रूप में नागरी लिपि का भी प्रयोग करें। इससे भारत की सभी भाषाएं एक दूसरे के समीप आएंगी और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने में सफलता मिलेगी। इसी उद्देश्य से दिनांक 23-24 फरवरी, 1974 को पवनार आश्रम में देवनागरी संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें आचार्य काका कालेलकर, श्री रा. रा. दिवाकर और नेपाल के प्रतिनिध श्री मानधरे तथा देश के विभिन्न भागों के प्रमुख विद्वानों भाषाविदों और सामाजिक कार्याकर्ताओं ने भाग लिया।

विनोबा जी किसी विषय पर मनमानी करना हिंसा समझते थे। अतः उन्होंने दक्षिण भारत एवं पूर्वोत्तर भारत में संगोष्ठियां करके वहां के विद्वानों का अभिमत जानना आवश्यक समझा। गांधी स्मारक निधि के तत्कालीन अध्यक्ष श्रीयुत श्रीमन्नारायण जी ने इस कार्य को पूरा करने का प्रयास किया। अतः 17 अगस्त, 1975 को दिल्ली में नागरी लिपि परिषद् की स्थापना की गई, जिसका उद्‌घाटन तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री बी. डी. जत्ती ने किया। समारोह में महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री अलीयावार जंग, श्री र. रा. दिवाकर, केन्द्रीय शिक्षा उपमंत्री श्री डी. पी. यादव आदि ने भाग लिया। सभी वक्ताओं ने अपने भाषण में सहलिपि के रूप में नागरी के प्रचार का सांस्कृतिक एकता के प्रबल साधन के रूप में स्वागत किया और कार्य के प्रेरणादाता संत विनोबा भावे के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। श्रीमन्नारायण जी की अध्यक्षता में परिषद का गठन हुआ और इसके 27 सदस्य बनाए गए तथा 85 सहयोगी सदस्य बने। इस प्रकार परिषद ने अपना काम करना प्रारम्भ कर दिया। तभी से यह संस्था नागरी लिपि के प्रचार-प्रसार का निरन्तर कार्य करती चली आ रही है। परिषद के कार्य के साथ सर्व श्री जी. शंकर कुरूप, डॉ. मलिक मोहम्मद, श्री सी. ए. मेनन, श्री राम निवास मिर्धा, कुमारी निर्मला देशपांडे, डॉ. जैनेन्द्र कुमार जैन, श्री सिद्धेश्वर प्रसाद, श्री जयराम, दौलत राम, डॉ. मानधरे (नेपाल), श्री अनन्त गोपाल शेवड़े, वसन्त साठे, श्री नागप्पा, शंकर दयाल सिंह प्रभृति विद्वान और समाज सेवी

सक्रिय रूप से जुड़े रहे हैं।

नागरी लिपि परिषद का पंजीकरण 1975 में हुआ, जिसके प्रथम अध्यक्ष श्रीमन्नारायण और मंत्री श्री देवेन्द्र कुमार थे। संस्थापक सदस्यों में प्रमुख थे - श्री शेरसिंह, भूतपूर्व केन्द्रीयमंत्री श्री रा. शौरी राजन, डॉ. लोकेशचन्द्र, श्री नंदकुमार अवस्थी तथा श्री देवेन्द्र कुमार आदि। नागरी लिपि परिषद का पंजीकृत कार्यालय 19-गांधी स्मारक निधि, राजघाट, नई दिल्ली-110002 हैं।

इस परिषद की स्थापना के उद्देश्य निम्नलिखित हैं -

क. राष्ट्रीय एकता के उद्देश्य से समस्त भारतीय भाषाओं की सहलिपि के रूप में नागरी लिपि को स्वीकार करने का प्रयत्न करना चाहिए।

ख. विश्व की सभी भाषाओं, विशेषकर एशियाई भाषाओं की लिपि के रूप में नागरी को स्वीकार्य बनाने का प्रयास करना चाहिए।

ग. उपयुक्त उद्देश्य की सिद्धि के लिए नागरी लिपि को सर्वोपयोगी बनाने हेतु आवश्यक लिपि-सुधार कार्य में योग देना।

घ. अन्य सभी आवश्यक और समुचित प्रवृतियां चलाना जिससे एक लिपि के उपयोग के द्वारा मानव मात्र की एकता के अंतिम लक्ष्य की ओर बढ़ा जा सके।

कार्य

इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम चलाए जाते हैं।

क. इस विचार को लोकप्रिय बनाने हेतु भिन्न-भिन्न स्तर की संगोष्ठियां आयोजित करना अथवा कराना।

ख. नागरी में प्रकाशित होने वाली विभिन्न भाषाओं की पत्रिकाओं को आर्थिक तथा अन्य सहायता देना अथवा दिलाना।

ग. नागरी लिपि द्वारा भाषाओं को सिखाने वाली पुस्तिकाओं तथा उनकी उत्कृष्ट कृतियों का नागरी में प्रकाशन करना अथवा कराना।

घ. उक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रदर्शनियों तथा जन-संपर्क के सभी दृश्य-श्रव्य साधनों का उपयोग करना।

ङ इस कार्य में लगी हुई विभिन्न संस्थाओं, व्यक्तियों तथा शासकीय विभागों में समन्वय स्थापित करना तथा सबका सहयोग प्राप्त करना।

च. कार्य के सुचारू संचालन के लिए क्षेत्रीय संगठन स्थापित करना और समान उद्देशीय संस्थाओं को इस कार्य के लिए प्रोत्साहन तथा आवश्यक सहायता देना, दिलाना।

छ. राजकीय तथा अन्य स्रोतों से आवश्यक धन प्राप्त करना, ऋण लेना, देना, चल-अचल संपत्ति जुटाना उनका आवश्यकतानुसार विनियोग करना। इस समय नागरी लिपि के प्रमुख कार्य निम्नप्रकार हैं -

1. **'नागरी संगम' पत्रिका** - नागरी लिपि के संबंध में जागरूकता फैलाने व प्राचीन एवं आधुनिक विद्वानों के विचारों से परिचित कराने के लिए नागरी लिपि परिषद् गत 1977 से एक त्रैमासिक पत्रिका 'नागरी-संगम' का निरन्तर प्रकाशन करती आ रही है। यह एक शोध पत्रिका है जिसके सम्पादन मंडल में देश के विभिन्न विश्वविद्यालय के विद्वान और भाषाविद् शामिल

हैं।

2. **नागरी लिपि संगोष्ठियां**- परिषद प्रतिवर्ष देश के विभिन्न भागों, विशेषकर हिंदीतर राज्यों में संगोष्ठियां आयोजित करती है, जिनमें उच्च शिक्षा संस्थाएं एवं विश्वविद्यालय स्तर के देश-विदेश के विद्वान भाग लेते हैं। अब तक 100 से अधिक नगरों में संगोष्ठियां आयोजित की जा चुकी हैं।

3. **नागरी लिपि प्रशिक्षण**- जहां जिन क्षेत्रों के लोग नागरी लिपि से परिचित नहीं हैं, उन्हें नागरी अक्षरों का ज्ञान कराने के लिए दो-तीन सप्ताह या एक महीने के प्रशिक्षण कार्यक्रम नागरी लिपि परिषद् के कार्यकर्ताओं द्वारा चलाए जाते हैं। जिन प्रदेशां की भाषाओं की लिपि नागरी नहीं है या जो लोग उर्दू भाषी हैं या अन्य जनजातीय भाषाएं बोलते हैं उनमें यह प्रशिक्षण दिया जाता है।

4. **कम्प्यूटर प्रशिक्षण**- कम्प्यूटर पर देवनागरी के प्रयोग को बढ़ावा देना और प्रशिक्षण का आयोजन करना नगारी लिपि का प्रमुख कार्य है।

5. **नागरी निबन्ध प्रतियोगिता**- देश के विद्यार्थियों, शोधार्थियों और विद्वानों में नागरी लिपि सम्बन्धी जानकारी और उसके प्रचार-प्रसार की दृष्टि से प्रतिवर्ष निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। परिषद् प्रतियोगिता में भाग लेने वाले उत्कृष्ट लेखकों को पुरस्कृत भी करती है।

6. **विनोबा नागरी पुरस्कार**- नागरी लिपि के सर्वाधिक प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग के कार्य में संलग्न संस्था को दस हजार रुपये का और नागरी के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित भावना से कार्य करने वाले निष्ठावान व्यक्ति को पांच-पांच हजार रुपए का प्रतिवर्ष 'विनोबा नागरी पुरस्कार' प्रदान किया जाता है।

7. **भारतीय भाषाओं की नागरी लिपि में प्रकाशित पत्रिकाओं को आर्थिक अनुदान**-हिन्दी को छोड़कर अन्य भारतीय भाषाओं की नागरी लिपि में प्रकाशित होने वाली कुछ पत्रिकाओं को परिषद द्वारा थोड़ी आर्थिक सहायता भी दी जाती है ताकि इन भाषाओं के लिए नागरी लिपि का प्रयोग भी बढ़ाया जाए। गत वर्ष कन्नड विश्व नागरी और उड़िया विश्वनागरी को ऐसी सहायता दी गई।

8. **वार्षिक सम्मेलन**-प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन का आयोजन किया जाता है, जिसमें देश के जाने-माने विद्वान नागरी-प्रेमी, भाषाविद् सर्वोदयी कार्यकर्ता एवं गांधीवादी विचारधारा से जुड़े व्यक्ति भाग लेते हैं और नागरी लिपि के प्रसार से सम्बन्धित समस्याओं पर विचार विमर्श करते हैं तथा आगामी वर्ष के लिए रीतिनीति तय करते हैं। ये सम्मेलन देश के विभिन्न भागों में, विशेषकर हिंदीतर भाषी राज्यों में आयोजित किए जाते हैं और इसी में 'विनोबा नागरी पुरस्कार' भी प्रदान किए जाते हैं। अब तक ऐसे 29 सम्मेलन आयोजित किए जा चुके हैं। परिषद का लक्ष्य विनोबा जी, के उस सपने को साकार करना है, जिसमें नागरी लिपि को विश्वनागरी के रूप में लोकप्रिय बनाने की कल्पना की गई थी। परिषद उसी दिशा में सतत रूप से अग्रसर है। परिषद अब अपने कार्यक्षेत्र की सूरीनाम, मॉरीशस, फीजी, त्रिनिडाड एवं टोबेगो तथा दक्षिणी अफ्रीका जैसे अन्य देशों तक भी बढ़ना चाहती है जहां भारतीय मूल के लोग बहुत संख्या में रहते हैं।

डॉ. परमानंद पांचाल 'महामंत्री', नागरी लिपि परिषद, 232, ए, पाकेट-4, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110091

नागरी लिपि परिषद-सामान्य परिचय

श्री रामकुमार पाराशर

एकता के साधनों में भाषाओं और लिपियों का प्रमुख स्थान है। विनोबा जी मानते थे कि यदि नागरी लिपि का प्रयोग देश में हो तो भावानात्मक एकता जागृत होगी। इसी भावना में हो तो भावानात्मक एकता जागृत होगी। इसी भावना का आदर करते हुए गांधी स्मारक निधि ने 23 और 24 फरवरी, 1974 को पवनार (वर्धा) में देश के प्रमुख मनीषियों का एक सम्मेलन आयोजित किया, जिसे विनोबा जी ने संबोधित किया तथा देश में (सभी लिपियों के साथ-साथ) नागरी प्रयोग को बढ़ावा देने का आग्रह किया। इसी समय श्री मन्नारायण जी की अध्यक्षता में एक कार्यान्वयन समिति गठित की गई। फलत 17 अगस्त, 1975 को नागरी लिपि परिषद का उद्घाटन दिल्ली में उपराष्ट्रपति श्री बी.डी. जत्ती ने किया। तभी से अब तक नागरी लिपि परिषद बिना किसी विरोध के शान्तिपूर्ण ढंग से अपने कार्य में अग्रसर है।

1. **परिषद् कार्यालय**-परिषद् के प्रारम्भ से ही नागरी लिपि परिषद् का कार्यालय 19, गांधी स्मारक निधि, राजघाट, दिल्ली-110002 में स्थित है। कार्यालय परिषद के महामंत्री के प्रत्यक्ष अधिकार में कार्य करता है। कार्यालय का काम सदस्यों से पत्र-व्यवहार करना आदि है यह सरकारी कार्यालयों व विशेषतः हिन्दी निदेशालय से पत्राचार कर तालमेल रखता है। श्री रामकुमार पाराशर कार्यालय मन्त्री हैं।

2. **वार्षिक नागरी लिपि सम्मेलन**-नागरी लिपि के प्रयोग को बढ़ावा देने की दृष्टि से परिषद, अखिल भारतीय स्तर पर वार्षिक सम्मेलनों का आयोजन करती है। इनमें देश के विभिन्न प्रदेशों के विद्वान भाषाविद एवं साहित्यकार नागरी प्रयोग के लाभों पर और उसके प्रसार-प्रचार के विविध आयामों पर अपने विचार व्यक्त करते हैं। सम्मेलन का आयोजन विभिन्न प्रदेशों में व देश की राजधानी में किया है। परिषद् अब तक 34 अ.भा. नागरी लिपि सम्मेलन आयोजित कर चुकी है, जिनमें से 20 सम्मेलन देश की राजधानी दिल्ली में आयोजित किए गये हैं तथा छब्बीसवां हैदराबाद में, पन्द्रहवां औरंगाबाद में, उन्नीसवां तिरुपति में, बीसवां रायपुर (छत्तीसगढ़) में, तेईसवां शिरडी में, चौबीसवां इन्दौर में, अट्ठाईसवां शिलांग में एवं इक्कतीसवां अहमदाबाद में आयोजित किये हैं। बत्तीसवां सम्मेलन शिलांग में 33वां सम्मेलन, लोणावला (पुणे) में तथा 34वां सम्मेलन ईटानगर (अरूणाचल प्रदेश) में हुए हैं।

3. **नागरी संगम पत्रिका का प्रकाशन**-परिषद विगत 34 वर्षों से नागरी-संगम पत्रिका का प्रकाशन कर रही है। अभी पत्रिका का 135वां विश्व नागरी अंक प्रकाशित हुआ है। समय-समय पर पत्रिका के विशेषांक भी निकलते हैं। पत्रिका के विनोबा विशेषांक, स्वतंत्रता स्वर्ण जयंती विशेषांक, रजत जयन्ती विशेषांक, विश्वनागरी तथा कोंकणी विशेषांक आदि उल्लेखनीय है। पत्रिका के संपादन मंडल में विश्वविद्यालयों के विद्वान हैं। पत्रिका के संपादक **डॉ. आनन्द स्वरूप पाठक** हैं तथा प्रधान संपादक **डॉ. परमानन्द पांचाल** हैं।

4. **विनोबा नागरी पुरस्कार**-परिषद नागरी प्रचार के लिए समर्पित व्यक्ति/व्यक्तियों को तथा एक संस्था को प्रतिवर्ष पुरस्कार देती है। अब तक दिए गए पुरस्कारों का विवरण निम्न प्रकार है-

सम्मेलन वर्ष	संस्थागत पुरस्कार	सम्मान राशि	व्यक्तिगत पुरस्कार	सम्मान राशि
16वां दिल्ली	भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ, (उत्तर प्रदेश)	10,000/-	श्री लक्ष्मण श्रीधर बाकणकर, पुणे (महाराष्ट्र)	5,000/-
17वां बंगलौर	गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा राज्य घाट, नई दिल्ली-110002	10,000/-	श्री शकुन्तला चौधरी असमिया विश्वनागरी गोहाटी, असम	5,000/-
18वां दिल्ली	सर्वोदय प्रेस सर्विस इंदौर, मध्य प्रदेश	10,000/-	सुश्री चेन्नमा हिल्लीकेरी बंगलौर कर्नाटक	5,000/-
19वां तिरुपति	अरूणाचल प्रदेश संस्थान ईटा नगर (अरूणाचल)	5,000/-	श्रीमती अन्नपूर्णा महाराणा	5,000/-
	संताली साहित्य परिषद बिहार, देवधर	5,000/-	कोरापुट, उड़ीसा	
20वां रायपुर	उत्कल नागरी लिपि परिषद सर्वोदय समिति, कोरापुट उड़ीसा	10,000/-	डॉ. राम कृपाल तिवारी पोर्टब्लेयर अण्डमान, निकोबार द्वीप समूह	5,000/-
21वां दिल्ली	दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा चेन्नई, तमिलनाडु	10,000/-	डॉ. शाहबुद्दीन नियाज, मौ. शेख, अहमदनगर (महाराष्ट्र)	5,000/-
अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन				
1999	एशिया अफ्रीका भाषा संस्थान तोक्यो, जापान		प्रो. उलत्सिफिरेब ओलेग, रशिया डॉ. फ्राईडमैन श्लैण्डर, जर्मनी डॉ. नेतराम शर्मा, फिजी डॉ. राम डी चौधरी, अमेरिका प्रो. अकिरा ताकाहशी, जापान प्रो. एम.ए. खान, दिल्ली	
22वां दिल्ली	राष्ट्रीय हिन्दी परिषद नेवासा (महाराष्ट्र)	10,000/-	विधुभूषणदास गुप्ता कलकत्ता	5,000/-
23वां शिरडी	बोडो साहित्य सभा, कोकराझार, असम	10,000/-	स्व. दिनेश्वर ब्रह्म असम	5,000/-

24वां इन्दौर	आदिम जाति सेवक, संघ	10,000/-	श्री दत्तात्रेय मिश्र सिलचर, असम	5,000/-
25वां दिल्ली	मिजोरम हिन्दी प्रचार सभा, आइजोल मणिपुर हिंदी परिषद् इम्फाल	5,000/- 5,000/-	श्री सूर्यवंशी चौधरी गोहाटी असम	5,000/-
26वां हैदराबाद	विकास हिन्दी शिक्षा समिति बड़लागुड्डा जागी जिला रंगारेड्डी (आन्ध्र)	5,000/-	श्री विद्याधर गुरुजी गुलबर्गो (कर्नाटक) डॉ. व्यास नारायण दुबे रायपुर (छत्तीसगढ़)	5,000/- 5,000/-
27वां दिल्ली	राष्ट्रभाषा विद्यापीठ सिलचर (असम)	10,000/-	आचार्य राधागोविन्द थौंडाम, मणिपुर इम्फाल	5,000/-
28वां शिलांग	कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति बंगलौर	10,000/-	सुश्री निर्मला पुत्तुल (संताली भाषा) (झारखण्ड)	5,000/-
29वां बंगलौर	लुङ लुई हिंदी स्कूल मिजोरम कर्नाटक हिंदी प्रचार समिति बंगलौर	5,000/- 5,000/-	डॉ. मलिक मोहम्मद नागरकोइल, तमिलनाडु	5,000/-
30वां दिल्ली	सुश्री चेन्नमा हल्लिकेरी संपादक कन्नड विश्व नागरी कर्नाटक	10,000/-	श्री पुरुषोत्तम मल्लया कोचीन केरल) श्री एम पियांगतेमजन जामीर नागालैण्ड	5,000/- 5,000/-
31वां अहमदाबाद	आन्ध्रप्रदेश नागरी लिपि परिषद हैदराबाद	10,000/-	डॉ. बालशैरी रेड्डी (आन्ध्र) डॉ. सी.ई. जिनी (मिजोरम)	7,000/-
32वां शिलांग	पूर्वोत्तर भाषा साहित्य अकादमी	10,000/-	श्री रमण शाडिल्य डॉ. रामनिरंजन परिमलेन्दु	7,000/- 7,000/-
33वां लोणावला (पुणे)	तमिलनाडु बहुभाषी लेखिका संघ चेन्नई	10,000/-	डॉ. सत्तिगेरी, (वंगलौर) श्री सरदार कादरी, (जबलपुर)	7,000/- 7,000/-
34वां ईटानगर	दालगाद देवनागरी कोंकणी गोआ	10,000/-	डॉ. जोरम आनिया ताना, ईटानगर (अरूणाचल) डॉ. इसपाक अली (बंगलौर)	8,000/- 8,000/-

5. **नागरी लिपि संगोष्ठियां**–परिषद प्रतिवर्ष देश के विभिन्न नगरों में 5 या 6 संगोष्ठियां आयोजित करती है। अभी तक मेरठ, भुवनेश्वर, कटक, तिरुपति, कन्याकुमारी, कालीकट, बारामती, कोरापुट, नासिक, अहमदनगर, श्रीरामपुर, धारवाड़, बंगलौर, रायपुर, उज्जैन, इन्दौर, गोहाटी, जम्मू, ईटानगर, सिलचर, महबूबनगर, बेलगांव, अमृतसर, शिलांग, तथा पटियाला आदि देश के 100 से अधिक नगरों में संगोष्ठियां कर प्रबुद्ध वर्ग में नागरी के प्रति जागरूकता पैदा की है।

6. **नागरी लिपि प्रशिक्षण**–नागरी लिपि सीखने के इच्छुक ऐसे लोगों के लिए जिनके पास अन्य कोई साधन नहीं हैं पर वे लिपि सीखना चाहते हैं नागरी लिपि परिषद् अहिन्दी प्रदेशों से तथा उर्दू आदि भाषाएं जानने वालों के लिए नागरी लिपि प्रशिक्षण वर्ग चलाती हैं, जिनमें नागरी लिपि का काम चलाऊ ज्ञान प्रदान किया जाता है।

7. **नागरी लिपि निबन्ध प्रतियोगिता**–देश के नवीन पीढ़ी को नागरी लिपि सम्बन्धी जानकारी प्राप्त कराने, नागरी पढ़ने और नागरी प्रसार की दृष्टि से नागरी लिपि परिषद वार्षिक आधार पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन करती है। ये प्रतियोगिता तीन श्रेणियों में विभक्त है। प्रथम वर्ग 9वीं कक्षा से 12 कक्षा तक के विद्यार्थियों का होता है। द्वितीय वर्ग कालेज छात्रों अर्थात् बी.ए. एम.ए. के विद्यार्थियों का होता है तथा तीसरा वर्ग शोधवर्ग है इसमें एम.ए. उत्तीण शोध छात्र व शोध उपाधिधारी विद्वान भाग लेते हैं। निबन्ध प्रतियोगिता में 50000 (पचार हजार रुपये) प्रतिवर्ष के पुरस्कार आदि के लिए निर्धारित हैं।

नागरी लिपि परिषद का उद्देश्य महान एवं विस्तृत है इसका कार्य क्षेत्र विशाल है तथा राष्ट्रहित से जुड़ा हुआ है। परिषद के समर्पित कार्यकर्ता प्रतिवर्ष कार्य की गति तीव्र से तीव्रतर करते हुए उद्देश्य पूर्ति में लगे हुए हैं। सरकारी और जन सामान्य की सहायता से कार्य उत्तरोत्तर प्रगति पर है। समग्र भारत नागरी लिपि से परिचित हो, यह उद्देश्य प्राप्तव्य है।

सम्पर्क : 8, विजय ब्लॉक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092

35वां अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन के अवसर पर

शुभ कामनाएं

सत साहित्य सहयोगी संघ

गाँधी दर्शन, नुमाइश मैदान

हैदराबाद - 500001, दूरभाष : 24616057

पब्लिसशर्स गाँधियन, योग

एवं

प्राकृतिक चिकित्सा साहित्य के अधिकृत विक्रेता

नवजीवन ट्रस्ट अहमदाबाद

सुरेन्द्र लूणिया

अध्यक्ष

देवनागरी लिपि ही कोंकणी भाषा के उत्कर्ष का मार्ग

-डॉ. आनन्द स्वरूप पाठक

सन 1961 में गोवा पुर्तगाली दासता से मुक्त हुआ, सन् 1962 में 'झा आयोग ने कोंकणी भाषा को देवनागरी लिपि में शिक्षण देने का सुझाव दिया, सन् 1975 में केन्द्रीय साहित्य अकादेमी दिल्ली ने कोंकणी को स्वतंत्र भाषा के रूप में मान्यता देकर, कोंकणी की उत्कृष्ट कृति पर पुरस्कार देंना प्रारंभ किया। 1988 में गोवा स्वतंत्र राज्य बना, 1992 में कोंकणी भाषा को राजभाषा की मान्यता मिली। कोंकणी साहित्य परिषद् कोंकणी भाषा प्रचार सभा देवनागरी कोंकणी परिषद्, आदि संस्थाओं ने देवनागरी को कोंकणी की लिपि स्वीकार कया। कोंकणी भाषियों की संस्थाओं ने और अन्य सरकारी, गैर सरकारी संस्थानों के सहयोग ने कोंकणी के लिए देवनागरी प्रयोग का मार्ग प्रशस्त कर दिया है, अब कोंकणी भाषियों के कर्तव्य शेष हैं।

भाषा सामाजिक व्यवस्था का मूलाधार है। मानव को आदिम अवस्था से आज के संगणक (कम्प्यूटर) युग तक लाने का श्रेय भी भाषा को ही है। भाषा को स्थायित्व प्रदान करने का साधन लिपि है। लिपि के साधन द्वारा भाषा को चिरकाल तक रखा जा सकता है। अशोक स्तम्भों पर अंकित लेख इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। संसार में बहुसंख्यक भाषाएँ तथा बोलियाँ लिपिहीन हैं उनकी मौखिक परम्परा है। वे भाषाएँ और बोलियाँ विचार विनिमय का साधन तो होती हैं किन्तु लिपि के अभाव में उनमें व्यक्त विचारों को स्थायी रूप नहीं दिया जा सकता। अतएव प्रत्येक भाषा के लिए एक लिपि अनिवार्य है। कोंकणी भाषा गोवा राज्य की मुख्य भाषा के रूप में व्यवहृत होती है। कारवार (कर्नाटक) से लेकर रत्नागिरि (महाराष्ट्र) तक का क्षेत्र कोंकण प्रदेश कहलाता है। प्राचीन काल में यह क्षेत्र काठियावाड से कन्याकुमारी तक माना जाता था और इसके केरल, तुलंग, गोवर्षत् कोंकण, केरालट वरालट और बर्बर सात भाग थे। वर्तमान समय में कोंकणी भाषा बोलने वाले, गोआ, महाराष्ट्र कर्नाटक और केरल तक बसे हुए हैं। कुछ समय पूर्व तक कोंकणी भाषा को मराठी की एक चोटी माना जाता था। खोज के वातायनों से आगत प्रकाश से स्पष्ट हुआ है कि कोंकणी संस्कृत की वंशज भाषा है तथा इसकी आधारिक शब्दावली संस्कृत एवं प्राकृत भाषाओं से आगत है, चाहे वह तत्सम रूप में हो या तद्भव रूप में। किन्तु यह भाषा हिन्दी आदि संस्कृत की वंशजा अन्य भाषाओं से दूर प्रदेश में व्यवहृत होने के कारण हिन्दी भाषा भाषियों को दूर से अपरिचित सी भले ही लगे पर इसके अध्ययन के उपरान्त ज्ञात होता है कि तथ्य उनके विचारों से सर्वथा भिन्न हैं। यह सत्य है कि इस भाषा पर विदेशी पोर्तगीज़ भाषा का प्रभाव पड़ा है वहीं इस पर कन्नड़, मराठी, मलयालम आदि देशी भाषाओं का प्रभाव भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

कोंकणी भाषा एवं उसकी लिपियाँ

पुराकाल में कोंकणी भाषा के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग होता रहा। सन् 1684 के आस पास धर्मान्ध पोर्तुगीज शासकों ने यहाँ के निवासियों को बलात् ईसाई धर्म स्वीकारने के प्रयास किये और और मन्दिरों को नष्ट किया। मन्दिरों में रक्षित संस्कृत और कोंकणी साहित्य जला दिया। यह एक पक्ष है इसका दूसरा पक्ष यह है कि पुर्तगाली लोगों ने जहाँ कोंकणी साहित्य नष्ट किया वहाँ कोंकणी भाषा में साहित्य रचना भी की जो आज भी रोमन लिपि में लिखित रूप में प्राप्त है। स्व्रस्ति पुराण में कोंकणी गद्य मिलता है। पुर्तगाल के ब्रागानगर के ऐतिहासिक संग्रहालय में रोमन लिपि में लिखित कोंकणी गद्य प्राप्त है। पुर्तगालियों के अत्याचारों से पीड़ित कोंकणी भाषियों ने कर्नाटक महाराष्ट्र और केरल में आश्रय लिया। जिन लोगों ने कर्नाटक में आश्रय लिया उन्होंने कन्नड़ लिपि को अपनाया जिन्होंने केरल में आश्रय लिया उन्होंने मलयालम लिपि को अपनाया और जो महाराष्ट्र चले गये उन्होंने देवनागरी को अपनाया। मंगलौर आदि के कोंकणी भाषी मुस्लिम लोगों ने अरबी फारसी लिपि में कोंकणी को लिखा। इस प्रकार कोंकणी भाषा रोमन देवनागरी, कन्नड़, मलयालमय और अरबी फारसी लिपि में लिखी गई। परन्तु इस तथ्य में सन्देह के लिए कोई अवकाश नहीं है कि कोंकणी की मूल लिपि उत्तरी ब्राह्मी लिपि की वंशजा लिपि ही रही होगी।

कोंकणी भाषा का आदि स्रोत

गोवा इस कोंकण का केन्द्र है। कोंकणी इंडो आयंन कुल की संस्कृत की वंशजा भाषा है। इसका उद्भव मागधी प्राकृत से माना जाता है। उदाहरणों से स्थिति स्पष्ट हो जाती है।

उदाहरणार्थ

संस्कत		प्राकृत		कोंकणी
आम्रातक	>	अम्वाडओ	>	अम्बाडो
कंकणम्	>	कंकण	>	कंकण
भ्राता	>	भाडउ	>	भावु
मुद्गर	>	मोग्गर	>	मोग्गरें
स्कन्ध	>	खंदओ	>	खंदो

कोंकणी भाषा के लिए एक लिपि देवनागरी

कोंकणी के हितैषी विद्वानों ने दशाद्वियों पूर्व नागरी लिपि अपनाने का सुझाव दिया है। कोंकणी भाषा के लिए लिपि की दृष्टि से विचार करते हुए डॉ. हेतलता सावरकर ने लिखा है कि:-

"भाषा के स्वरूप की दृष्टि से कोंकणी के अनेक भेद लक्षित हैं। पुर्तगालियों के सम्पर्क में आने के कारण गोआ के प्रचलित कोंकणी पर पुर्तगाली भाषा का अमिट प्रभाव पाया जाता है। इसी तरह कर्नाटक, महाराष्ट्र और केरल प्रदेशों में प्रचलित कोंकणी पर क्रमशः कन्नड़, मराठी और मलयालम का रंग चढ़ गया है। इस भाषा की अन्यतम विशेषता यह है कि इसकी अपनी कोई एक लिपि भी नहीं है। भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न लिपि का प्रयोग किया जाता है। इस तरह देवनागरी, द्रविड़ और रोमन लिपि में कोंकणी लिखी जाती है फिर भी देवनागरी लिपि इस भाषा की प्रकृति के अधिक निकट पड़ती है।"

एक स्रोत से निसृत होने के कारण व शब्दावली की समानता के कारण देवनागरी लिपि में भाषा का अंकन वैज्ञानिक एवं शुद्ध रूप में हो जाता है अतएव यह लिपि वरण करने योग्य हैं इस आशय का निर्णय वर्षों पूर्व कोंकणी भाषा-भाषियों ने स्वप्रेरणा से लिया भी है। प्रो. मनोहर सार देसाई ने लिखा है कि :-

"इतिहास की बाध्यताओं के कारण कोंकणी साहित्य तीन लिपियों में अर्थात् देवनागरी रोमन और कन्नड़ में विभाजित हो गया। पंचम दशक में, गोआ स्वातन्त्र संघर्ष की अवधि में कोंकणी भाषा प्रेमियों ने **कोंकणी साहित्य परिषद** के माध्यम से देवनागरी को कोंकणी की प्रमुख लिपि ग्रहण कर सक्रिय प्रयासों द्वारा इसे नवीन गति प्रदान की, सभी वर्गों के बिना ननु न च किए एकमत से इसे स्वीकार किया तभी से एक नवीन पीढ़ी का उदय हुआ जो कोंकणी को देवनागरी लिपि में लिखती हैं।"

जिस प्रकार गोआ आदि स्थानों पर कोंकणी के लिए नागरी लिपि का प्रयोग हो रहा है उसे कोंकणी लिखने बोलने वालों को बढ़ावा देना चाहिए तथा अन्य प्रकार में यथाशक्य प्रयास करने चाहिए कि इसका साहित्य नागरी लिपि में प्रकाशित किया जाये जिससे यह भाषा देश की प्रमुख धारा में यथाशीघ्र मिलकर अपने साहित्य अमूल्य धरोहर को समग्र राष्ट्र का रिक्थ बना सके।

भारतीय आर्य भाषा की विकास परम्परा में संस्कृत प्राकृत कोंकणी का सम्बन्ध है। संस्कृत में तीन लिंग और तीन वचनों का विधान था। प्राकृत में द्विवचन का लोप हो गया कोंकणी की स्थिति भी यही है। कोंकणी कोंकण की भाषा है पर इसका आशय यह कदापि नहीं है कि इसका उद्भव कोंकण में हुआ है। डा0 दलगादा की मान्यता है कि **संस्कृत से विकसित सरस्वती बालभाषा में ही कोंकणी का प्राचीनतम रूप सुरक्षित रहा हैं।** इस भाषा को कोंकणी तक ले जाने वाले तिरहुत (त्रिहात्र) के गौड सारस्वत ब्राह्मण हैं। सारस्वतों का मूल स्थान सरस्वती प्रदेश अर्थात् ब्रह्मवर्त था। ब्रह्मावर्त की परिषा मनुस्मृति में निम्न प्रकार दी गई हैं :-

"सरस्वती दृषद्वत्यो र्देवनद्योर्यदन्तस्य
तं देव निर्मितं देशं ब्रह्मवर्त प्रचक्षते।

सरस्वती नदी के विलीन हो जाने पर ये सारस्वत ब्राह्मण गौड़ प्रदेश के तिरहुत (त्रिहोत) प्रदेश में चले गये और गौड सारस्वत ब्राह्मण अभिधान से जाने गये। स्कन्द पुराण में उल्लेख है कि उन ब्राह्मणों को परशुराम गोवा (गोमांचल) ले गये और उन्हें वहाँ बसाया था :-

"पश्चात् परशुरामेण ह्यनीथ मुनयोदश।
त्रिहोत्रवासिनश्चैव पंचगौडातरै स्थितः।
गोमांचले स्थापितश्चैव पंचक्रोष्यां कुशस्थली।।"

(स्कन्द पुराण, सह्याद्रिखंड श्लोक 47-48)

गोआ की पेड़ से तहसील के हरमल नामक ग्राम के पास क्षत्रिय संहार के पाप प्रक्षालनार्थ यज्ञ सम्पन्न हुआ। वहाँ आज भीराख (यज्ञभस्म) के टीले हैं। वहाँ के रहने वाले इस किम्वदन्ती को सुनाते हैं। और उस राख को पुण्य दायिनी मानते हैं।

कोंकणी की वर्तमान स्थिति

सन् 1961 में गोवा पुर्तगाली दासता से मुक्त हुआ। और भारत गणराज्य में शामिल हो

गया। 1962 में 'झा' आयोग' ने केन्द्र को प्रस्तुत अपने प्रतिवेदन में लिखा है कि स्कूलों में, कोंकणी का प्रशिक्षण देवनागरी के माध्यम से किया जाए। सन् 1988 में गोवा एक स्वतंत्र राज्य बना तथा सन् 1992 में कोंकणी भाषा को राजभाषा की मान्यता मिली और यह संविधान की अष्ट्म सूची में सम्मिलित कर ली गई। आज की स्थिति में बम्बई से केरल तक कोंकणी की लगभग 25 से अधिक बोलियाँ प्रचलित हैं, इनमंचितपावनी, मंगलौरी सारस्वत, चित्रापुर, कोंकणी कोचीन की कोंकणी, मालवाणी आदि प्रमुख हैं। गोवा में कोंकणी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। मराठी की लिपि देवनागरी (बालबोध) होने के कारण तथा प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च शिक्षा का माध्यम देवनागरी होने के कारण गोवा के निवासी कोंकणी के लिए देवनागरी प्रयोग करने के अभ्यस्त हैं। देवनगरी माध्यम से पर्याप्त साहित्य का सृजन होता है। **कोंकण में मात्र गोवा विश्वविद्यालय में ही कोंकणी विभाग है जिसमें स्नातकोत्तर अध्ययन की सुविधाएँ हैं।** गोवा के निकटस्थ कर्नाटक के कारवार जिले की भाषा भी कोंकणी है पर यहाँ पर कन्नड़ लिपि में लिखी जाती हैं गोवा तथा कारवार के कोंकणी भाषा भाषी परस्पर कोंकणी में वार्तालाप कर सकते हैं पर लिखित कोंकणी नहीं समझ सकते। इसका कारण लिपि भिन्नता है। सावंतवाड़ी सिंह दुर्ग, रत्नागिरि की मालवणी को कारवार कोंकणी जानने वाले नहीं समझ पाते हैं। कर्नाटक राज्य का मंगलौर जिला कारवार जिले से लगा हुआ है। यहाँ की जनता कोंकणी के लिए कन्नड़ लिपि का प्रयोग करती आई है। **मंगलौर में कोंकणी भाषा साहित्य गोवा की अपेक्षा अधिक प्रकाशित होता है। मंगलौर में दस से अधिक समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं।** गोवा में भी और नामक समाचार कोंकणी में छपते हैं। 'मालवणी का साहित्य भी नागरी में प्रकाशित होता है।

कोंकणी भाषा के सागर तट के मौसम केकारण नासिका से उच्चारित शब्दों का आधिक्य है। अतएव अक्षरों पर अनुस्वार चिह्नों का प्रयोग करना होता है। संस्कृत के ऋ और ळ अक्षर भी कोंकणी में प्रयुक्त होते हैं, उनका प्रावधान हिन्दी में भी है अतएव कोंकणी को नागरी लिपि में लिखने में कोई कठिनाई नहीं आती है। जब से त्रिभाषा सूत्र शिक्षा क्षेत्र में लागू हुआ है तभी से नवीन पीढ़ी के शिक्षार्थी देवनागरी लिपि और हिन्दी से परिचित होने लगे हैं। कोंकणी भाषा के हित में एक लिपि अपनाना श्रेयस्कर है। कोंकणी को प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा का माध्यम तभी बनाया जा सकता है जब उसकी एक सर्वमान्य लिपि हो। अतीत की परिस्थितियों को अतीत में छोड़कर भविष्य निर्माण के लिए **कोंकणी माध्यम यूनीवर्सिटी स्तर तक होना अनिवार्य है।** यह कार्य मात्र देवनागरी लिपि अपनाने से सहज सम्पन्न किया जा सकता है। पांच लिपियों के मोह को छोड़कर एक लिपिका वरण करना ही इस कार्य का साधक बन सकता हे। कोंकणी का साहित्य भारत का रिक्थ है पूरा भारत इससे लाभान्वित होना चाहता है।

डी0 106, पुष्पांजलि एन्कलेव पीतमपुरा,
दिल्ली-110034

कोंकणी भाषा और नागरी लिपि

-डॉ. परमानन्द पांचाल

कोंकणी भारत की एक समृद्ध भाषा है जिसके बोलने वाले मुख्यतः कर्नाटक, केरल और महाराष्ट्र में रहते हैं। स्थानीय सुविधा के लिए कोंकणी कन्नड़, मलयालम और रोमन लिपियों का भी प्रयोग करते हैं, किंतु कोंकणी की लिपि मूल रूप से देवनागरी ही रही है।

कोंकणी भारत के संविधान की 8वीं अनुसूची में सम्मिलित एक भाषा साहित्य अकादेमी ने 1975 में कोंकणी को एक स्वतंत्र आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में मान्यता दे दी थी और प्रत्येक वर्ष कोंकणी में प्रकाशित उत्कृष्ट रचना को अकादेमी द्वारा पुरस्कार भी दिया जाता है। साहित्य अकादेमी ने कोंकणी भाषा सभा के अध्यक्ष श्री एन. पुरूषोत्तम मल्लया को लिखे अपने दिनांक 22 अक्टूबर 1982 के पत्र में सूचित किया हैं, कि कोंकणी भाषा की एक मात्र लिपि देवनागरी है कोई अन्य लिपि नहीं।

अतः यह कहना कि कोंकणी की कोई लिपि नहीं हैं, ठीक नहीं होगा। शताब्दी के सिलहार शिलालेख नागरी लिपि में पाए गए हैं। यहाँ तक कि ड्च ने भी यह स्वीकार किया था कि कोंकणी की लिपि नागरी ही है। वन रहीद 'हार्टस इंडिकस मालाबारीकर्स' जो 1678 ई0 की रचना है, कोंकणी भाषा में ही लिखी गई थी, जो देवनागरी लिपि में थी। इसमें पेड़, पौधो के नाम कोंकणी में हैं। 1808 ई0 में विलयमकेरी द्वारा बाइबिल का अनुवाद में देवनागरी लिपि में किया गया था। यह इस बात प्रमाण है कि प्राचीन देवनागरी ब्लाक प्रिंटिंग कोंकणी में ही है। गोवा, महाराष्ट्र, मैसूर और केरल के विद्वानों ने कोंकणी में उच्च साहित्य की रचना की है, श्री एन. पी. मल्लवा अनुसार उनकी संख्या 2000 से अधिक है।

1962 में झा आयोग ने केन्द्र को प्रस्तुत अपने प्रतिवेदन में लिखा है कि स्कूलों में कोंकणी का शिक्षण देवनागरी के माध्यम से किया जाए। केरल सरकार आदेश संख्या एम. एस. 372/68/शिक्षा/दिनांक 12.8.68 में कहा गया है कि कोंकणी भाषा की अपनी लिपि है, जो देवनागरी है। कालीकट विश्वविद्यालय के द्वारा पारित एक संकल्प में कहा गया है कि देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली कोंकणी को, जब कभी उसके शिक्षण की व्यवस्था हो जाए एक पृथक भाषा में स्वीकार किया जाए। इसमें संदेह नहीं कि देवनागरी लिपि द्वारा केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा गोवा में रह रहे कोंकणी लोगों के बीच सांस्कृकि एकता स्थापित कर सकती है। साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष और भाषा वैज्ञानिक डॉ. सुनीति कुमार चार्टुज्यों ने कोंकणी भाषा प्रचार सभा, कोचीन के सचिव, श्री एन. पुरूषोत्तम मल्लया को लिखें अपने दिनांक 10 मई 1976 के पत्र में कहा था अपने कोंकणी के लिए केवल देवनागरी लिपि के प्रयोग को स्वीकार कर बड़ा अच्छा कार्य किया है। यहां शालिवाहन शक संवत् 1675 ई. चैत्रमास में लिखे एक लेख का चित्र प्रस्तुत है जिस पर तीन विद्वान, श्री रंगभट्ट, विनायक पंडित, और अप्पू भट्ट के हस्ताक्षर हैं।

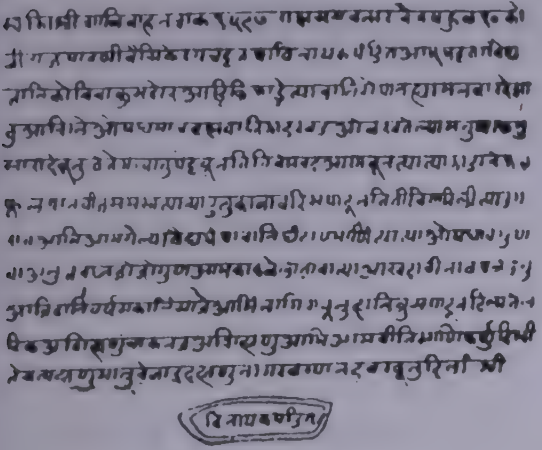

In readable printed Nagari Script :

"स्वस्ति श्री शालि वाहन शक 1567 राक्षस संवतसर चैत्र बहुळ 10 कोची राजपटणी बैसिके रंगभट तथा विनायक पंडित भट तेग वैद्य तानि कोचिचा कुमदोर आड्रिकि फांड्रे त्याचा निरोपान ह्या मलबा रदेशांतु आविरले औषद मात्र वृक्ष वालि झाड खंदे ओळकतेल्या मनुष्याक मुसारो देवून ते तें गावांतु पेट्टवून ति ति वोखद अणवून त्या तया झाडाचे फल फूल पान बीच समस्त त्या त्या ऋतु कालावरि संपादून ति तीं चितारिली त्या उपरांत आमि आमगेल्या वैद्य ग्रंथाचा निगुंडु प्रमाणि त्या त्या औषधाचे गुण वा अनुभवान जो जो गुण आमका कळलो तो वा त्या ओखदाचि नाव पळोउनु आजि दानि वर्ष सकाळि सांजे आमि लागि राबून हा लिव्रु संपादून दिला ते सत्य म्होणु मानुचे जाइद म्होणु नागर बरपान हे बरवून दिलां श्री"

(रंगभट्ट) (विनायक पंडित) (आपूचि ओप)

श्री एन0 पुरूषोत्तम मल्लेया के सौजन्य से

इस प्रकार हम देखते हैं कि कोंकणी भाषा की लिपि देवनागरी लिपि रही है। पुर्तगीज़ लोगों के देश में आने के कारण इसे रोमन में भी लिखा जाने लगा। जो स्वाभाविक नहीं है। देवनागरी लिपि ही इसके लिए स्वाभाविक और उपयुक्त है।

232ए, पाकेट-I, मयूर विहार, दिल्ली-91

अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन,

पणजी गोवा

2013 के अवसर पर शुभकामनाएं

तमसो मा ज्योतिर्गमय

गांधी कॉलेज आफ ऐजूकेशन

इनस्टिट्यूट आफ बी. एड. तेलुगु पंडित और हिन्दी पंडित

ग्रा. कुंटलूर, मं. हैयतनगर, रंगारेड्डी जिला

मंत्री : एम. अंबादास

देवनागरी लिपि और कोंकणी भाषा

-डॉ. भारती हिरेमठ

गांधीजी ने साहित्य परिषद् मद्रास की दूसरी बैठक के सभापति पद से अपने वक्तव्य में यह कहा था कि "मैं तजुर्बे के साथ आपसे कहा हूँ कि, दूसरी देशी भाषा सीख लेना कोई मुश्किल बात नहीं। लेकिन इसके लिए एक सर्व सामान्य लिपि का होना आवश्यक है। हम जो राष्ट्रीय एकता हासिल करना चाहते हैं, उसकी खातिर देवनागरी को सामान्य लिपि स्वीकार करना आवश्यक है, इस में कोई कठिनाई नहीं, बात सिर्फ यह है कि हम अपनी प्रांतीयता और संकीर्णता छोड़ दें।"

उपर्युक्त कथन से ज्ञात होता है कि गाँधीजी देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, व्यापकता एवं उपयोगिता की दृष्टि से देवनागरी को समस्त भारत में प्रसारित करना चाहते थे।

देवनागरी लिपि तथा इसकी वैज्ञानिकता के बारे में यहां चर्चा की आवश्यकता है। वैज्ञानिकता का अर्थ – प्रामाणिकता, स्पष्टता और निर्भ्रान्तता है। देवनागरी को वैज्ञनिक कहने के पीछे मुख्य तर्क यह दिया जाता है कि जैसा भी बोला जाए, लिपि उसको हू-ब-हू वैसा ही अंकित कर सकती है।

देवनागरी की विशेषताएँ :

1 देवनागरी की वर्णमाला वैज्ञानिक ढंग से वर्गीकृत है। देवनागरी में स्वर अलग हैं, व्यंजन अलग। प्रत्येक स्वर के लिए बारहखड़ी की एक निश्चित मात्रा है। व्यंजनों को कंठ्य, दंत्य, तालव्य, मूर्धन्य, ओष्ठ्य जैसे वर्गों में बाँट दिया है। क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग इस तरह पाँच वर्ग हैं। प्रत्येक में पांच पांच व्यंजन हैं। प्रत्येक वर्ग में पहला व तीसरा अल्प प्राण तथा दूसरा और चौथा महाप्राण हैं। इसमें एक ध्वनि के लिए एक लिपि चिन्ह है।

2 **देवनागरी में एक चिह्न से एक शब्द का बोध होता है।** लेकिन फारसी में 'ज' के लिए चार ध्वनियाँ हैं। रोमन में सी, से, स, क, च, ज आदि कई ध्वनियाँ प्रकट होती हैं।

3 देवनागरी किसी भी भाषा की सब ध्वनियों को व्यक्त करने में समर्थ है।

4 देवनागरी में ध्वनि और उच्चारण में एकरूपता है।

भारत की अनेक भाषाएँ या तो संस्कृत से विकसित हैं या संस्कृत से प्रभारित हैं। भारत की राजनीतिक स्थितियों का भी प्रभाव भाषा पर स्पष्ट दिखाई पड़ता है। एक स्रोत से विकसित होने के कारण भारतीय भाषाओं में अनेक

प्रकार की समानताएँ दर्शनीय हैं। हिन्दी और कोंकणी ऐसी ही दो भाषाएँ हैं। कोंकणी मुख्यतः- गोवा, महाराष्ट्र, कर्नाटक और केरल के पश्चिम तटीय प्रदेश में बोली जाती है।

हिन्दी और कोंकणी भाषा का विकास सँस्कृत से ही हुआ है। हिन्दी अपभ्रंश से विकसित है तो कोंकणी प्राकृत से यथा :-

संस्कृत		प्राकृत		अपभ्रंश		हिन्दी		कोंकणी
कर्पटः	>	कप्पड	>	कपड	>	कपड़ा	>	कप्पड
कंकणम	>	कंकण	>	कंगन	>	कंगन	>	कंकण

★ हिन्दी में दो लिंग हैं, कोंकणी में तीन लिंग हैं।

★ संस्कृत का कर्ता कारक 'एन' हिन्दी में 'ने' है। तो, कोंकणी में 'न' है।

उदा : राम ने आम खाया (हिन्दी)

रामान अम्बो खल्लो (कोंकणी)

★ हिन्दी और कोंकणी के शब्दों की समानता देखें

हिन्दी	कोंकणी
घोडा	घोडो
रात	राति
हाथ	हातु
कागज	कागल
पेट	पोट
घाव	घायु
मांग	मग्गो

हिन्दी और कोंकणी में काफी समानता दृष्टिगोचर होती है। इसका मूल कारण दोनों भाषाओं का विकास संस्कृत भाषा से होना है।

लिपि विहीन - कोंकणी :

जैसे पहले बताया गया है, कि कोंकणी गोवा, महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा केरल के कुछ हिस्सों में बोली जाती है। लिपि रहित भाषाओं में कोंकणी भी एक है। **कोंकणी - तीन लिपियों में लिखी जाती हैं, देवनागरी, कन्नड तथा मलयालम।** मगर किसी भाषा के विकास तथा मानकीकरण के लिए एक लिपि का होना आवश्यक है। पिछले दिनों **गोवा में आयोजित कोंकणी के राष्ट्रीय सम्मेलन में यह निर्णय पारित किया कि कोंकणी भाषा की लिपि देवनागरी ही हो।**

व्यापकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भारतीय एकता की दृष्टि से यह निर्णय बिल्कुल सटीक है।

कन्नड साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित 'कन्नड नुडि' के फरवरी 2006 अंक में यह बताया गया है कि कोंकणी भाषा के लिए कन्नड लिपि को ही अपनाना उचित है। यह ठीक है कि कर्नाटक के बीच कोंकणी के लिए कन्नड लिपि का प्रयोग होता रहा है और अब भी कर सकते हैं। मगर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कोंकणी भाषा बोलने वाले केवल कर्नाटक में नहीं हैं बल्कि केरल, गोवा, महाराष्ट्र में भी हैं। महाराष्ट्र और गोवा में देवनागरी लिपि का प्रयोग होता ही है क्योंकि वहाँ की भाषा मराठी है जिसकी लिपि देवनागरी है।

भूमण्डलीकरण के इस संदर्भ में देवनागरी कम्प्यूटर में देवनागरी लिपि को भरना (Feed करना) आसान है यदि कई लिपियाँ होंगी तो Software की समस्या हो जाती है। अंग्रेजी के साथ यह बात नहीं है। अंग्रेजी की CD या Flopy किसी भी कम्प्यूटर में खुल जाते हैं। आजकल भारतीय भाषाओं को बचाने का एक ही मार्ग है कि उस भाषा को 'बजार' (व्यापक दृष्टि से) की दृष्टि से सक्षम बनने देना तथा एक लिपि को अपनाना।

मेरा मन्तव्य यह है कि कोंकणी भाषा को एक लिपि देवनागरी देकर उसके अस्तित्व को दृढ़ बनाया जाए इस सम्बध में मैं राजेन्द्र यादव जी के शब्दों को उद्धत करना चाहूँगी "भाषाएँ न बिगड़ती हैं न मरती हैं, वे तो मानव समाज की तरह विकसित होती हैं। वे घरों, परिवारों, बाजारों या दूसरे कामकाजी क्षेत्रों, खलिहानों और कारखानों में अपना रूप ग्रहण करती हैं। उन्हें सब से ज्यादा बदलती हैं औरतें और श्रम से जुडे लोग। इन सब की जानकारी किताबी विशेषज्ञों को नहीं होती।" ('हंस' नवम्बर 2005, पृ0 - 6)

निष्कर्ष स्वरूप हमें कोंकणी भाषा को सार्वदेशिक स्तर पर जनप्रिय बनाने के लिए गोवा सम्मेलन के प्रस्ताव का अनुपालन करना चाहिए और देवनागरी लिपि में कोंकणी भाषा को लिखना चाहिए।

17, विजय नगर, हुबली-32
(कर्नाटक)

कोंकणी भाषा और देवनागरी लिपि

-डॉ. स्नेहलता, शरे

प्रत्येक समृद्ध भाषा की अपनी एक लिपि होती है। उसी लिपि में उस भाषा का साहित्य लिखा और पढ़ा जाता है। भाषा और लिपि का सम्बन्ध घनिष्ठ होते हुए भी भाषा का अस्तित्व लिपि पर चिन्हों को मूर्तरूप प्रदान करती है। सर्वाधिक ग्राह्यलिपि उसे माना जाता है जो लिपि भाषा की ध्वनि-विशेषज्ञों को अधिक से अधिक व्यक्त करने में समर्थ होती है।

ग्राह्य या उपयोगी लिपि में निम्न तत्वों का रहना अनिवार्य है-

1. लिपि वर्णात्मक से बढ़कर ध्वन्यात्मक अधिक हो।

2. हर वर्ण के उच्चारण का पूर्ण प्रतिनिधित्व करने वाला लिपि चिन्ह हो।

3. ध्वनि-तत्वों की संख्या के बराबर ही लिपि-चिन्ह हो।

संसार की अन्य लिपियों की तुलना में देवनागरी की कई महत्वपूर्ण विशेषताएं देखने को मिलती हैं।

1. यह लिपि वैज्ञानिक है। इनमें संसार की लगभग सभी भाषाओं की ध्वनियों को उच्चारित एवं प्रतिनिधित्व करने वाले लिपि चिन्ह विद्यमान हैं।

2. देवनागरी में लिखावट के अनुसार ही ध्वनियों का उच्चारण होता है।

3. नागरी लिपि ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई है। देश की सभी प्रादेशिक भाषाओं की लिपियों का मूलस्रोत ब्राह्मी लिपि है अतः देवनागरी लिपि का इनके पारिवारिक सम्बन्ध हैं।

4. नागरी लिपि के स्वर और व्यंजन ध्वनियों के वर्गीकरण के सिद्धान्त नियम पाया जाता है।

5. इस लिपि की अन्यतम विशेषता यह है कि इसमें स्वरों के मात्रा-चिन्ह व्यक्त पर लगते हैं।

6. इस लिपि में एक ध्वनि के लिए एक ही वर्ण मिलता है।

देवनागरी का स्वरूप

देवनागरी में अन्य सभी लिपियों से अधिक स्वर हैं (यथा अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ-12) इन स्वरों के क्रम की विशेषता यह कि यह सम्बन्ध ध्वनियाँ विकल्प से नहीं रखी गयी हैं मगर क्रमशः पास-पास रखी गई व्यंजनों के सम्बन्ध में भी यही बात है। उन्हें उच्चारण स्थान के अनुसार ही विभाजित किया गया है और उसके नाम भी उच्चारण स्थानों के नाम पर ही आधारित उच्चारण-स्थान के अनुसार व्यंजनों के पाँच वर्ग हैं। प्रत्येक के अन्त में एक अनुनासिक ध्वनि आती है। दो वर्ग अन्तस्थ और ऊष्म ध्वनियों के हैं।

कोंकणी भाषा का स्वरूप

अनेक प्राचीन भाषाओं में से कोंकणी भी

एक है। इसका 5000 वर्ष का इतिहास है। मध्य एशिया में जिप्सी भाषा का जो स्थान है वही भारत में कोंकणी भाषा का है। परन्तु विभिन्न लिपियों में लिखा जाना ही आज कोंकणी के लिए सबसे बड़ी बाधा है। वैसे भारत में कई भाषाएँ ऐसी हैं जो एक से आधक लिपियों में लिखी जाती हैं, जैसे –

1. हिंदूस्तानी : फारसी–अरेबिक, देवनागरी तथा रोमन में लिखी जाती हैं।
2. सिंधीः फारसी – अरेबिक, गुरूमुखी, देवनागरी में लिखी जाती है।
3. कश्मीरी : फारसी–अरेबिक, देवनागरी, रोमन में लिखी जाती है।
4. नेवारो : नेवारो, देवनागरी में लिखी जाती हैं।
5. मणिपुरी : मणिपुरी, रोमन, देवनागरी में लिखी जाती हैं।
6. संताली : बंगला, उड़िया, देवनागरी, रोमन में लिखी जाती है।
7. मुंडारी : रोमन, देवनागरी में लिखी जाती हैं।

इसी तरह **कोंकणी भाषा पाँच विभिन्न लिपियों में लिखी जाती है।** देवनागरी, कन्नड़ अरबी तथा मलयालम पूरे भारत में विभिन्न लिपियों में लिखी जाने वाले भाषाओं में कोंकणी का स्थान सबसे ऊपर। कई विद्वानों का मत है कि एक **भाषा के लिए अनेक लिपियों को प्रयोग उस भाषा के विकास में बाधा बनकर उपस्थित होता है।** अतः एक ही लिपि का प्रयोग करना भाषा के बहुमुखी विकास के लिए अपेक्षित है। इसके अनेक प्रयोजन हैं।

1. भाषिक समाज में एकता बढ़ती है।
2. शब्दों के उच्चारण में मानक रूप का विकास होता है।
3. अन्य भाषा भाषियों के लिए उस भाषा को सीखना आसान हो जाता है।

कोंकणी, अरबी, रोमन, मलयालम लिपि से बढ़कर कन्नड़ तथा देवनगारी में अधिक लिखी जाती हैं। इसका कारण यह है कि कर्नाटक में कोंकणी बोलने वालों की संख्या अत्यधिक है। अन्य प्रदेशों की तुलना में कन्नड़ लिपि में कोंकणी साहित्य अधिक मात्रा में मिलता है। कोंकी पत्रकारिता के क्षेत्र में कन्नड़ लिपि का ही अधिक प्रयोग होता है।

कोंकणी के लिए देवनागरी लिपि अपनाने के अनेक लाभ हैं।

1. भारत में हिन्दी भाषी क्षेत्र अन्यन्त विशाल है। मराठी भाषा क्षेत्रा भी काफी विस्तृत हैं। इस तरह यह कहा जा सकता है कि भारत में देवनागरी का प्रयोग अधिक लोगों तक पहुंच जाती हैं।
2. देवनागरी लिपि को अपनाने से कोंकणी भाषा–भाषियों को हमारी प्राचीन एवं समृद्ध भाषा संस्कृत, राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा आस–पड़ोस की भाषा मराठी, गुजराती आदि को सीखने में आसानी होगी।
3. कोंकणी और मैथिली बृज आदि हिन्दी की बोलियों में काफी सामानताएँ पायी जाती

है।

4. पैशाची, मागधी और प्राकृत का प्रभाव कोंकणी पर देखा जाता है। अतः कोंकणी के लिए देवनागरी का प्रयोग सभी चीन है।

5. हिन्दी और कोंकणी भाषा की प्रकृति उसके स्वरूप उसके विकास में बहुत सी समानताएँ मिलती हैं।

कोंकणी के लिए जिस देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जाएगा उसकी अलग विशेषताएँ होगी और उसका स्वरूप ही विशिष्ट होगा। कोंकणी के अनुकूल देवनागरी में थोड़ा-बहुत परिवर्तन अति आवश्यक है।

देवनागरी में अडतालिस (48) लिपि संकेत हैं जो स्वर और व्यंजन ध्वनियों के सात समूह हैं। कोंकणी में पैतालीस (45) लिपि संकेत हैं। इसमें 12 स्वर हैं (यथा-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ) संस्कृत का ऋ स्वर कोंकणी में नहीं है। विसर्ग स्वर कोंकणी में नहीं है। अतः संस्कृत शब्द दुःख का उच्चार अपभ्रंश की तरह कोंकणी में दुख होता है। कोंकणी में तैंतीस (33) व्यंजन हैं। "ष" व्यंजन कोंकणी में नहीं है।

कोंकणी की विशेष ध्वनियाँ

1. "अ" का उदात्त, अनुदात्त और स्वरित ध्वनियाँ कोंकणी में प्राप्त हैं। ये तीनों स्वतंत्र ध्वनियाँ हैं। 'अ' के तीन रूप नहीं हैं। उदाः पण्स (कटहल) 'प' में का 'अ' अनुदात्त, 'ण' में का 'अ' स्वरित 'स' उदात्त है।

2. ऍ और ऑ-विशेष स्वर ध्वनियाँ हैं। उदा-बोट-बॉअ उँगली

3. वं-यह कोंकणी की एक विशेष व्यंजन ध्वनि है। 'व' व्यंजन के आदि स्वर पर अनुस्वार देकर उच्चारण 'वं' होता है। उदाः तंव (सिलन) देंव (उत्तर भोंवप (घूमना) पेंवम (तैरना)।

4. 'ञ'- यह नासिक तालव्य व्यंजन ध्वनि कोंकणी में काफी मिलती है। लिखित रूप में यह वर्तनी 'य' व्यंजन लिखकर आदि स्वर पर अनुस्वार दिया जाता है जैसे बांय (कंआ) थेंप (वहाँ) धंय (दही) उच्चारण के आधार पर लिखना है तो यह बांञ, थंञ, धुंञ होगा।

5. शब्द के आदि में संयुक्त स्वर होने पर यह 'ए' 'ओ' ध्वनियाँ क्रमशः 'ऍ, ॲ या ऑ ध्वनि के रूप में परिवर्तित होती हैं।

उदाहरण - ॲक (ऍक) भुरग्ये (एक बच्चा)

एक दादलो (एक मर्द)

मूलरूप में कोंकणी ब्रह्मावर्त के लोगों की वैदिक बोली से उपजी हुई भाषा है। इस कारण से कोंकणी में संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्द काफी मात्रा में पाये जाते हैं। इसके अलावा, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश के शब्द समूह प्राप्त होते हैं। भारतीय भाषाओं के शब्द कोंकणी के शब्द भंडार में पाये जाते हैं।

इस तरह कोंकणी का भाषिक स्वरूप तथा उसकी प्रकृति को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि देवनागरी लिपि ही कोंकणी के लिए अतियोग्य लिपि है।

कोंकणी और नागरी लिपि

–डॉ. चन्द्रलेखा डिंसौजा

कोंकणी के लिए नागरी लिपि इसे समझने के लिए हम कोंकणी का इतिहास देख लें तो कोंकणी की लिपि समस्या को समझने में आसानी होगी।

सन् 1510 में पुर्तगाली लोगों ने बीजापुर के सुलतान आदिल शाह से गाय का तिसवाड़ी तालुका जीत लिया। उसके बाद में 1548 में सालसेट और बारदस तालुझे भी प्राप्त कर लिये। आमतौर पर लोग यह कहते रहें हैं कि जो कोंकणी साहित्य मन्दिरों में था उसे पुर्तगाली शासकों ने जला दिया। इस तथ्य पर विचार करें तो लगता है कि गोवा का जो हिस्सा उनके शासन में था वहाँ का साहित्य जल गया, पर जो हिस्सा उनके शासन में नहीं था, वहाँ के मन्दिरों में से तो कुछ मिलना आवश्यक था, जो कि आज तक मिला नहीं है। दूसरी बात Father Thomas Stephens (1649-1619) - जिन्हें कोंकणी व्याकरण के रचने वाला माना जाता है। इन्होंने अपनी महाकाव्यात्मक कविता 'Krista Puran' मराठी में लिखी थी गद्य कोंकणी में लिखा था।

पुर्तगाल राज्य के एक शहर ब्रागा के ग्रंथालय में सोलवीं शताब्दी का हुआ गद्य है, जिसमें रामायण, महाभारत और पँचतंत्र की कथाएँ हैं। पुर्तगाल मिशनरियों ने यहाँ के रहने बालों से ये कथाएँ सुनी थीं और उन्हें अपनी वर्णमाला में उतारा था।

गोवा का इतिहास साक्षी है कि यहाँ पर 1510 से लेकर 1961 तक पुर्तगाल का शासन रहा। इस दौरान आरम्भ में उन्होंने कोंकणी भाषा को कुचलने का प्रयास जरूर किया। पर चर्च और इनकी अन्य संस्थाओं ने कोंकणी भाषा और साहित्य आगे बढ़ाने का परिश्रम किया, परिणाम स्वरूप इस संस्था ने अपना कार्य 1549 ई. से आरम्भ किया। इनमें मुख्य नाम इस प्रकार हैं :

- Thomas Stephens (1549-1619)
- Diogo Ribeiro (1560-1633)
- Etienna da - La Croix - (1579-1643)
- Antonio Saldhana - (1598-1663)
- Miguel de Almeida - (1607-1683)

आदि नाम लिये जा सकते हैं।

अपने शासन के प्रारभ काल में पुर्तगाली शासकों ने यहाँ का साहित्य भुला दिया था, पर उन्हीं लोगों ने भारतीय भाषा – कोंकणी, मराठी और दूसरी भी सीखना शुरू कर दिया। **6 सितम्बर 1556 में, भारत देश में सबसे पहला मुद्रण यंत्र गोवा प्रदेश में आया,** यह श्रेय भी पुर्तगाली शासकों को ही देना होगा। इसके पीछे कारण कोई भी रहा हो, जैसा कि कहा जाता है उनका उद्देश्य धार्मिक था – धर्म प्रचार का था – मुद्रण यंत्र के फलस्वरूप **एशिया की प्रथम पुस्तक** जो (मुद्रित) –

Fr. Thomoas Stephen's

Doutrina Christam em Lingua-

"Bramana Canarim"

Eng. title - **"Christian Doctrine in Brahmin Konkani Language:"**

1622 में प्रकाशित हुई।

Jesuits इसे यहाँ की वर्णमाला में छापना चाहते थे पर उन्हांने रोमन वर्णमाला को अपनाया। यहाँ ध्यान में रखने योग्य बात यह है कि इसी समय पर उन्होंने तमिल वर्णमाला को लेकर तमिल पुस्तक भी प्रकाशित की। यहाँ पर हम इस नतीजे पर पहुंच सकते हें कि उन दिनों कोकणी का कोई साहित्यिक उपयोग होता नहीं था वरना पुर्तगालियों ने जब तमिल वर्णमाला का उपयोग किया है तो कांकणी की अगर कोई निश्चित स्थिति होती जो ज़रूर उसका उपयोग करते। आज भी कोंकणी साहित्य इस रोमन वर्णमाला में भी लिखा जाता है। साथ में यह भी ध्यान में रहे कि कोंकणी भाषा और साहित्य में इस वर्णमाला के लिखित साहित्य का योगदान नकार नहीं सकते, न ही इसे नकारने की आवश्यकता ही है। रोमन वर्णमाला के कोंकणी साहित्य का जब नागरी वर्णमाला में लिप्यंतरण होगा तो नागरी कोंकणी, समृद्ध की होगी। इसे कोंकणी का विकासात्मक चरण ही मानना होगा। साथ में नागरी कोंकणी, कोंकणी, भाषा की हिन्दी भाषा के साथ जोड़ने की कड़ी भी बनेगी, साथ कोंकणी भाषी जो मुंबई, कर्नाटक और कोची में या दरिया पार रहते हैं वे भी जुड़ेंगें। यह निशंक रूप से माना जा सकता है।

गोवा की कोंकणी के लिए नागरी

गोवा में जब अलग राज्य की मांग की थी तब कोंकणी के अलग अस्तित्व स्थापन की भावना थी राष्ट्रीयता का एक स्वप्न गोवावासियों ने देखा था उसे पल्लवित् करने के नागरी वर्णमाला को कोंकणी के लिए मान्यता दी गई। पर साथ-साथ में यह भी ध्यान में रखा गया कि जैसे गोवा को नागरी वर्णमाला राष्ट्र से जोड़ेगी वैसे ही अलग-अलग प्रांतों में बसे हुए कोंकणी प्रेमी को जोड़ने का काम भी करेगी। यह दूरदर्शिता रखकर नागरी वर्णमाला को कोंकणी के लिए गोवा में मान्यता दी गई। शायद इसी कारण रोमन वर्णमाला को लिखने वालों ने गोवा में संपूर्ण सहकार नागरी कोंकणी को दिया। यह निर्विवाद सत्य है। हमें यह भी ध्यान में रखना होगा। कि रोमन वर्णमाला के कोंकणी साहित्य को नागरी वर्णमाला में लाना भी हमारा कर्त्तव्य ही होगा। भविष्य इस विषय को लेकर आशावादी ही होगा।

कोंकणी साहित्य का इतिहास (नागरी लिपि में) :

नागरी वर्णमाला में जब कोंकणी का साहित्यिक इतिहास लिखा जायेगा, तो रोमन वर्णमाला का कोंकणी साहित्य, कन्नड़ वर्णमाला का कोंकणी साहित्य और मलयालम वर्णमाला का कोंकणी साहित्य इन सब का योगदान स्वीकार करके ही नागरी वर्णमाला द्वारा कोंकणी को समृद्ध बनाया जा सकता है या बनाया जायेगा पर इसे लिखने के लिए लिखने वाले के पास रोमन साहित्यिक इतिहास, कन्नड़ कोंकणी वर्णमाला का और मलयालम कोंकणी वर्णमाला में लिखित साहित्यिक इतिहास सही रूप में पहुंचाना हर कोंकणी प्रेमी का कर्त्तव्य होना चाहिए। हमारे संकुचित चक्रों के चक्रव्यूह को तोड़ कर कोंकणी साहित्य का इतिहास लिखने में नागरी का योगदान खुले मन से प्राप्त होगा। राज्यों के कुटिल कुचक्रों को तोड़ना सम्भव होगा। ऐसे और भी समस्या उभरेगी। जिन्हें पार

करना होगा। यही आशावाद प्रकट करना है।

कोंकणी साहित्य कन्नड़ वर्णमाला में लिखा जाता है उसका थोड़ा परिचय प्राप्त कर लेना भी आवश्यक है। इसके बाद में नागरी वर्णमाला की कोंकणी की समस्या समझने में आसानी होगी।

पुर्तगाल के शासन में जब धर्मांतरण की समस्या आई तो स्थानांतर होने लगा। वैसे यही एक कारण नहीं था और भी राजकीय, ऐतिहासिक, सामाजिक और आर्थिक कारण भी थे। यह स्थानांतरण दक्षिण की तरफ हुआ क्रमशः कर्नाटक और कोचि में। यहाँ पर कोंकणी प्रेमियों ने कन्नड़ भाषा सीखना प्रारम्भ किया और मलयालम भी तो दोनों वर्णमाला मे लिखना अपने - अपने क्षेत्र में - उनके लिए आसान हो गया जो आज तक कोंकणी इस वर्णमाला में लिख रहे हैं। **खासकर कन्नड वर्णमाला का कोंकणी साहित्य नागरी वर्णमाला कोंकणी साहित्य की तुलना मे ज्यादा सम्पन्न** है। यह मैं व्यक्तिगत रूप से मानती हूं और इसके लिए मेरे अपने तर्क हैं परन्तु इन सब में जो बहुत ज्यादा अच्छा रचनाशील साहित्य है। **उसका लिप्यंतरण द्वारा कंम्प्यूटर के कारण कोई समस्या नहीं है।** आवश्यकता है खुले मन से सोचेने की। राजकीय बखेड़े को साहित्यकार अगर दूर करने में कामयाब हो जाएँ तो राज्य की संकुचित वृत्ति को हटा कर राष्ट्र के बारे में सजग साहित्यकार जुड़ सकता है परन्तु जोड़ने वाली "कड़ी को हमने पूर्ण रूप से अपनाया नहीं है यही समस्या कांकणी प्रेमी की भी है। जब हमारे राज्यों को जोड़ने की राष्ट्र कड़ी की राष्ट्रीयता की हम आत्मसात करेंगे तभी साहित्यकार की सजगता हमें एक कर पायेगी।

सन् 1800 सौ के बाद भी रोमन वर्णमाला और कन्नड़ वर्णमाला में पुस्तकें प्रकाशित हो रही थीं। उस तरफ कर्नाटक में Louis Mascarenhas - 1887-1961 का मैंगलोर में जो साहित्य लिखा जा रहा था उनका महत्वपूर्ण स्थान है। तो इस **वामन रघुनाथ वी0 वालावलीकर - 1887-1946- जो शणै गोंयबाब के नाम से जाने जाते हैं। उन्हें गोवा क़ी नागरी कोंकणी का जनक माना जाता है।** हिन्दी साहित्य में इसी समय प्रेम चन्द जी ने हिन्दी साहित्य में रचना धर्मी बनकर काम किया जबकि शणै गोंयबाब की दृष्टि अनुसंधान कर्त्ता की रही, हालाँकि उन्होंने कोंकणी साहित्य में कहानियाँ, लेख, अनुवाद, भाषा-विज्ञान तथा कोंकणी भाषा इतिहास और कोंकणी, आदि विषय पर अलग-अलग रूप से लिखा है पर उनकी दृष्टि मूलतः अनुसंधान धर्मिता पर रही।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद गोवा में नागरी कांकणी कविता, कहानी, नाटक, अनुवाद आदि विधाओं में साहित्य रचा जा रहा है। उपन्यास विधा का विकास बहुत कम हुआ है। कन्नड़-कोंकणी साहित्य में आशय और आकार की दृष्टि से नये-नये प्रयोग साहित्यि में हो रहे हैं। एक-एक रचनाकार ऐसा है जो श्वास नवल-कथाएँ भी लिखता है। कोंकणी में अस्तित्ववादी चिन्तन भी उपलब्ध होता है, तथा रचनाधर्मिता की सृजनात्मक प्रवृत्ति भी दृष्टिव्य होती है। उदाहरण अबांवचे यज्ञदान' कृति जिसे 'लुईस मास्करेन्हस' ने लिखा है।

कोंकणी की वर्तमान लिपि समस्या का मूल इस इतिहास में दिखाने का प्रयत्न किया गया है। इस आधुनिक काल में अब जो बाधाएँ आ रही हैं इसी वजह से शायद कोंकणी के विकास में भी शिथिल गति है। **अलग-अलग**

शेष भाग पृष्ठ संख्या 40 पर

कोंकणी भाषा के लिए नागरी-प्रयोग की सार्थकता

-प्रो० डॉ. एल० सुनीता बाई

भारत एक बहु-भाषी देश है। यहा पर प्राचीन काल से ही लोग भिन्न भाषाएं बोलते हुए आपस में प्रेम के साथ रहते आये हैं। इस अनेकता में भी एकता को कायम रखने के लिए हमें काफी प्रयत्न करने हैं। इसी प्रयत्न के फलस्वरूप हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाया गया और उसके माध्यम से अन्य सभी प्रादेशिक भाषाओं को एक सूत्र में जोड़ने का कार्य किया गया। हिन्दी को राष्ट्रभाषा की पदवी देने के साथ-साथ देवनागरी लिपि, जिसमें हिन्दी का लिखित रूप चलता है, उसे राष्ट्रलिपि की पदवी दी गई है। देवनागरी लिपि इसके लिए सर्वथा योग्य भी कही जा सकती है क्योंकि यह एक वैज्ञानिक लिपि है जिसे प्राचीन भारतीय मनीषियों ने रूप प्रदान किया है। केवल यही एक लिपि है जिसमें भारत की सभी भाषाएं पूर्ण शुद्धता के साथ वैज्ञानिक ढंग से लिखी जा सकती हैं।

जिस प्रकार हिन्दी भारत की भावात्मक एवं सांस्कृतिक एकता की समर्थ साधिका रही है वैसे ही कोंकणी भी भावात्मक एकता की साधन बनी हुई है। विभिन्न जातियों और वर्गों के लोग इसका प्रयोग करते हैं। इनमें हिन्दू भी हैं, ईसाई भी हैं और मुसलमान भी गोवा प्रांत में राजभाषा के रूप में इसकी मान्यता है। गोवा के अतिरिक्त मुख्य रूप से महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं केरल के कुछ प्रदेशों में भी यह बोली जाती है। कोंकणी के इस प्रकार मूलतः चार रूप प्रचलित हैं और चार रूप चार प्रकार की लिपियों में लिखे जाते हैं। गोवा में मुख्य रूप से इस भाषा को लिखने के लिए देवनागरी के साथ-साथ रोमन लिपि का भी प्रयोग होता है। महाराष्ट्र में केवल देवनागरी का प्रयोग होता है। कर्नाटक में कन्नड़ की लिपि का और केरल में मलयालम की लिपि का प्रयोग होता है। इस प्रकार भिन्न रूपों एवं लिपियों में चलने वाली भाषा का विकास कुछ कठिन सा प्रतीत होता है। इसलिए इनका एकीकरण अत्यन्त आवश्यक है। कोंकणी को आज भारत की अन्य भाषाओं के समन संविधान की अष्टम अनुसूची में स्थान मिल गया है तो दूसरी भाषाओं के जैसे इसका भी कोई एकीकृत रूप होना अत्यन्त आवश्यक है। लिपि के क्षेत्र में भी यह आवश्यक प्रतीत होता है। यद्यपि ऊपर बताई गई चार लिपियों में और कहीं-कहीं मुसलमानों द्वारा लिपि में भी कोंकणी लिखी जाती है। फिर भी देवनागरी ही कोंकणी के लिए सर्वाधिक उपयुक्त बन सकती हैं, इसमें सन्देह नहीं।

लिपि के एकीकरण की आवश्यकता

कोंकणी भाषा के लेखन की मूल समस्या यह रही है कि भाषा किस लिपि में लिखी जाए। चार प्रदेशों में रहने वाले लोग चार लिपियां प्रस्तुत करेंगे। इनके एकीकरण के बिना भाषा का लिखना और समझना आसान नहीं होगा। लिपि के बिना तो भाषा में कोई काम चल नहीं सकता। यहीं पर लिपि की प्रमुखता है कोंकणी बोलने वाले लोग आज तक इस बात के सम्बन्ध में अज्ञता रखे हुए थे, या यों कहें कि वे इसके बारे में जानना ही नहीं चाहते थे कि उनकी मातृभाषा की भी कोई लिपि रही है। कोंकणी भाषा-भाषियों के लिए थोड़े समय पहले

तक यह स्वीकार्य भी था। अज्ञानवश कोंकणी को मराठी की बोली ही माना जाता था। लेकिन आज स्थिति बदल गई है। चन्द चुने हुए विद्वानों के प्रयत्नों एवं निरन्तर शोध के फलस्वरूप यह स्पष्ट हो गया है कि कोंकणी मराठी की बोली नहीं, एक स्वतंत्र भाषा है जिसमें साहित्य भले ही बहुत कम रहा हो, लेकिन भाषा विज्ञान की दृष्टि से यह भाषा अत्यधिक सम्पन्न रही है। यह संस्कृत के बहुत निकट है और इस पर पैशाची प्राकृत, अपभ्रंश आदि का प्रभाव है। संस्कृत की पृष्ठभूमि पर मराठी और कोंकणी की यदि तुलना की जाए तो मराठी की अपेक्षा कोंकणी ही संस्कृत के अधिक निकट पाई जाती है। हां, प्राचीन मराठी और कोंकणी में कई समानताएं मिलती हैं। यह वैसे ही है जैसे कि भारत की कई आधुनिक भाषाओं से कोंकणी की निकटता पाई जाती है मैथिली, गुजराती, मराठी इन सबसे यदि कोंकणी की तुलना की जाए तो इनमें कई समान तत्त्व प्राप्त होते हैं।

सन् 1992 में मणिपुरी के साथ कोंकणी को भी अष्टम अनुसूची में भारतीय भाषाओं में स्थान मिल गया है। सन्1975 में ही केन्द्र की साहित्य अकादमी ने इस एक स्वतंत्र भाषा की मान्यता प्रदान करते हुए **देवनागरी लिपि में काम काज करने का विधान भी किया है।** ऐसी हालत में कोंकणी के प्रयोग विकास एवं प्रचार के लिए लिपि का एकीकरण अत्यन्त आवश्यक बन गया है। कोंकणी भाषा के लिए देवनागरी लिपि के प्रयोग के औचित्य को दिखाने के लिए इस संदर्भ में कोंकणी भाषा के विकास का इतिहास, नागरी लिपि का इतिहास, इन दोनों में दिखाई पड़ने वाला प्रमुख तत्त्वों का आपसी मेल आदि पर विचार करना अस्थान पर नहीं होगा। ऐसा एक अध्ययन आसानी से इस बात का समर्थन करने में सहायक रहेगा कि कोंकण के लिए देवनागरी लिपि ही सर्वाधिक उपयुक्त हो सकती है।

कोंकणी भाषा का प्रचीन रूप

कोंकणी शब्द का मतलब है कोंकण की भाषा। कोंकण का महत्त्व तो पुराण में प्रसिद्ध है। स्कन्द पुराण के सहायाद्रि खण्ड के अनुसार कोंकण परशुराम के द्वारा निर्मित सात खण्डों में विभक्त भू–भाग है यहां पर उन्होंने तिरहुत से ब्राह्मणों को लाकर बसाया था। कोंकण देश प्राचीन काल में कन्याकुमारी से लेकर काठियावाड़ तक व्याप्त था। इसके सात विभाग थे–केरल, तुलुंग, गोवर्षत्, कोंकण करालट, बल्लत और बर्बर। वरालट दक्षिणी गुजरात के कुछ भागों को कहा गया है और सर्व देश काठियावाड के कुछ पर्वतीय प्रदेश हैं। इस प्रकार ई0पू0 पहली शताब्दी के कोंकण एक विस्तृत भूभाग रहा और कोंकणी कोंकण की भाषा भी रही।

कोंकणी भाषा का इतिहास कोंकण से नहीं, बल्कि उससे कहीं पहले **सरस्वती नदी के तट से शुरू होता है।** ऐतिहासिक एवं भौगोलिक प्रमाण इस बात की पुष्टि करते हैं कि आज कोंकणी बोलने वालों की परम्परा बहुत प्राचीन रही है और उसका प्रभाव उनकी भाषा पर भी है। **डॉ. दालगाद का कहना है कि सरस्वती–बाल–भाषा में ही कोंकणी का प्राचीनतम रूप सुरक्षित रहा है। उस भाषा को कोंकण तक लाने** वाले लाग तिरहुत के सारस्वत ब्राह्मण थे। पुर्तगाली लोगों ने कोंकणी को जो लिंग्वा ब्राह्मनिका" कहा है वह इस बात की पुष्टि करता है। कोंकणी का एक सम्पन्न साहित्य भी था जिसे पुर्तगाली शासकों ने सन् 1684 में पूरा का पूरा जला दिया और कोंकणी भाषा के प्रयोग को पूर्णतः रोक दिया। पुर्तगालियों के धर्म परिवर्तन की नीति से डरकर उनसे बच

निकले हुए गोवा के ब्राह्मण लोग जो आज केरल में रहते हैं, उनके धार्मिक एवं सांस्कृतिक अनुष्ठानों में वेदों के विधान की प्रमुखता रही है। कोंकणी शब्दावली एवं सांस्कृतिक अनुष्ठानों में वेदों के विधान की प्रमुखता रही है। कोंकणी शब्दावली के विश्लेषण से यह बात स्पष्ट होती है कि अधिक संस्कृति से इस भाषा का सम्बन्ध रहा है। वैदिक भाषा में प्रयुक्त अनेक शब्द इन लोगों द्वारा बोली जाने वाले कोंकणी भाषा में आज भी प्रयुक्त किये जाते हैं। उनसे यही प्रमाणित किया जा सकता है कि ई0पू0 शताब्दी से लेकर ई0 तीसरी शताब्दी तक गुप्त साम्राज्य की अधीनता में जब भारत में ब्राह्मणों की संस्कृति में प्रमुखता रही थी और संस्कृत को भारत की राष्ट्र भाषा घोषित कर दिया गया कोंकणी भाषा का प्राचीन रूप उस समय प्रचार में रहा था। समस्त आधुनिक भारतीय भाषाओं की अपेक्षा कोंकणी का संस्कृत से निकटतम सम्बन्ध और कोंकणी में संस्कृत शब्दावली की भरमार इसी ओर संकेत करती है। संस्कृत का ब्राह्मण शब्द कोंकणी में तत्सम रूप में अक्सर प्रयुक्त होता ही है। इसके अलावा 'ब्राह्मण' से उत्पन्न "बम्मूणु" शब्द जो आज की कोंकणी में पति का सूचक है इस बात का प्रमाणित करता है कि यह भाषा संस्कृत से सीधा सम्बन्ध रखती है। अनपढ़ स्त्रियां जो संस्कृत का सही उच्चारण करने में असमर्थ रहती थीं अपने ब्राह्मण (पति) को 'बम्मुणु' कहती थीं यही नहीं, ई.पू. पहली शताब्दी के प्राचीन शिलालेख जो कोंकण एवं महाराष्ट्र के बौद्ध विहारों में मिलते रहे हैं उनकी शब्दावली एवं शब्दों के रूपों को सूक्ष्मता के साथ परखा जाए तो सारस्वत ब्राह्मणों द्वारा बोली जाने वाली कोंकणी के शब्दों एवं अनेक रूपों से बहुत मिलते हैं। ओवरको > होंवरी; धुतुअ>ध्रुवणतुकणम् > नातावांचो; नातिणम् > नातींचो; सुन्हाणम् >सुन्हांचो; कुलस्य >कुळाचो समापिता >सोंपले; पुतेन >पुतान; गिग्ह >गीम; चतुविसे >चोव्वीस।

कोंकणी की शब्दावली ध्वन्यात्मक विशेषताएं, लिंग व्यस्था, वचन पद्धति सब कुछ प्राकृत से मेल खाती हैं। कोंकणी पर मागधी, महाराष्ट्री और पैशाची प्राकृत का प्रभाव देखा जा सकता है। इस भाषा को गोमांचल तक ले जाने वाले सारस्वत ब्राह्मण कई शतियों के देशाटन के बाद ही वहां पहुंचे थे। वे जिन-जिन प्रदेश में रहे वहां की लोक भाषा का प्रभाव लेकर आगे बढ़े। मध्यप्रदेश से कोसली की शब्दावली और गुजरात से देशी नाममाला में मिलने वाली शब्दावली कोंकणी से बहुत मेल खाती हैं।

जहां तक देवनागरी का प्रश्न है यह एक वैज्ञानिक लिपि है जिसमें एक ध्वनि के लिए केवल एक चिन्ह, एक चिन्ह के लिए केवल एक ध्वनि ही मिलती है यह लिपि भारतीय मनीषा की अपूर्व शोध एवं चिन्तन परम्परा की प्रधान संरक्षिका है यह भारत ही नहीं संसार भर में एक ही ऐसी परिपक्व लिपि है जिसमें अंकों को अक्षरों का रूप सौष्ठव मिलता है। ध्वनिशास्त्रगत वैज्ञानिक विधान के रहते हुए लिखने में इसमें अत्याधिक सुगमता है लिपिबद्धता में त्वरा, लिखित वर्ण और उच्चारण की एकनिष्ठता इसकी प्रमुख विशेषताएं है। कोंकणी भाषा के लिए इससे बढ़कर कौन-सी लिपि उपयुक्त हो सकती है।

भारत का राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता और सांस्कृतिक समन्वय के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी की भांति राष्ट्र लिपि देवनागरी का देशव्यापी प्रचार, प्रसार का प्रयोग जब हो रहा है ऐसी हालत में ऐतिहासिक महत्त्व रखने वाली, भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से सम्पन्न कोंकणी भाषा

के लिए देवनागरी से बढ़कर कौन-सी उपयुक्त हो सकती है। कोंकणी जानने वाले ब्राह्मण लोग देवनागरी में कोंकणी लिखा करते थे सन् 1678 में रंगभट्ट विनायक पंडित एवं अप्पू भट्ट के लेख में मिले हैं। इन्होंने इसको ब्राह्मणों को भाषा भी कहा है। इससे स्पष्ट है कि कोंकणी (ब्राह्मणों की भाषा) के लिए देवनागरी का प्रयोग किया जाता था।

कोंकणी की वर्णमाला संस्कृत या अन्य भारतीय भाषाओं से भिन्न नहीं है। देवनागरी वर्णमाला का प्रयोग ही कोंकणी के लिए चलता रहा है जो नीचे दिया जा रहा है।

स्वर : अ अ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ

व्यंजन : क् ख् ग् घ् ङ्

च छ् ज् झ् ञ्

ट् ठ् ड् ढ् ण्

न् थ् द् ध् न्

प् फ् ब् भ् म्

य् र् ल् व् श् ष् स् ह

इनके अतिरिक्त अॅ, एॅ, ओ, ऋ, क्, भी कोंकणी की विशेष ध्वनियां हैं जो उत्तर भारत की कई भाषाओं से उसे अलग करती हैं। कोंकणी में प्राचीन भारतीय आर्य भाषा की इन ध्वनियों को आज भी सुरक्षित रखा गया है। प्राचीन काल में ह्रस्व कार और ओ कार का अस्तित्व शिलालेखों पर अंकित लेखन में प्राप्त होता है। नेपाल की तराई में पिपरावा नामक स्थान में शाक्य जाति के लोगों द्वारा निर्मित एक स्तूप के भीतर एक छोटे से पत्थर के पात्र पर ब्राह्मी लिपि के चौदह अक्षरों के तीन रूप मिलते हैं। उनमें और अशोक कालीन लिपि में केवल इतना ही भेद है कि उनमें दीर्घस्वरों का अभाव है।

कोंकणी में यह प्रवृत्ति आज भी सुरक्षित है। इसी के रूप में ऊपर दिए गए अॅ, एॅ, ओ।

व्यंजनों में मात्राएं जोड़ने की सरल एवं वैज्ञानिक रीति जो देवनागरी में मिलती है इससे कोंकणी में व्यंजनों का प्रयोग सरलतापूर्वक किया जा सकता है। किसी भी व्यंजन के साथ कुल दस मात्राएं लगती हैं। एक बायें, चार दाहिने, दो ऊपर और तीन नीचे।

इन मात्राओं के प्रयोग के ज़रिए ध्वनियों का अंकन कितना सुविधाजनक बन गया है। संयुक्त व्यंजनों को लिखने के लिए अक्षर की खड़ी पाई को हटाकर उसे व्यंजन के पहले जोड़ दिया जाता है। यह क्रम सभी व्यंजनों के लिए समान है। जहां 'र' को जोड़ना पड़ता है वहां पर व्यंजन के नीचे "र" को जोड़ना पड़ता है वहां पर व्यंजन के नीचे "∧" चिन्ह लगाया जाता है। अनुनासिक के लिए ' ँ ' और अनुस्वार के लिए ' ं ' का विधान है। विसर्ग को ' ; ' से सूचित किया जा सकता है। कोंकणी की सारी ध्वनियां ऊपर दी गई वर्णमाला, मात्राओं और चिन्हों के जरिए लिखी जा सकती है।

कोंकणी की एक विशेषता है नासिक्य ध्वनि की भरमार। संस्कृत के कई शब्द कोंकणी के आकार अनुनासिक या अनुस्वार से युक्त बन जाते हैं जैसे

कदली	केळें	मर्कट	>	मंकड
अमद्	हाँव	नासिक	>	नाँक
ग्राम	गाँव	नाम	>	नाँव

तत्	तें	रेतस्	>	रेंव
वह	व्यावँप	उच्च	>	उँच
आपणा	अङ्गाडि	चर्मकील	>	चवँकोळू

कोंकणी में बहुवचन बनाने के लिए जो प्रत्यय लगाया जाता है उसमें भी नासिक्य ध्वनियों की प्रमुखता है। कोंकणी के नपुंसक लिंग में आने वाले संज्ञा शब्दों का जब बहुवचन बनाया जाता है तब नासिक्य ध्वनि का प्रयोग होता है जैसे - फल (एकवचन), फळँ (बहुवचन) नासिक्य ध्वनियों की यह भरमार कोंकणी की प्राचीनता की ओर संकेंत करती हैं। सिन्धु लिपि में नासिक्य ध्वनि के अंकन के लिए चन्द्रबिन्दु का प्रयोग मिलता है। भारत प्राचीन काल से ही लिपि-विज्ञान के हर उपयोग पक्ष पर ध्यान से विचार करता आया है इसलिए भारत की लिपियों में नासिक्य ध्वनियों के लिए विशेष चिन्ह रखे गए हैं। कोंकणी में तो अनुस्वार की अपेक्षा अनुनासिक का प्रयोग ज्यादा मिलता है। यह प्रवृत्ति उसे वेदकालीन भाषा के निकट ला खड़ा करता है वैदिककालीन मूर्धन्य नासिक्य ध्वनि भी कोंकणी में मिलती है। वैदिक काल में "म्" के बदले "ङ" के समान नासिक्य ध्वनियों का उच्चारण होता था। कोंकणी में यह पाया जाता है। नासिक्य ध्वनियां के इस उच्चारण में हवा मुख की अपेक्षा नासिका से अधिक चलती है। देवनागरी में नासिक्य ध्वनियों के अंकन के लिए विशेष चिन्ह प्राप्त होते हैं। संपूर्णता एवं प्रत्येक संकेत की एकरूपता अच्छी लिपि का प्रतीकों के जरिए आसानी से अभिव्यक्त की जा सकती है।

कोंकणी भाषा के लिखने में रोमन लिपि उपयुक्त नहीं है

रोमन लिपि में भारतीय भाषाओं को लिखने में बड़ी असुविधा महसूस होती है उसमें एक प्रकार की अनशिचितता है, असंपूर्णता है और अनियमितता है। आधारभूत दोष इतने बड़े हैं कि वह भारतीय भाषाओं के लेखन में काम नहीं आ सकती। एक ध्वनि के लिए एक चिन्ह और एक चिन्ह के लिए एक ध्वनि के वैज्ञानिक तत्व का रोमन लिपि में सर्वथा अभाव है। 'Cut', 'put' दोनों में समान चिन्ह 'u' के जरिए दो ध्वनियों का उच्चारण होता है। एक "कट" और दूसरा "पुट"। देवनागरी में लिखने से इसका अन्तर स्पष्ट दिखाया जा सकता है। वैसे ही "क" के लिए कभी C का प्रयोग कभी-कभी "च" के लिए 'chain' में। यह भ्रामक है इन्टरनैशनल फोनेटिक एसोसिएशन ने ऐ.पी.ए. का निर्माण किया। इसका आधार वर्णमाला थी। रोमन संकेतों को थोड़ा-थोड़ा मरोड़कर भिन्न ध्वनियों के निश्चित संकेत बनाये गये। स्वरों के लिए भी स्थिर चिन्ह तैयार किये। उनकी दीर्घता दिखाने के विसर्ग का प्रयोग हुआ। इसमें संपूर्णता और निश्चितता तो थी न ही। लेकिन इससे बहुरूपता एवं कठिनता जैसे संपूर्णता और निश्चितता तो थी न ही। लेकिन इससे बहुरूपता एवं कठिनता जैसे अवगुण लिपि में बढ़ गये। यह लिपि अक्षरी लेखन पद्धति से दूर रही। इस लिपि के संकेतों में इतनी अस्पष्टता थी कि बड़ा तेज़ लिखने पर भूल हो जाने की संभावना रहती थी।

भारतीय भाषाओं के लिए रोमन लिपि सर्वथा अनुपयुक्त रही है। देवनागरी में अक्षर रोमन के चार अक्षरों में ही प्रस्तुत किये जा सकते हैं। देवनागरी में जो सामान्यतः मात्राओं में चलता है रोमन में वह भी अक्षरों में ही लिखा जाता है। जैसे को Krishna के रूप में दिखाया जा सकता है। रोमन में कुल 5 स्वर है - a, e, i, o, u, देवनागरी के ग्यारह स्वर पांच स्वरों में

कैसे अभिव्यक्त किए जा सकते हैं। रोमन लिपि भारतीय भाषाओं के लिए सभी प्रकार से असुविधाजनक होगी। रोमन लिपि में "औ" को "au" के रूप में जो लिखा जाता है वह सर्वथा भ्रामक है। नागरी में "अउ" और "औ" के लिए भी "kh" लिखा जाता है। यह कहां तक ठीक हो होगा?

गोवा की कोंकणी अक्सर रोमन लिपि में लिखी जाती है। पुर्तगालियों ने यह लिपि कोंकणी के लिए बिल्कुल ठीक समझी थी आज भी कुछ लोग कोंकणी को रोमन में ही लिखते हैं। लेकिन इससे उत्पन्न असुविधाएं ज्यों की त्यों रही हैं। एक उदाहरण से स्पष्ट कि जा सकता है –

जे भाषेंत बुद्ध भगवान उपदेश केलो ती

Je bhaxent Budd Bhogavanan upades kelo ti

पाली पास आयज चार वेगळ्या वेगळ्या

Pali bhas aiz char veglleam vegaliam

लिपियानी बरयतात।

Lipiyamniboroitat

स्पष्ट है कि "ष" के लिए "X", "द्ध" के लिए "dd", "अ" के लिए "O", "ए" (दीर्घ) क लिए "e", "इ" और "ई" के लिए "i", आदि प्रयुक्त हुए है जो भ्रामक ही नहीं गलत भी हैं। इसी प्रकार "कोंकणी" के लिए "konkani", "ताणी" के लिए "tannim", "शिकून" के लिए "xikun", "उपयोग" क लिए "upeg", "सलळयानी" के लिए "sogalleamni" का प्रयोग भारी भूल ही कहा जा सकता है। कोंकणी जैसी सम्पन्न भाषा, जिसका ऐतिहासिक महत्व एवं मूल्यवान परम्परा रही है, उसकी ऐसी दुर्दशा असहनीय ही है।

कर्णाटक में कोंकणी कनडी में लिखी जाती है। कानडी तो भारत की ही लिपि है। ई0 पांचवी शताब्दी से ही इस लिपि का प्रचार प्राचीन बंबई में, हैदराबाद के दक्षिण में, मैसूर एवं मद्रास के उत्तर पूर्व में रहा था। प्राचीन शिलालेख और दानपत्र हज़ारों की संख्या में प्राप्त हैं। फिर भी कोंकणी की प्राचीनता एवं संस्कृत से उनके निकटतम सम्बन्ध को मान ले तो भी किसी भी हालत में कोंकणी कानडी में लिखने के पक्षधर नहीं बनेंगें

संक्षेप में कोंकणी के लिए देवनागरी लिपि की सार्थकता को लक्ष्य में रखते हुए निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं –

1. देवनागरी विदेशी नहीं भारतीय लिपि है। इसलिए आधुनिक भारतीय भाषा, कोंकणी के लिए यह सर्वथा सार्थक कहीं जा सकती है।

2. देवनागरी की प्राचीनतम अक्षुण्ण है। कोंकणी जैसी ऐतिहासिक महत्त्व रखने वाली भाषा के लिए यह लिपि सर्वथा योग्य है।

3. भाषा विज्ञान, दर्शन, प्राचीन इतिहास, भारतीय पुरातत्व, संस्कृति आदि क्षेत्रों में विद्वान लोग देवनागरी का प्रयोग करते हैं। इसलिए कोंकणी जैसी महत्त्वपूर्ण भाषा के लिए देवनागरी ही सर्वाधिक उपयुक्त रहेगी। यह लिपि हमारे इतिहास और संस्कृति से सम्बन्धित रही है।

–हिन्दी विभाग कोचीन यूनिवर्सिटी ऑफ साईस
एण्ड टक्नोलौजी कोची – 682022

भारतीय लिपियाँ मानव मस्तिष्क की श्रेष्ठतम कृति है

-डॉ. रामनिवास साहू

1857 की प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को बर्बरता पूर्वक कुचलने के बाद ब्रिटेन की महारानी ने भारतीय भाषाओं एवं लिपियों के नामोनिशान मिटा देने के लिए 1859 में अंग्रेजी भाषाविद् मोनियर विलियम्स को भारत भेजा। भारतीय भाषाओं को खत्म करने से पहले उन्होंने इन्हें देखना-सुनना-बोलना-पढ़ना-लिखना चाहा। हमारी वर्णमाला-व्यवस्था को सुनकर ही उन्होंने अपना मुंह खोल दिया और ब्रिटेन की रानी को प्रतिवेदन लिखा कि भारतीय भाषाएँ अत्यधिक वैज्ञानिक हैं। इन्हें नष्ट करने की बजाय अंग्रेज़ों को सीखनी चाहिए ताकि अंग्रेजी को भी वैज्ञानिक भाषा बनाया जा सके। उन्होंने देवनागरी को मानव मस्तिष्क की महती उपज के रूप में रेखांकित करते हुए आगे लिखा है कि "यदि संपूर्णता से देखा जाय तो यह लिपि प्रत्येक वर्ण के स्तर पर सर्वाधिक पूर्ण एवं व्यवस्थित है। यदि देवनागरी में कोई दोष है तो यह कि यह दोष रहित है।"

देवनागरी को गौरवान्वित करते हुए अंग्रेजी विद्वान लैबर्ट (1953) तथा पोरिज़्का (1963) ने भी कहा कि "देवनागरी नियमबद्धता एवं स्पष्टता के धरातल पर विश्व की अन्य सभी उपलब्ध लिपियों की तुलना में श्रेष्ठ है।" भारतीय भाषा-सर्वेक्षण के सूत्रधार सर जॉर्ज ग्रियर्सन ने भी 1897 में कहा था कि -"भारतीय लिपि माला रोमन की अपेक्षा बहुत अधिक श्रेष्ठ है।"

अंग्रेजी विद्वान, साहित्यकार, व्यंग्यकार एवं नाटककार बर्नार्ड शॉ ने रोमन की अवैज्ञानिकता से दुखी होकर उसे वैज्ञानिक, स्पष्ट तथा श्रेष्ठ लिपि बनाने के लिए अपनी अरबों की संपत्ति का वसीयत लिख दिया है। किंतु अभी तक किसी को भी सफलता नहीं मिल पायी है। उन्होंने एक ही उदाहरण से अंग्रेज़ी की मिट्टी पलीद कर दी है। (GHOTI) इसका उच्चारण निस्संदेह-घोटी, घूटी, घटी, घोटि, घूटि, घटि, घौटी, घौटि, गोटी, गूटी, गटी, गोटि, गूटि, गटि या फिर घोती, घूती, घती, घोति, घूति, घति, घोति, घौती, घति, गोती, गूति, गती, गोति, गूति, गति-किया जाना चाहिए किंतु स्वन-वर्ण-उच्चारण की जो परंपरा रोमन-अंग्रेजी में है उसके अनुसार-फिश-किया जाय तो पाठकों का मुँह खुला का खुला रह जाएगा। उदाहरणतया-(फ् ड श् = फि श)

tough जैसे अनेक शब्दों में gh = फ

Women में o = इ - फिश

Education में ti = श

भारतीय भाषाओं के स्वन-वर्ण-उच्चारण में समानता है। उदाहरण के लिए देवनागरी जानने वाला व्यक्ति-प-को विश्व के कोने-कोने में (प) ही बोलेगा चाहे शब्द के आदि में हो, मध्य में हो अथवा अंत में, द्वित्व हो अथवा संयुक्त।

पतंग	उपन्यास	आप
पतित	कंपन	साँप
प्यास	सामीप्य	---
प्लावन	विप्लव	---
---	अप्पा	घुप्प
---	स्वप्न	चुप्प
प्रेम	विप्र	---

अंग्रेज़ी में रोमन A का उचचारण 18 प्रकार से किया जाता है। वैसे ही K, C, CC, CK, X, CH का उच्चारण (क) किया जाता है। अनेक उदाहरण हैं जो रोमन लिपि की अवैज्ञानिकता तथा अपूर्णता को प्रमाणित करते हैं। फिर भी विश्व भाषा का ताज रोमन लिपि एवं अंग्रेज़ी भाषा के सिर पर है। कहते हैं कि बेचनेवाला कूड़े को हीरे के दाम बेच आता है जबकि अनाड़ी विक्रेता हीरे को भी वापस घर ले आता है।

आज के सूचना एवं संचार क्रांति के युग में अंग्रेज़ी का ही वर्चस्व है। डॉ. ओम विकास के शब्दों में "इंटरनेट पर 80% से अधिक जानकारी अंग्रेज़ी में ही होती है। जबकि 8% विश्व जन ही अंग्रेज़ी बोलते हैं। ये सामग्री भी अमीरों की अभिरुचि के अनुकूल होती है न कि आम लोगों के।"

हज़ारों साल से विकसित अपनी भारतीय वैज्ञानिक भाषाओं को हम सभी मातृभाषी पूर्वाग्रह की कठोर जंजीरों से जकड़े बैठे हैं जबकि अंग्रेज़ी जैसी अवैज्ञानिक भाषा रोमन जैसी अवैज्ञानिक लिपि के बलबूते पर पूरे विश्व की धरती पर कुकुरमुत्ते की तरह फैलती जा रही है तथा आकाश में अमरबेल की तरह दिन दूनी रात चौगुनी फैलती जा रही है।

डॉ. के. सी. अजय कुमार के अनुसार भारतीय भाषाएँ लिपि की दृष्टि से भिन्न होते हुए भी आपस में इन सभी भाषाओं को जोड़े हुए शब्दावलियाँ प्रचलित हैं। भारत की सांस्कृतिक विरासत इस एकसूत्रता के आधार पर खड़ा है और उसी की आभा में भारतीय संस्कृति महिमा मंडित है। (मंगलाः वर्ष-11, अंक-41, अक्टू-दिसं. -10) वस्तुतः भारतीय भाषाएँ संस्कृत से जनित तथा भारतीय लिपियाँ ब्राह्मी से उद्भूत हुई हैं अतः हिंदी के तत्सम शब्दों के समान ही अन्य भाषाओं में भी संस्कृत के शब्दों की बहुलता है। उक्त अंक में प्रकाशित देवनागरी की वर्णमाला के साथ-साथ बंगला, गुजराती, कन्नड़, तेलुगु, उड़िया, पंजाबी, तमिल, मलयालम के वर्णों की संरचना का अवलोकन करने पर निष्कर्ष निकलता है सभी लिपियों की आधार रचना वृत्त (O) अथवा पाई (I) है।

बाह्य तौर पर भारतीय भाषाओं की लिपियों के वर्णों की संख्या देवनागरी के स्वर=15, व्यंजन=33 कुल=48x8 भाषाएँ=404 वर्ण हैं। हमने अन्य किसी भी भाषा के 48 वर्णों को सीखा नहीं तो 404 वर्णों को सीख सकेंगे? कभी नहीं। सात जनम में भी नहीं। क्योंकि उसकी व्यावहारिक अथवा व्यावसायिक उपयोगिता नहीं है। जबकि स्वेच्छया सीखने पर हर भाषा की वर्णमाला को मात्र 7 घंटे में सीखी जा सकती है।

संरचना आधारित शिक्षण में देवनागरी में मात्र 7 वर्ण मूलभूत दृष्टिगोचर होते हैं। दृष्टव्य

है –

O	I	प	व	न	I	र	ट	उ	ग
1	प	फ	ष	म	भ	स	श्र	क्ष	
2	व	क	ब	च	घ	ध	य	थ	ख
3	न	त	ल	ज	त्र	ज्ञ	ऋ		
4	र	ए	ऐ						
5	ट	ढ	द	ठ	ड	इ	छ	झ	ह
6	उ	ऊ	अ	आ	ओ	औ			
7	ग	ण	श						

अभ्यास विधि –

1. यह अभ्यास अधिकतम 7 घंटे में करना है।
2. 0 वर्ग के वर्णों को 10 बार लिखना है।
3. 1 से 7 वर्ग के वर्णों के लिए 10 खाने बनाकर अभ्यास करना है।
4. अपनी मातृभाषा की वर्णमाला के समांतर देवनागरी की वर्णमाला को रखकर लेखन-अभ्यास के साथ उच्चारण-अभ्यास करना है।
5. हर वर्ण को बायें से दायें लिखना है।
6. पहले शिरोरेखा, दूसरे पाई के बाद अन्य अंशों को लिखना है।

भारतीय लिपियों की विशेषताएँ–

1. ब्राह्मी से उद्‌भूत हैं अतः सभी वर्ण वृत्त (0) अथवा पाई (I) आधारित हैं।
2. उत्तरी भारत के वर्ण उत्तरी शैली तथा दक्षिणी भारत के वर्ण दक्षिणी शैली कहलाते हैं।
3. वर्णमाला के अनुक्रम सभी के समान है। स्वर की मात्राएँ होती हैं तथा व्यंजनों के द्वित्व तथा संयुक्त वर्ण बनते हैं।

दोष –

1. वर्तनी में वर्णों के अनेक उपवर्ण लिखे जाते हैं जिसके कारण सभी भाषाओं की वर्तनी कठिन है। अवैज्ञानिक है।
2. वर्तनी शिक्षण कठिन तथा श्रम एवं समय साध्य है।
3. आक्षरिक होने के कारण व्यंजनों का दुहरा स्वनिक मूल्य होता है।
4. संयुक्ताक्षरों का वर्णिक मूल्य भिन्न होता है।

5. स्वन क्रम तथा वर्ण क्रम में भिन्नता होती है।
6. शब्दों के स्वनिमिक विश्लेषण में कठिनाई होती है।
7. कुछ वर्ण दीर्घाकार हैं तो कुछ लघ्वाकार हैं।
8. संरक रेखाएँ 1 से लेकर 8 तक हैं अतः लेखन त्वरा की कमी है।
9. स्वर की मात्राएँ व्यंजन-वर्ण के चारों तरफ लगायी जाती हैं।

भारतीय भाषा, साहित्य, समाज एवं संस्कृति का इतिहास वृत्त भले ही एक हो किंतु व्यवहारतः अनेकता को अनदेखी नहीं की जा सकती। 'एक राष्ट्रभाषा हिंदी हो, एक हृदय हो भारत जननी' का गायन स्कूलों में तथा हिंदी मंच पर पूरे देश में होता है किंतु यह केवल मंच तक ही है। व्यावहारिक बनाने के लिए जितना प्रयास किया जाता है उतना ही वह उलझता जाता है। मर्ज़ की ज्यों-ज्यों दवा की, मर्ज़ बढ़ता ही जा रहा है। वस्तुतः चिकित्सक विदेशी है। हमें अपनी समस्या का निदान स्वयं ही करना होगा। घर के जोगी को जोगड़ा नहीं 'सिद्ध' कहना होगा। भारतीय भाषाओं के श्रवण-भाषण-वाचन-लेखन को सर्वत्र प्रोत्साहित करना होगा। एक भाषी को भी प्रोत्साहन, बहुभाषी को भी प्रोत्साहन। भारतीय नवजागरण के प्रखर वेत्ता भारतेंदु हरिश्चंद्र की उक्त है-

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय के शूल।
निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल।।

पृष्ठ संख्या 30 का शेष भाग

प्रान्तों में बसे हुए कोंकणी प्रेमी को, एक दूसरे से जोड़ना यही मूल समस्या है। कोंकणी जो नागरी वर्णमाला में लिखता है सामान्यतः वह कन्नड़ वर्णमाला को नहीं जानता, जो कन्नड़ **वर्णमाला में लिखता है वह नागरी वर्णमाला को नहीं चाहता।** जिनके लिए वे अपना तर्क इस प्रकार देते हैं कि नागरी वर्णमाला में "ऑ", "ऍ" के लिए प्रावधान नहीं है क्योंकि कोंकणी से उच्चारण में ये दोनों बहुक्त मात्रा में हैं। इस तरह के और भी तर्क हो सकते हैं जो सत्य हैं। **गोवा में लोगों को लगता है कि नागरी लिपि ही हमें राष्ट्र के साथ जोड़ती है और वही कोंकणी को भी कड़ी के रूप में सफल होगी। कहाँ तक.. यह तो आने वाला समय ही बतलायेगा। वैसे ही मलयालम वर्णमाला में लिखने वाले भी अपना तर्क दे सकते हैं परन्तु वहाँ की कोंकणी अकादमी ने नागरी वर्णमाला को मान्यता दे दी है।** सवाल ज्यादा तर कन्नड़ वर्णमाला से सम्बन्धित अब तक उठे हें जिस पर ज्यादा चर्चा आवश्यक नहीं। हमने 1995 में ही आन्तराष्ट्रीय कोंकणी वर्ष में नजारा देखा है। हम सब उसके साक्षी हैं ...।

अंत में, नागरी लिपि और कोंकणी का समाधान और सम्भावना क्या तय करेगी यह गोवा की तरफ से नहीं; परन्तु कोंकणी प्रेमी क्या चाहता है उसका विश्लेषण बता पायेगा, तभी कोंकणी का विकास सर्वांगी रूप में होगा तो एकांगी ही होगा। "कड़ी--, हथकड़ी" न होकर सामंजस्य की और उदारता की हो यही अपेक्षित है।

अध्यक्ष : कोंकणी विभाग,
गोवा विश्वविद्यालय, गोवा।

सूचना प्रौद्योगिकी और नागरी लिपि

-भवेश खन्ना

बीसवीं और इक्कीसवीं सदी के मनुष्य ने प्रगति की राह पर निरंतर अग्रसर रहते हुए प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कई अभूतपूर्व आविष्कार किए हैं। पिछली सदियों के इन्सान को यदि जिंदा करके **कंप्यूटर, मोबाइल, लैपटॉप, आइपॉड** जैसी न जाने कितनी ही चमत्कारी वस्तुएँ दिखा दी जाएँ, तो बेचारा गश खाकर गिर पड़े। आज की पीढ़ी इन चीजों के बिना जीने की कल्पना भी नहीं कर सकती। ज्ञान के क्षेत्र में इन्सान की सबसे बड़ी उपलब्धि **इंटरनेट की खोज** है, जिसके द्वारा कंप्यूटर और **टेलीफोन प्रौद्योगिकी** के संयोजन से सूचना और संचार के क्षेत्र में चमत्कारी परिवर्तन लाए गए हैं। इस युग में यदि कोई **व्यक्ति इंटरनेट का उपयोग नहीं कर सकता, तो वह व्यावहारिक रूप से निरक्षर माना जाता है।** इंटरनेट ने 'वसुधैव कुटुंबकम' की परिकल्पना को वास्तव में साकार कर दिया है।

आज पूरी दुनिया में इंटरनेट का उपयोग हो रहा है, भले ही कुछ देशों में यह प्रयोग कम है और कुछ में ज्यादा। **भारत की 8 प्रतिशत से भी कम जनसंख्या इंटरनेट का उपयोग करती है।** यह अनुपात विकसित देशों में **90 प्रतिशत जनसंख्या** की तुलना में काफी कम है। **सूचना प्रौद्योगिकी की शुरुआत भले हीअमरीका में हुई हो, फिर भी भारत की मदद के बिना यह आगे नहीं बढ़ सकती थी।** गूगल के एक वरिष्ठ अधिकारी की ये स्वीकारोक्ति काफी महत्वपूर्ण है कि आने वाले कुछ वर्षों में **भारत दुनिया के बड़े कंप्यूटर बाज़ारों में से एक होगा और इंटरनेट पर जिन तीन भाषाओं का दबदबा होगा वे हैं- हिंदी, मैंडरिन और अंग्रेजी।** इसकी पुष्टि इस तथ्य से होती है कि आज भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या लगभग 8 करोड़ है और इस संख्या के आधार पर हम **चीन, अमरीका, जापान** के बाद **चौथे नंबर** पर हैं। जिस रफ्तार से यह संख्या बढ़ रही है, वह दिन दूर नहीं जब भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ता विश्व में सबसे अधिक होंगे।

आमतौर पर यह धारणा है कि कंप्यूटिंग का बुनियादी आधार अंग्रेजी है, यह धारणा सिरे से गलत है। कंप्यूटिंग की भाषा अंको की भाषा है और अंकों में भी कंप्यूटर केवल शून्य एवं एक को समझता है। कोई भी तकनीक और मशीन उपभोक्ता के लिए होती है। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसे कैसे उपभोक्ता के अनुरूप ढाला जाए। भारत के संदर्भ में कहें, तो आईटी के इस्तेमाल को हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाओं के अनुरूप ढलना ही होगा। यह अपरिहार्य है, क्योंकि हमारे पास संख्या बल है। इसी के मद्देनज़र सॉफ्टवेयर की बड़ी कंपनियां अब एक बाज़र की तलाश में भारत जैसे देशों का रुख कर रही हैं। ऐसा किसी उदारतावश नहीं, बल्कि व्यावसायिक बाध्यता के कारण संभव हुआ हे। कंप्यूटर के संदर्भ में देखें, तो अंग्रेजी का बाज़ार ठहराव की ओर

है और हम हिंदुस्तानी अभी कंप्यूटर खरीद रहे हैं। हमने इंटरनेट और मोबाइल तकनीकों का स्वाद चखना अभी शुरू किया है।

इंटरनेट पर हिंदी के पोर्टल अब व्यावसायिक तौर पर आत्मनिर्भर हो रहे हैं। भाषायी वेबसाइटें अपनी मौजूदगी दर्ज करा रही हैं और रोजना लाखों लोग उन पर सर्च करने के लिए पहुँच रहे हैं। कई दिग्गज आईटी कंपनियाँ चाहे वे याहू हो, चाहे गूगल हो या फिर एमएमएन, सबहिंदी अपना रही हैं। माइक्रोसॉफ्ट के डेस्कटॉप उत्पाद हिंदी में उपलब्ध हैं। आईबीएम, एन माइक्रोसिस्टम, ऑरकेल ने हिंदी को अपनाना शुरू कर दिया है। इंटरनेट एक्सप्लोरर, नेटस्केप, मोजिला और आपेरा जैसे इंटरनेट ब्राउजर हिंदी को समर्थन देने लगे हैं। ब्लॉगिंग के क्षेत्र में भी हिंदी की धूम है। आम कंप्यूटर उपभोक्ता के कामकाज से लेकर डाटाबेस तक में हिंदी उपलब्ध है।

ज्ञान के किसी क्षेत्र में नाम लें, उससे संबंधित हिंदी वेबसाइटें आपका ज्ञानवर्धन करने के लिए उपलब्ध हैं। विकीपीडिया, जो एक मुफ्त ज्ञानकोश है और सभी को संपादन का अधिकार देता है, को भी हिंदी में ब्राउज किया जा सकता है। यदि आप पूरी दुनिया की तरह तेजी से पैसा बनाने की चाह रखते हैं, तो शेयर बाज़ार, म्यूचुअल फंड, वायदा कारोबार, सौदा बाज़ार का हाल जानने के लिए भाष आपके आड़े नहीं आएगी। moneycontrol.com, bazaarsambhavna.com, saudabazar.com, moltol.com जैसी साइटें आपको अपनी भाषा में इनकी परिभाषा बताने के लिए तैयार हैं। हिंदी साहित्य के विभिन्न रसों को रखने के इच्छुक साहित्य प्रेमियों के लिए sahityashilpi.com, abhivyaktihindi.org, hindikunj.com, pustak.org जैसी हजारों साइटें हैं। घर बैठे हिंदी के बारे में ज्ञानार्जन करना चाहते हैं, तो saralhindi.com, hindiforyou.blogspot.com जैसी साइटें ऑनलाइन शिक्षक का दायित्व निभाने के लिए हैं। इंटरनेट पर हिंदी समाचार पढ़ने के लिए समाचार-पत्रों के ऑनलाइन संस्करण उपलब्ध हैं। यह दिलचस्प संयोग है कि इधर यूनीकोड नामक एनकोडिंग सिस्टम ने हिंदी को अंग्रेजी के समान ही सक्षम बना दिया है और लगभग इसी समय भारतीय बाज़ार का जबरदस्त विस्तार हुआ है।

हालाँकि यह सच है कि कंपनियों के व्यावसायिक हितों और हिंदी की ताकत को मेल ऐसे में अपना चमत्कार दिखा रहा है, फिर भी चुनौतियों की कमी नहीं। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का मानकीकरण (स्टैंडर्डाइजेशन) आज भी एक बहुत बड़ी समस्या है। यूनीकोड के जरिए हम मानक़ीकरण की दिशा में एक बहुत बड़ी छलांग लगा चुके हैं और उसने हमारी बहुत-सी समस्याओं को हल भी कर दिया है। परंतु हिंदी-की-बोर्ड का मानकीकरण किए बिना यह छलांग नाकाफी साबित हो रही है। आज भी हिंदी टाइपिंग के लगभग 100 की-बोर्ड ले-आउट्स उपलब्ध हैं। यूनीकोड के मानकीकरण से फॉंटों की असमानता की समस्या का समाधान तो पास दिख रहा है, लेकिन की-बोर्डों की अराजकता का मामला अभी भी उलझा है। इस अराजकता को दूर करने का उपाय डीआई इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड ले-आउट का उपयोग है। यह बेहद स्मार्ट किस्म की अत्यंत सरल और बहुत

तेजी से टाइप करने वाली की-बोर्ड प्रणाली है। वैज्ञानिक रूप से तैयार किए गए इस की-बोर्ड को सीखने से हिंदी के साथ-साथ बहुत-सी भारतीय भाषाओं में टंकण-कार्य आसानी से किया जा सकता है।

अब समय आ गया हे कि आईटी में हिंदी को गति देने के लिए कंप्यूटर हिंदी टाइपिंग ट्रेनिंग पर पूरा ध्यान दिया जाए और वह भी केवल डीओई इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड ले-आउट की ट्रेनिंग पर। हिलहाल लोग यह निर्णय ही नहीं कर पाते कि हिंदी के इतने की-बोर्डों में से कौन-सा सबसे आसान है, जिसे सीखा जाए। की-बोर्ड के मानकीकरण करने के लिए सरकार सभी की-बोर्डों पर अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड ले-आउट के अनुसार अक्षर अंकित करना अनिवार्य कर सकती है। इससे हिंदी टाइप सीखने और हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। कंप्यूटर में यूनीकोड को एक्टिवेट करने पर इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड ले-आउट अपने आप उपलब्ध हो जाता है। जो सुविधा पहले से कंप्यूटर में मौजूद हो और जिसे खोजने के लिए किसी वेबसाइट या बाज़ार में न जाना पड़े, कंप्यूटर उपयोगकर्ताओं द्वारा उसका उपयोग करने के आसार स्वाभविक रूप से बढ़ जाते हैं।

कुछ लोगों के लिए यह एह विवाद का विषय हो सकता है कि हिंदी विश्व में दूसरी या तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हमें यह गर्व करने का अधिकार तो है ही कि हमारे संख्या बल ने हिंदी भाषा को विश्व के मानचित्र पर स्थापित कर दिया है। यह भी एक सत्य है कि किसी भाषा का विकास और प्रचार-प्रसार किसी प्रेरणा, प्रोत्साहन या दया का मोहताज नहीं। भाषा तो स्वतः प्रयोग के विभिन्न माध्यमों के पँखों पर सवार होकर विकास की राह पर निरंतर अग्रसर रहती है। हिंदी के बारे में भी यह बात हर तरह से खरी उतरती है। हिंदी के भविष्य की चिंता करने वालों को आज नहीं तो कल इस तथ्य से रू-ब-रू होना ही होगा। प्रिंट हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, फिल्में हों या टीवी सीरियल, डिस्कवरी, जियोग्राफ़िक हो या हिस्ट्री, या हो कार्टून करैक्टर आज सब पर हिंदी की तूती बोलती हे। ये सभी तथ्य हमें हिंदी के उज्जवल भविष्य के प्रति आश्वस्त करते हैं।

पर सवाल यह है कि क्या हम अपने देश की बहुत बड़ी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली युवा पीढ़ी को हिंदी के साथ जोड़ पाए हैं? किसी भी भाषा के लिए उसको सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने वाले सभी महत्वपूर्ण होते हैं। हिंदी के संदर्भ में यदि देखा जाए, तो उसे सुनकर समझने तथा बोलकर समझाने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। बोलचाल में जहाँ हिंदी का खुलकर प्रयोग हो रहा है और निस्संदेह भविष्य में भी होता रहेगा। यही बात हिंदी पढ़ने और लिखने वालों के बारे में बहुत दावे के साथ नहीं कही जा सकती। जब बात हिंदी पढ़ने और लिखने की आती है, तो कई प्रकार के बहानों का सहारा लेकर इससे बचने का प्रयास किया जाता है। किसी भी भाषा के लिए उसके पढ़ने और लिखने वाले भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने उसे समझने और बोलने वाले।

ई-मेल और एसएमएस के इस दौर में प्रौद्योगिकी प्रेमी आज की युवा पीढ़ी को हिंदी प्रेमी बनाने के लिए **हिंदी को कंप्यूटर-सेवी बनाना ही होगा। इसके लिए कंप्यूटर पर यूनीकोड तथा इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड ले-आउट का मानकीकरण अनिवार्य रूप से किया जाए।** इनके उपयोग की जानकारी विभिन्न प्रचार माध्यमों से उपलब्ध कराई जाए। हिंदी के प्रति अति-शुद्धतावादी दृष्टिकोण भी आज की पीढ़ी को इससे दूर करता है। जिस दौर में रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार, वातावरण और व्यवहार कुछ भी पूरी तरह शुद्ध नहीं है, भाषा की शुद्धता की उम्मीद करना व्यावहारिक प्रतीत नहीं होता। नर्सरी के बच्चों को हिंदी के वर्ण सिखाने के लिए ऐसे शबें का प्रयोग क्यों किया जाए, जो आज आम बोलचाल में प्रयोग ही नहीं होते। जिन अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग एक आम रिक्शावाला भी आसानी से कर लेता है, उन्हें हम अपना कों नहीं मान लेते। लिपि परिवर्तन से अन्य सभी भाषाओं के प्रचलित शब्दों को हिंदी भाषा में अपनाने का प्रयास होना चाहिए। आज की पीढ़ी के अंग्रेजी से मोह का मुख्य कारण उसका लीचीलापन और संकेताक्षरों की सहूलियत है। यह लीचीलापन हिंदी में लाने के लिए हमें गंभीरतापूर्वक सोचना होगा।

हिंदी भारत की जनभाषा भी है और राजभाषा भी। भारतीय संविधान द्वारा सौंपे गए संवैधानिक दायित्व के तहत सरकारी कार्यालयों में हम हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं। देश के हिंदीभाषी क्षेत्रों के अलावा हिंदीतर जनमानस भी हिंदी के महत्व को स्वीकार करते हुए इसका प्रयोग सीख रहा है। भारत के अलावा विभिन्न देशों के लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है। **अमरीका जैसे विकसित देश ने कई मिलियन डॉलर की एक विशेष राशि अपने देशवासियों को हिंदी और चीनी भाषाएँ सिखाने के लिए संस्वीकृत की हैं।** हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएन) में स्वीकार्य भाषा बनाने के लिए भारत सरकार प्रयासरत है। रुपया, डॉलर, पाउंड और यूरो से होड़ लेकर **अंतरराष्ट्रीय ख्याति पाने को तैयार है।**

हिंदी के भविष्य की इस उजली तस्वीर के बीच हमें हिंदी को **प्रौद्योगिकी के अनुरूप ढालना है।** कंप्यूटर पर केवल **यूनीकोड को अपनाकर हम अर्ध मानकीकरण तक ही पहुँच पाएँगे। जरूरत है यूनीकोड के साथ ही इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड ले-आउट को अपनाने की, ताकि पूर्ण मानकीकरण सुनिश्चित किया जा सके।** हिंदी में साहित्य या समाचार आधारित वेबसाइटों के अलावा तकनीक, साइंस, ई-कॉमर्स, ई-शिक्षा आदि विषयों पर **वेबसाइट तैयार** करनी होंगी। हमारे लिए उपयोगी अंग्रेजी साइटों को हिंदी में तैयार करने की चुनौती स्वीकार करनी होगी। इन सबके बीच अपनी भाषा की प्रकृति को बरकरार रखते हुए इसमें लचीलापन लाना होगा। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची की सभी भाषाओं के साथ अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों को हिंदी शब्दकोश में सम्मिलित कर इसे और समृद्ध करना होगा। आइए, **प्रौद्योगिकी** के इस युग में हिंदी के उज्जवल भविष्य के बीच हम इसके प्रति संवेदनशील बनें और खुद को इसकी प्रगति में भागीदार बनाएँ।

गोंय, कोंकणी आनी देवनागरी लिपी

-अरविंद भाटीकार

भास

भास आनी संस्कृताय हांची राखण आनी उदरगत करपाक सरकारी आश्रय खूब म्हत्वाचो आसता. गोंयचें वेगळें राज्य जावचें आनी त्या वेगळया राज्यांत कोंकणी ही राजभास आसची हीं वयले वसर पळयल्यार दोन उद्दिश्टां कशीं दिसतलीं. पूण खरेपणी समजूंक गेल्यार हे एकच उद्दिश्ट. कारण, भाशेचेर आदारून राज्यांची रचणूक जातकच आपणालें वेगळें राज्य आसले बगर भाशेची आनी ते भाशे वरवीं समाजाची उदरगत जावची ना हें भारतांतल्या सगलया वाठारांतल्या लोकांक दिसतात्र तशेंच गोंयच्याय लोकांक दिसलें आनी गोंयकारांनी झुजून गोंया खातीर वेगळें राज्य मागून घेतलें. कोंकणी ही थंयची राजभास केली. गोंय महराष्ट्रांत विलीन जाल्लें जाल्यार कोंकणी अस्मिताय आनी संस्कृताय इतली फुलतली आनी फळटली आसली काय ना हो प्रस्न दर एकल्याच्या मनांत येवं येता. राजश्रया इतलोच लोकांचो भाशे वयलो मोग आनी भाशे वरवीं संस्कृताय आनी अस्मिताय घट करपाची जिद्द ह्योय गाजी म्हत्वाच्यो आसतात. ते नदरेन पळयल्यार कोंकणींतल्यान उलोवंक आनी बरोवंक पिगलीं पयलीं लजपी लोक आयज अभिमानान कोंकणी उलयतात, वाचतात आनी बरयतात. एका काळार गोंयांत माचये वयल्यान मराठी आनी माचये सकयल कोंकणी उलोवपाची गोंयच्या हिंदूंक संवय आशिल्ली. पूण आयज सगले कडेन माचयेर आनी माचये सकयल राजकी, समाजीक आनी साहित्यीक फुडारी कोंकणी उलयतात. केरळ, तमिळनाडू, कर्नाटक, उत्तर भारत हांगाच्यान पोट भरपा खातीर येवपी मेस्त, प्लंबर, पेण्टर, भाजी आनी फळां विकपी हे सगले कोंकणी शिकतात आनी गोंयकारां कडेन कोंकणी उलयतात. गेल्ल्या धा वर्सात गोंयांत टी.व्ही. चॅनल सुरू जाल्यात. गोवा न्यूजलायन गोंयचें पयलें खबरां चॅनल कोंकणीतल्यान सुरू जालें. मागीर सुरू जाल्ले प्रुडट मिडिया, गोवा ३६५ आनी हेर चॅनल मुखेलपणान कोंकणींतल्यान कार्यक्रम चलयतात. गोंयचे विधानसभेंत चड भासाभास कोंकणींतल्यान, आनी कांय इंग्लिशींतल्यान जाता. गोंय स्वतंत्र जावचे पयलीं मांडो, कांतार हें संगीत गोंयचे थळावे विशय घेवन जल्मलें तरी पुर्तुगेज सरकाराच्या पाख्या खाला ख्रिश्चन समाजान ह्या संगिताक अस्तंती चाली लावन एक वेगळे तरेचें खाशेलें संगीत ह्या जगांत हाडलें. हाच्या उरफाटें, हिंदू समाजांतलें कोंकणी संगीत भारतीय चालींनी, म्हणल्यार हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगिताचेर निंबून आशिल्ल्या चालींचेर चलतालें. गोंयचें हालींचें कोंकणी संगीत कांतार आनी गीत हांचे मदली वाट काडून भारतीय सूर आनी चाली अस्तंतेच्या तालाचेर फुलता आनी फळटा. भाशेची उदरगत वाडची म्हूण गोवा कोंकणी अकादेमी आनी गोंयचें कोंकी भाशा मंडळ आपले परीन वेगळयो वेगळयो येवजण्यो सुरू करतात. गोंय सरकाराच्या राजभास विभगांत विंगड विंगड उतरावळी तयार करपाचें काम चल्लां. सरकारी कामां खातीर प्रशासकी उतरावळ, कायदे, नेम आनी न्यायीक बांदावळींत लागपी उतरावळ, पंचायत राज्यांत लागपी उतरावळ अश्यो तरातरांच्यो उतरावळी हातूंत आसपावतात. तशेंच सरकारी अधिकायांक आनी कर्मचायांक कोंकणींतल्यान प्रशासन चलोवपा खातीर प्रशिक्षण दिवपाची येवजणय सरकारा मुखार आसा. सरकारी कचेयांनी हेर भासां वांगडा कोंकणींतल्यान बोर्ड आसचे, रस्त्याचेर गांवांच्या नांवांचे बोर्ड कोंकणींतल्यान आसचे, सरकारी आमंत्रणां कोंकणींतल्यान छापचीं आनी पुलीस स्टेशनांनी कागाळी कोंकणींतल्यान बरोवन घेवच्यो अशे गोंय सरकारान २०१० वर्सा आदेश काडले. कोंकणीच्या मळार वावुरपी म्हालगड्यांनी सरकारा फाटल्यान लागून राजभास कायदो विभागांत हें काम सुरू केलां आनी कळाव लागनासता तें काम तडीक व्हरूंक दीसरात वावुरतात.

कोंकणी भास आनी अस्मिताय फुलची आनी फळची म्हूण गोंयांतले भशेन कर्नाटकांत आनी केरळांत लेगीत खूब वावर चल्ला. मंगळुरूचें कोंकणी भाशा मंडळ, सरकारी अनुदानान स्थापन जाल्ली कर्नाटक कोंकणी साहित्य अकादेमी आनी बस्ती वामन शणै हांच्या प्रयत्नांक लागून स्थापन जाल्लें विश्व कोंकणी केंद्र ह्यो संस्था कोंकणीच्या मळार मोलादीक वावर करीत आयल्यात. कोंकणी हो विशय सव्या वर्गा साकून भुरग्यांक एक 'तिसरी भास' म्हूण शिकूं येता, आनी देवनागरी आनी कानडी ह्या दोनूय लिपींतल्यान ती शिकूं येता. कर्नाटक सरकार कर्नाटक कोंकणी साहित्य अकादेमी खातीर दर वर्सा सुमार ५० लाख अनुदान दिता. ह्या अनुदानांतल्यान सबंद राज्यांत कोंकणी भाशेच्यो आनी संस्कृतायेच्यो वेगवेगळयो कार्यावळी जातात.

कर्नाटकांत देवनागरी कोंकणी बरोवचे परस कानडी लिपींतल्यान चड बरयतात. कानडी लिपींतल्यान कोंकणी बरोवपी लेखकांनी बऱ्या दर्ज्याच्या साहित्याची निर्मिती केल्या. कोंकणी परिशदेच्या उद्दिश्टां प्रमाण कोंकणी भाशेची उदरगत फुडाराक एकेच लिपींतल्यान जावंक जाय आनी ती देवनागरींतल्यान जावंक जाय हे खातीर कोंकणी संस्थांनी यत्न करचे पडटले. गोंय सरकार रोमींतल्यान, कर्नाटक सरकार कानडींतल्यान आनी केरळ सरकार मल्ल्याळमांतल्यान कोंकणी बरोवची न्हय अशें केन्नाच म्हणचें ना हें आमी ध्यानांत दवरूंक जाय.

केरळांत कोंकणी समाज उणो आसा. पूण कोंकणी लोकांचो आंकडो उणो आसल्यार लेगीत थंय कोंकणीचें काम व्हड प्रेमान आनी जिद्दीन चललां. ५०–६० वर्सां पायलीं पुरुषोत्तम मल्ल्यान थंय 'कोंकणी प्रचार सभा' सुरू केल्ली. मागीर कांय काळान पी. जी. कामत हांच्या फुडारपणा खाला कोंकणी साहित्य अकादेमी सुरू जाली आनी ते अकादेमीच्या पालवान जायते बऱ्या दर्ज्याचे लेखक आमचे मुखार आयले. केरळ सरकारान फुडल्या वर्साच्यान केरळ कोंकणी साहित्य अकादेमी सुरू करपाचें थारायलां. सरकारी पाख्या खाला कोंकणीच्यो कार्यावळी सुरू जातकच त्या राज्यांत कोंकणीची उदरगत चड बेगीन जातली हातूंत दुबाव ना. एके गाजालीची आमी तोखणाय करपाक जाय म्हणटा ती, केरळांत सरकारी अनुदानान थोड्यो कोंकणी मुळाव्यो शाळा गेल्लीं खूबशीं वर्सां चलतात.

लिपी

पुर्तुगेज राजकर्त्यांनी कॅथोलिक पाद्र्यां कडेन हातलेळोवणी करून कोंकणीचेर आनी गोंयच्या भौसाचेर जे अत्याचार केले तातूंतल्यान लिपीचो प्रस्न उप्रासलो. पुर्तुगेजांक भारत सरकारान धांवडायले, पूण भारत सरकार जांव, गोंय सरकार जांव, समजाच्या फुडाराचे नदरेन लिपीच्या प्रश्नाचेर उपाय सोदून काडपाक ह्या सरकारांनी कायच पावलां उखलूंक नात. पुर्तुगेजांनी गोंयांत रोमी लिपी आपणयली. केरळांत पाविल्ल्या लोकांनी मल्ल्याळम आपणायली. देवनागरी, रोमी आनी कानडी ह्यी लिपी आयज आमी मुखेलपणान वापरतात. कोंकणी ही इंडो–आर्यन भास संस्कृत भाशेंतल्यान सुमार हजार वर्सां पयलीं जल्मल्ल्यान कोंकणीची लिपी देवनागरी अशें सभावीकपणान म्हणचें पडटलें. इतिहासीक कारणाक लागून जाल्ले बदल रातयांत ना जायनात, देखून देवनागरी वांगडाच रोमी आनी कानडी लिपी आयज आमी वापरतात. १९३९ वर्सा कारवारा जाल्ले पयले परिशदेन कोंकणीक एकूच लिपी आसूंक जाय, आनी ती म्हणल्यार देवनागरी हें तत्व चारूय राज्यांतल्या कोंकणी समाजाक सांगलें. पूण अजून मेरेन तें तत्व चालीक लावंक कोंकणी भौसाक व्हडलेंशें येस मेळूंक ना. आयज एके लिपींतलें लिखाण दुसरे लिपींत बरयतल्या लोकांक वाचूंक मेळना. हो प्रस्न ट्रान्सलटरेट (म्हणजे कंप्युटर सॉफ्टवॅर वापरून एके लिपयेंतल्यान दसरे लिपयेंत बदलपाची प्रक्रिया) करून सुटूंक शकता. ही प्रक्रिया सध्वा वापरूंक मेळटा. तशेंच एके भाशेंतल्या लिखाणाचो दुसरे भाशेंत अणकार करपाक इलेक्टॉनिक सॉफ्टवॅर तयार करपाची प्रक्रिया भारत सरकाराच्या पाख्ला खाला खूबशे कडेन चालू आसा. कोंकणी खातीर गोंय यूनिवर्सिटीच्या कंप्युटर विभगांत काम चालू आसा. कोंकणी साहित्य आनी हेर लिखाण वाडपाक ह्या तत्रगिन्यानाची खूब मजत जातली.

कंप्युटराच्या जगांत फकत रोमी लिपीच चलता

आनी देखून देवनागरी वा हेर भारतीय लिपींनी बरयिल्ल्यो भासो आपले आपूण ना जातल्यो असो फटीचो प्रचार कांय इंग्लीशधर्जिणे आपमतलबी लोक करतालें. कंप्युटराचें तंत्रगिन्यान हें अमके भाशे खातीर वापरूं येता आनी हेर भाशां खातीर वापरूं येन अशें केन्नाच नाशिल्लें. चीनी, रशियी, जपानी आनी हेर कितलेशेच देश आपणाले भाशेंत आनी आपणाले लिपींत कंम्प्युटर तंत्रगिन्यानाचो वापर करतात. विकिपिडिया हो संवसारांतलो सगल्योंत व्हडलो विश्वकोश जगांतल्या २६७ भासांनी मेळटा. गुगल हें 'सर्च इंजिन' भारतांतल्या आठ भासांनी मेळटा. फेसबुकाचेर आयजची तरनाटी पिळगी कोंकणींतल्यान बरयता तें वाचून कोंकणी कंप्युटरांत पावली म्हूण हड्डें अभिमानान फुलता. कोंकणी पयलीं बैलगाड्यांत बशिल्ली, मागीर सायकलीचेर, मागीर मोटारसायकलीचेर, मागीर मोटारींत, मागीर विमानांत आनी आतां कंप्युटरांत बसून प्रवास करतली अशें रवीन्द्र केळेकारान एक फावट अपणाल्या उलोवपांत म्हणिल्लें.

लिपीच्या प्रस्नांत खूबशें तंत्रगिन्यानी संशोधन जावंक जाय. सध्या चडश्यो पद्दती आसात त्यो इंग्लीश 'की-बोर्डा' वयल्यान देवनागरी टायप करपाच्यो अश्यो आसात. कोंकणींतले खासा उच्चार आसपावन देवनागरी 'की-बोर्ड' तयार करपाची गरज आसा. हाचेर संशोधन करपाक गोंय, महाराष्ट्र, कर्नाटक आनी केरळ सरकारान पयसो मोडूंक जाय आनी कोंकणीचे उच्चार आशिल्ले 'की-बोर्डा' चे कंप्युटर, अनुदान दिवन सवाय भितर लोकांक विकपाची तजवीज करपाक जाय.

लिपीचो प्रस्न तंत्रगिन्यानाक लागून आपले आपूण सुटटलो अशें म्हणपात अर्थ ना. राजकारणाक लागून हो प्रस्न बिकट जाला. देवनागरी लिपी ही भारतांतली सगल्यांत पोरणी आनी भारतांतलो सगल्यांत व्हड जनसमुदाय वापरीत आयिल्ली लिपी. खंयचेय भाशेक आपणाली खासा लिपी आसतना परकी लिपी आपणावपाचो हट्ट धरप म्हणल्यार भारतीयांच्या स्वाभिमाना आड केल्लो हट्ट. ब्रिटीशांनी भारतांत सगले कडेन बदलिल्लीं थळावीं नावां आता थळावीं सरकारां मूळ रुपांत हाडटात. देखीक : बॉम्बे मुंबई जालें, पुना पुणे जालें, त्रिवेंड्रम तिरुवनतपुरम, उटी उरकमंडलम, कलकत्ता कोलकाता, त्रिचीनोपली तिरुचिरापल्ली, मँगळुरू, बेंगलोर बंगळुरू, कॅलिकट कोझिकोड अशीं खूब नांवां बदलल्यांत. ब्रिटिशांनी दिल्लें आमी जर स्वाभिमाना खातीर बदलूंक शकतात जाल्यार पुर्तुगेजांनी दिल्लें कित्याक बदलूंक शकनात? धर्म बदल्लो म्हूण संस्कृताय आनी दायज बदलपाची गरज ना हें भारतीय खिश्चनांनी सिद्ध केलां. भारतांत समार तीन कोटी खिश्चन आसात. सगले खिश्चन लोक आपालो धर्म सांबाळून थळाव्या भाशां वरवीं, थळाव्या संस्कृतायां वरवीं आपल्या समाजाची उदरगत करतात. गोंयांत मात वेगळी तरा. गोंयचे कॅथोलिक अजूनय रोमी लिपीचो आनी इंग्लिशीचो हट्ट धरतात. गोंयचे राजकारणी कॅथोलिक 'वोट-बँकां' खातीर ह्या हट्टा मुखार बागवतात. रोमी लिपीचो आनी इंग्लीश मुळाव्या शिक्षणाचो हो हट्ट गोंयचे अस्मितायेचोच (आयडॅटिटी) एक वाटो अशों गोंयचे कॅथोलिक फुडारी आनी राजकारणी मानतात. हो तांचो राष्ट्रविरोधी हट्ट गोंय आनी भारत सरकारान हायकून घेवंक जायना आनी भरतांत आशिल्ली सांस्कृतीक विविधताय हें भारतीय संस्कृतायेचेंच एक रूप हें स्पश्टपणान सांगूंक जाय. गोंयच्या कोंकणीच्या कळा वयल्या कार्यकर्त्यांनी तशेंच परिशदेच्या फुडार्‍यांनी आनी गोंयच्या विंगड विंगड संस्थांनी गोंय आनी भारत सरकारचेर चेपण हाडून हें कोंकणीचे मानेचेर बशिल्लें रोमीचें भूत काडून उडोवंक जाय.

भारतांतलीं चडशीं भुरगीं आतां हिंदी शिकतात आनी देखून तांकां देवनागरी लिपी येता. कानडी लिपींतलें कोंकणी लिखाण आर्विल्लें तंत्रज्ञान वापरून देवनागरी लिपयेंत बरपोवपाक भुरग्यांक फुडें काडूंक जाय. ह्या कामांत परिशदेन खूब वावर करचो पडटलो.

एफ. ओ. 314, 4C Model Millenium Vistas
Caranzalam Goa - 403002
संपर्क : (0832) 2465127

अखिल भारतीय कोंकणी परिशद :

राष्ट्रीय पांवड्यावयली पयली कोंकणी संस्था. कोंकणी भास, साहित्य, समाज आनी संस्कृताय हांच्या संवर्धनाखातीर भुगोलीक, राजकीय, धार्मीक, जातीय आनी लिपीक विचारसरणिंनी वांटून गेल्ल्या कोंकणी लोकांक एक समान व्यासवीठ उपलब्ध करून दिल्ली आद्य आनी एकमेव लोक संस्था. मुखेलपणान गोंय, कर्नाटक, करेळ आनी महाराष्ट्र अशा चार प्रदेशांनी, हिंदू, किरिस्तांव आनी मुसलमान अशा तीन धर्मांनी, ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य आनु शुद्र अशा चार वर्णांनीं, नागरी, रोमी, कन्नड आनी मल्लयाळम अशा चार लिपींनीं वांटून गेल्ल्या कोंकणी समाजाक एकठांय हाडून एकसंघ कोंकणी समाजाची स्वकियांक तशी परकियांक कळख करून दिवापाचें इतिहासीक कार्य केल्ली संस्था.

हे संस्थेची थापणूक ८ जुलय १९३९ वर्सा ऑल इंडिया कोंकणी परिशद ह्य नांवान कारवार हांगा जाली. अशी अखील भारतीय स्वरुपाची कोंकणी संस्था घडची म्हणून कुमठा (कर्नाटक) हांगचे वकील श्री. माधव मंजुनाथ शानभाग हाणों कर्नाटकांतल्या हेर समविचारी कोंकणी लोकांच्या पालवान ८ जुलय १९३९ दिसा कारवारा एका दिसाचें कोंकणी लोकांचें संमेलन घडयलें आनी ह्या संमेलनांत हे संस्थेचो जल्म जालो.

कारवारच्या हिंदू हायस्कुलाच्या सभाघरांत जाल्ल्या ह्या पयल्या संमेलनाचो श्री. माधव मंजुनाथ शानभाग स्वागताध्यक्ष आसलो. श्री. विश्वनाथ पांडुरंग प्रभू अध्यक्ष आसलो. श्रीमती कृष्णाबाय देवराय पणजीकार मुखेल सोयरी आसली. हेर मानेस्तांमदीं, श्री. मुतकेकार, श्रीकृष्ण रावहळदीपूर, पी. एम्. कामत, बी. एस्. मानीनकुर्वे, श्री. सिल्वा आसले. चित्रपूर मठाचे स्वामी आनंदाश्रम स्वामी कारवार तेंकून आशिल्ल्या अंकोला गांवांत आसले, ताणों कारवारा येवन परिशदेक आशिर्वाद दिले. परिशदेच्य ह्या पयल्या अधिवेशनाक कर्नाटक आनी हेर कोंकणी प्रदेशांतल्यान सुमार हजार भर लोक उपस्थीत आसले.

ह्या अधिवेशनांत कोंकणी भास, कोंकणी साहित्य, कोंकणी शिक्षक, कोंकणी संस्कृती आनी कोंकणी समाज ह्या विशचांचेर भासाभास जाली. कोंकणी भास ल्हान आसली तरी तिचें दायज गिरेस्त आसा. तिच्या पुतां–धुवांनी तिका कुस्कुटायल्ल्यान ती वनवास भोगता. उंबत उडयल्ले हे भाशेक लागीं करून तिका वयर काडूया असो विचार थंय जालो. तेचपरी राजकीय, धार्मीक, आर्थीक, सामाजीक लिपीक कारणांखातीर विस्कळीत जाल्ल्या कुर्तव्वी कोंकणी समायान एकठांय येवन आपली आनी आपले भाशेची उदरगत सादची होय विचार थंय आयलो. तेभायर, दिसपट्ट्या वेव्हारांत कोंकणीचो वापर, कोंकणी पुस्तकां, नियतकालिकांचें प्रकाशन, कोंकणीची आंवयभास म्हणून शिरगणतींत नोंद, कोंकणी लोकांच्या भुरग्यांखातीर कोंकणी प्राथमीक शाळा, कोंकणी पाठ्यपुस्तकां हे संबंधीच्यो थंय थारावण्यो जाल्यो. हेर लिपींचो आदर करतानाच कोंकणीखातीर समान लिपी म्हणून देवनागरी लिपीचो वापर क्रमाक्रमान करचो अशी म्हत्त्वपूर्ण थारावणीय हे परिशदेंत घेतली.

ऑल इंडिया कोंकणी परिशद ह्या नांवान स्थापन जाल्ले हे संस्थेचें १९७४ वर्सा ऑल इंडिया कोंकणी साहित्य परिशद अशें नव्यान नामकरण जालें. ह्याय नांवान तिचें १९७६ वर्सा गोंयांत सोसायटीज रेजिस्ट्रेशन ॲक्टाखाला रजिस्ट्रेशन जावंन तिची मुखेल कंचेरी गोंयांत आसची अशें थारलें. उप्रांत तिच्या नांवांतलें साहित्य हे उतर १९९० त गाळून तिका ऑल इडिया कोंकणी परिशद हें नांव दिलें. २००६ वर्सा तिचें पुनर्रजिस्ट्रेशन करताना तिचें अखिल भारतीय कोंकणी परिशद अशें नव्यान नाम करण केले. परिशदेच्या

इतिहासांत गरजेनुसार तिका वेगवेगळीं नांवां प्राप्त जालीं आसलीं तरी कोंकणी समाजांत अखिल भारतीय कोंकणी परिशद अशीच तिची वळख आसा.

१९६१ सावन परिशदेन आपल्या कार्याची व्याप्ती वाडोवन घेतली. दर दोन वर्सांनी जावपी परिशदेच्या अधिवेशनांत कोंकणी भास, साहित्य, संस्कृती, शिक्षण, समाज अशा साबार विशयांचेर विचार मंथन जातालें. दोन वा तीनदीस जावपी ह्या अधिवेशनांत उण्या वेळाक लागून साबार विशयांचेर जावंक जाय तितली चर्चा जावक पावना जाली. कोंकणी शिक्षण, कोंकणी साहित्य सारक्या विशयांची व्याप्ती आनी योगदान मोठी भर पडिल्ल्यान सगळयाच विशयांखातीर एकच व्यासपीठ उणें पडूक लागलें. म्हणून फकत साहित्त्य ह्या विशयाचें परिशदेचे वेगळे व्यासपीठ आसचें असो एक विचार घोळटालो. साहित्त्याखातीरच वेगळे अशें 'अखिल भारतीय कोंकणी लेखन संमेलन' नांवाचें व्यासपीठ, गोंयच्या कोंकणी भाशा मंडळावतीन १९७४ सावन उपलब्ध आसलें. तायेय पयलीं १९६८ आनी १९६६ वर्सा कोंकणी 'बरोवप्यांचो एकवट' हे गोंयचे संस्थेवरवीं दोन लेखक संमेलनां भरिल्लीं. १९६८ ते १९९० मेरेन धा साहित्यीक संमेलनां जालीं तीं फकत गोंयातच जालीं कारण तीं आयोजीत करपी संस्थांची कार्य मर्यादा गोंयापुरती आसली. गोंयाभायर साहित्य संमेलनां घडोवन तांकां खरेल्या अर्थान अखील भारतीय साहित्य संमेलनांचे स्वरूप दिवप ह्या उद्देशान तांच्या आयोजनाची जापसालकी अखिल भारतीय कोंकणी परिशदेकडेन सोंपयली आनी परिशदेच्या आयोजनाखाला इकरावें साहित्त्य संमेलन १९९२ त कारवारा जालें. उप्रांतचीं सगळीं साहित्य संमेलनां (गोंयांत तशीं गोंयाभायर) परिशदेवतीनचच जायत आसात.

एक भास, एक लिपी, एक साहित्य, एक समाज ह्या तत्त्वावरवीं संसारभर शिंपडून गेल्ल्या कोंकणी लोकांक, प्रदेश, धर्म, जात, लिपी विरयत एकठांय हाडून, सक्षम असो कोंकणी समाज घडोवन, ते वरवीं ह्या समाजाकडल्यान राष्ट्रीय तशें आंतरराष्ट्रीय पांवड्यार देखदेणें योगदान घडचें हें उद्दीश्ट नदरेमुखार दवरून परिशद फाटलीं सत्तर वर्सां कार्यरत आसा. सुर्वेचीं, विशेश करून गोंयचे सुटके पयलींचीं, कांस वर्सां सोडलीं तर एक वर्सा परिशद, एक वर्सा साहित्य संमेलन अशीं २८ अधिवेशनां आनी २० संमेलनां सातत्त्यान घडोवन हाडून परिशदेन कोंकणी चळवळखातीर राष्ट्रीय व्यासपीठ दिलां. कोंकणीय साहित्य अकादेमीची मान्यताय, भारताच्या संविधानांतल्या आठव्या परिशिष्टांत कोंकणीचो आस्पाव, आकाशवाणी, दूरदर्शनाचेर कोंकणी, राज्यां–राज्यांनी सरकारी कोंकणी अकादेमी, राज्यां–राज्यांनी कोंकणी शिक्षण, राज्यां–राज्यांमदीं साहित्यीक आदान–प्रदान, प्रादेशीक कोंकणी भाशा मंडळांची थापणूक अशे राष्ट्रीय पांवड्यावयल्या उपक्रमांक विचार आनी चालना दिवपी परिशदेन राष्ट्रीय व्यासपीठ उपलब्ध केलें. खासा गोंयचें स्वतंत्र राजकीय अस्तित्व (संघप्रदेश, घटकराज्य) गोंय राज्याची कोंकणी राजभास, प्राथमीक ते पदव्युत्तर शिक्षणामेरेन कोंकणी शिक्षण अश साबार उपक्रमांचे चळवळीक परिशदेच्या व्यासपिठान मार्गदर्शन केलां, प्रादेशीक, राष्ट्रीय उपक्रमासंबंधं पयलीं परिशदेच्या व्यासपिठार विचार जावन तो मुखार गेला. प्रत्यक्षांतलो वावर हेर कोंकणी संघटणांनी केला आसलो तरी ते खातीर लागपी प्रेरणा, प्रोत्साहन, मार्गदर्शन, नैतीक बळगें, नेतृत्व तशें अनुयायी परिशदेच्या व्यासपिठान दिल्यात.

फाटलं सत्तार वर्सां सातत्यान कोंकणी मनशांक एका व्यासपिठार हाडून तांचेमदीं कोंकणीची जागृताय सतत जिवी दवरपाचें इतिहासीक कार्य करपी राष्ट्रीय पांवड्यावयली सक्रीय अशी ही एकमेव संस्था आसा. एक भास एक लिपि, एक साहित्त्य, एक समाज हें परिशदेचें ब्रीद आसा.

अखिल भारतीय कोंकणी परिशदेची आतामेरेनर्ची सत्तावीस अधिवेशनां :

स्थापना आनी पयलें अधिवेशन-

कारवार, ८-६ जुलय, १६३६

संस्थापक येवकार अध्यक्ष – श्री माधव मंजुनाथ शणै शानभाग,
अध्यक्ष – श्री. विश्वनाथ पांडुरंग प्रभू.

दुसरें अधिवेशन -

उड्डपी ३१ डिसेंबर, १६४०,

येवकार अध्यक्ष – डॉ. टी. एम. ए. पै,
अध्यक्ष– श्री जेरोम साल्ढाना.

तिसरें अधिवेशन-

मुंबय ४-५ एप्रील १६४२,

येवकार अध्यक्ष – श्री. वामन रघुनाथ वर्दे वालावलीकार ऊर्फ शणै गोंयबाब,
अध्यक्ष – प्रो. आर्मांद मिनेझीस

चवथे अधिवेशन-

मुंबय १६४१,

येवकार अध्यक्ष–रेव्हरंड डॉ. एच. ओ. मास्कारेन्हास,
अध्यक्ष – डॉ. एम. यू. मास्कारेन्हास,
उदघाटक – स्वामी आनंदाश्रमजी
(चित्रापूर मठाचे स्वामी).

पांचवें अधिवेशन-

मुंबय २३-२४ फेब्रुवारी १६५२,

येवकार अध्यक्ष – बा. भ. बोरकार ऊर्फ बाकीबाब बोरकार,
अध्यक्ष – डॉ. मारियान साल्ढाना,
उदघाटक – व्हालेरियान कार्डिनल ग्रासियत (मुंबयचे आर्चबिशप).

सवें अधिवेशन-

मुंबय २७-२८ एप्रील १६५७,

येवकार ध्यक्ष – श्री. रामचंद्र नारायण नायक,
अध्यक्ष – डॉ. सुमित्र मंगेश कत्रे,
उद्घाटक – आचार्य काकासायब कालेलकार,

सातवें अधिवेशन-

कारवार १६ से १६६०,

येवकार अध्यक्ष – अड. पी. एस. कामत,
अध्यक्ष – डॉ. बी. एम. सालेतोर,
उद्घाटक – श्री. द्वारकानाथतीर्थ
(पर्तगाळ मठाचे स्वामी).

आठवें अधिवेशन-

मडगांव-२६-२७ मे, १६६२,

(मुक्त गोंयांतलें पयलें अधिवेशन),
येवकार अध्यक्ष – श्री. रवींद्र केळेकार,
अध्यक्ष – डॉ. मनोहरराय सरदेसाय,
उद्घाटक – श्रीमती व्हायोलेट आल्वा
(राज्यसभा उपाध्यक्ष)

णववें अधिवेशन -

मुंबय २०-३० सप्टेंबर, १६६७

येवकार अध्यक्ष : मोंसिन्योर आयरिश फेर्नादीस
अध्यक्ष : श्री. बा. ब. बोरकार ऊर्फ बाकीबाब बोरकार
उद्घाटक : श्री. वसंतराव नाईक
(महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्री)

धावें अधिवेशन-

पणजी ६-१० फेब्रुवारी, १६७४

येवकार अध्यक्ष : श्री. अनंत नरसिंह नायक
(बाबू नायक)
अध्यक्ष : श्री. के. के. पै
उद्घाटक : डॉ. सुनितिकुमार चटर्जी
(साहित्य अकादेमीचे अध्यक्ष)

इकरावें अधिवेशन -

मंगळूर : २१-२२ फेब्रुवारी १९७६
येवकार अध्यक्ष : श्री. के. के. पै
अध्यक्ष : श्री. चंदकांत केणी
उदघाटक : श्रीरामकृष्ण मिशन मंगळूरचे स्वामी

बारावें अधिवेशन
कोची ११-१२ फेब्रुवारी १९७८
येवकार अध्यक्ष : डॉ. जे. ए. भट
अध्यक्ष : श्री. रवींद्र केळेकार
उदघाटक : श्री. के. के. एन्थनी (केरळचे मुख्यमंत्री)

तेरावें अधिवेशन -
मुंबय १२-१३ एप्रील, १९८०
येवकार अध्यक्ष : श्री. ए. जे. मार्तिरीश
अध्यक्ष : श्री. एन. पुरुषोत्तम मल्ल्या
उदघाटक : श्री. प्रतापसिंग राणे (गोंयचे मुख्यमंत्री)

चवदावें अधिवेशन-
पणजी २७-२८ फेब्रुवारी १९८२
येवकार अध्यक्ष : श्री. उदय भेंब्रे
अध्यक्ष : श्री. व्ही. जे. पी. साल्डाना
उदघाटक : डॉ. उमाशंकर जोशी
(साहित्य अकादेमीचे अध्यक्ष)

पंदरावें अधिवेशन -
बेंगळूर ११-१३ मे १९८४,
येवकार अध्यक्ष – श्री. एम. यू. हट्टीकुडूर,
अध्यक्ष – श्री नागेश सोंदे,
उदघाटक – श्री. ए. एन. बानर्जी
(कर्नाटकाचे राज्यपाल).

सोळावें अधिवेशन -
कोची २४-२५ मे, १९७६,
येवकार अध्यक्ष – श्री एन. पुरुषोत्तम मल्ल्या,
अध्यक्ष – श्री उदय भेंब्रे, उदघटक – श्रीमती एम कमलम (केरळच्यो सहकार मंत्री)

सतरावें अधिवेशन -
मणिपाल ६-८ जानेवारी १९८६,
येवकार अध्यक्ष – श्री. टी. रमेश यू पै,
अध्यक्ष – श्री. माधव विठ्ठल कामत,
उदघटक – श्री. एदुआर्द फालैर
(केंद्रीय अर्थ खात्याचे राज्यमंत्री)

अठरावें अधिवेशन-
रामनाथी (गोंय) १४-१६ डिसेंबर १९९०,
येवकार अध्यक्ष – श्री. माणिकराव गावणेकार,
अध्यक्ष – प्रो. आर. के. राव,
उदघटाक – डॉ. जुझे पेरैरा.

एकोणिसावें अधिवेशन -
मडगांव १६-१७ जानेवारी १९९३,
येवकार अध्यक्ष – श्री. दत्तराज साळगांवकर,
अध्यक्ष – श्री. जे. बी. मोरायश,
उदघटक – श्री. रवी नायक (गोंचये मुख्यमंत्री).

विसावें अधिवेशन -
शिरसी (कर्नाटक)-११-१२ फेब्रुवारी १९९५,
येवकार अध्यक्ष – श्री. व्ही. एस. सोंदे,
अध्यक्ष – डॉ. काशिनाथ महाले,
उदघटक – श्री. आर. व्ही. देशपांडे
(कर्नाटक राज्याचे मंत्री).

एकविसावें अधिवेशन -
मुंबय १८-१९ जानेवारी १९९७.
येवकार अध्यक्ष – श्री. एस. एफ. एक्स. पेरैरा,
अध्यक्ष – डॉ. विल्यम माडता.

बाविसावें अधिवेशन -
बेळगांव १५-१७ जानेवारी १९९९,
येवकार अध्यक्ष श्री. हरिश्चंद्र उर्फ चंद्रा पै,
अध्यक्ष – श्री पुंडलीक नारायण नायक,
उदघटक – श्री. रमेश कत्ती

(कर्नाटक राज्याचे साकार मंत्री)

तेविसावें अधिवेशन
मंगळूर २०-२१ एप्रील, २००२,
येवकार अध्यक्ष – मोंसिन्योर अलेक्झांडर एफ डिसोजा,
अध्यक्ष – डॉ. तानाजी हळर्णकार,
उद्घटक – श्री. रामनाथ राय (कर्नाटकाचे नुस्तेंमारी मंत्री)

चोविसावें अधिवेशन -
कालिकत (केरळ) १३-१५ फेब्रुवारी, २००४,
येवकार अध्यक्ष – श्री. के. सुरेंद्र राव,
उद्घटक – श्री. ओ. राजागोपाल
(केन्द्रीय संसदीय कार्यराज्यमंत्री),
अध्यक्ष – श्री. बस्ती वामन शणै.

पंचविसावें अधिवेशन -
पणजी (गोंय) १०-१२ फेब्रुवारी २००६,
येवकार अध्यक्ष – ॲड, शांताराम नायक,
उद्घटक – श्री. एस. सी. जामीर (गोंय राज्यपाल),
अध्यक्ष – श्री. पावल मोरायस.

सव्वीसावें अधिवेशन -
एरणाकुळम (कोच्ची) १-३ फेब्रेर २००८,
येवकार अध्यक्ष – टी. एम्. वी. शैणै,
उद्घटक – श्री. के. के. पै,
अध्यक्ष – ॲड शांताराम नायक

सत्तावीसावें अधिवेशन -
सांघळी (गोंय) ५-६ फेब्रेर २०१०,
येवकार अध्यक्ष – श्री. विश्वजीत राणे
(मा. भलायकी मंत्री, गोंय राज्य),
उद्घाटक – श्री. रवींद्र केळेकार,
अध्यक्ष – डॉ. एच्. शांताराम.

अठ्ठाविसावें अधिवेशन
मुंबय, १७-१९ फेब्रुवारी २०१२
अध्यक्ष – श्री. अरवींद भाटीकार

अखिल भारतीय कोंकणी परिशदेची आजमेरेन जाल्लीं अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य संमेलनां

पयलें संमेलन -
श्री दामोदर विद्याभुवन मडगांव,
२३ जून, १९६८
येवकार अध्यक्ष – श्री. बाकीबाब बोरकार,
अध्यक्ष – श्री. लक्ष्मणराव संरदेसाय.

दुसरें संमेलन -
क्रिश्त रेय सभाघर, पणजी,
१५, १६ नोव्हेंबर १९६९,
उद्घाटक – श्री. गोपाळ आ. कामत,
येवकार अध्यक्ष – फा. मोरेन द् सौज,
अध्यक्ष – श्री. रवींद्र केळेकार,
कार्यदर्शी – श्री. नागेश करमली.

तिसरें संमेलन -
श्री दामोदर विद्याभुवन मडगांव,
१५, १६ फेब्रुवारी १९७५,
उद्घाटक – श्री. देवराय बैंदुर,
येवकार अध्यक्ष – श्री. एवाग्रियु जॉर्ज,
अध्यक्ष – श्री. उदय भेंब्रे,
कार्याध्यक्ष – प्रो. शांताराम हेदे,
कार्यदर्शी – श्री. पंडुलीक नायक.

चवथें संमेलन -
मोसिन्योर दाल्गादु नगर म्हापशें,
७, ८, में १९७७,
उद्घाटक – डॉ. नामवर सिंग,
येवकार अध्यक्षक – श्री. पां. पु. शिरोडकार,
अध्यक्ष – फा. आंतोनियु पेरैर,

कार्याध्यक्ष – श्री. सुरेश आमोणकार,
कार्यदर्शी – श्री. शंकर भांडारी.

पांचवें संमेलन -
गोमंत विद्या निकेतन मडगांव,
२, ३, ४ मार्च, १६७६,
उदघाटक – श्री. भवानीप्रसाद मिश्र,
येवकार अध्यक्ष – श्री. फेलिसियु कार्दोज,
अध्यक्ष – श्री. श्रीपाद रघुनाथ देसाय,
कार्याध्यक्ष – श्री. पांडुरंग पै फोंडेकार,
कार्यदर्शी – श्री. बाबय वेरेंकार, श्री. सोतेर बार्रेत,

सवें संमेलन -
माधव मंजुनाथ शानभाग नगर,
काणकोण १४, १५ फेब्रुवारी, १६७१,
उदघाटक – श्री. माधव विठ्ठल कामत,
येवकार अध्यक्ष – प्रा. आल्वारू रेनात मेंदीश,
अध्यक्ष – प्रो. शांताराम हेदे,
कार्याध्यक्ष – श्री. रमेश कोमरपंत,
कार्यदर्शी – श्री. अनील पै, श्री. मार्टीन मिनीन फेर्नांदीश.

सातवें संमेलन -
कृष्णदास शामा नगर, कुडचडे,
११, २० फेब्रुवारी, १६८३,
उदघाटक – श्रीमती मागरिट आल्वा,
येवकार अध्यक्ष – श्री. नागेश करमली,
अध्यक्ष – फा. स्वामी सुप्रीय,
कार्याध्यक्ष – श्री. उल्हास बुयांव,
कार्यदर्शी – श्री. विठ्ठल आवदियेंकार,
श्री. आनंद मंगेश नायक.

आठवें संमेलन -
दादा वैद्य नगर, रामनाथी
११ख १२ मे, १६८५
उदघाटक – श्री. रामानंद सागर,
येवकार अध्यक्ष – श्री. एन्. शिवदास,
अध्यक्ष – श्री. दामोदर मावजो,
कार्यदर्शी – श्री. श्रीधर वेरेंकार.

णववें संमेलन -
शणै गोंयबाब नगर, सांखळी
१६, १७ मे १६८६,
उदघाटक – प्रा. एम्. तोंबी सिंग,
येवकार अध्यक्ष – प्रा. अरूण साखरदांडे,
अध्यक्ष चा. क्रा. द. कोश्त,
कार्याध्यक्ष – श्री. सदानंद काणेकार,
कार्यदर्शी – श्री. सदानंद तेंडुलकार.

धावें संमेलन -
मुरारबा पेडणेकार नगर, पेडणें,
१७, १८ फेब्रुवारी १६६०ख
उदघाटक – फा. आंतोनियु पेरैर,
येवकार अध्यक्ष – श्रीमती कमल पार्सेकार,
अध्यक्ष – श्री. गुरुनाथ केळेकार,
कार्याध्यक्ष – श्री. सुहास पार्सेकार,
कार्यदर्शी – श्री. प्रकाश तळवणेकार.

इकरावें संमेलन -
माधव मंजुनाथ शानभाग नगर, कारवार,
४, ५ फेब्रुवारी, १६६०,
उदघाटक – डॉ. शिवराम कारंत,
येवकार अध्यक्ष – श्रीमती आशा पालनकार,
अध्यक्ष – श्री. एडवीन जे. एफ. डिसौझा,
कार्याध्यक्ष – श्री. पुरुषात्तम देसाय,
कार्यदर्शी – श्री. दिपक गांवकार.

बारावें संमेलन -
गुंडू सिताराम आमोणकार नगर, म्हापशें,
५, ६ मार्च १६६४
उदघाटक – फा. मोरेन द् सौज,
येवकार अध्यक्ष – श्री. तोमाझीन कार्दोक्ष,

अध्यक्ष – श्री. वी. वी. वाळिगा,
कार्याध्यक्ष – डॉ. तानाजी हळर्णकार,
कार्यदर्शी – श्री. भरत नायक.

तेरावें संमेलन -
सुभाषचंद्र प्रभू नगर, कोच्ची (केरळ),
२५, २६ ऑगस्त, १९९९,
उद्‌घाटक – श्री. एम्. टी. वासुदेवन नायर,
येवकार अध्यक्ष – श्री. गोकुळदास प्रभू,
अध्यक्ष – श्री. नागेश करमली,
कार्यादर्शी – श्री. सुरेश ए. शणै.

चौदावें संमेलन -
प्रो. लुर्दीन रॉद्रीगीश नगर, मडगांव,
२३, २४, २५ मार्च, १९९८,
उद्‌घाटक – श्री भास्कर चंदावरकार,
येवकार अध्यक्ष – श्री. अवधूत तिंबलो,
अध्यक्ष – श्रीमती शीला कोळंबकार,
कार्याध्यक्ष – श्री. राजू नायक,
कार्यदर्शी – श्री. श्रीधर कामत.

पंदरावें संमेलन -
प्रो. जॉकी आंतोन फेर्नांडीस नगर पर्वरी
२१, २२ एप्रील, २००१,
उद्‌घाटक – श्री. गुलजार,
येवकार अध्यक्ष – श्री. भरत नायक,
अध्यक्ष श्री. गोकुळदास प्रभू,
कार्याध्यक्ष – श्री. तुकराम शेट,
कार्यदर्शी – श्री. शशीकांत पुनाजी.

सोळावें संमेलन -
आचार्य धर्मानंद कोसंबी नगर, वास्को,
१०, ११ मे २००३,
उद्‌घाटक – मेजर जनरल हिंमतसिंग गील,
येवकार अध्यक्ष – श्री. प्रकाश पाडगांवकार,
अध्यक्ष – श्री. पी. जी. कामत,
कार्याध्यक्ष – श्री. गोविंद खरगटे,
कार्यदर्शी – श्री. पद्‌मनाभ आमोणकार

सतरावें संमेलन -
कुमठा, कर्नाटक,
११, २० फेब्रुवारी २००५,
उद्‌घाटक – डॉ. चंद्रशेखर कंबार,
येवकार अध्यक्ष – श्री. मुरलीधर प्रभू,
अध्यक्ष – श्री. महाबळेश्वर सैल,
कार्याध्यक्ष – श्री. नागेश वि. शानभाग,

अठारावें संमेलन -
कुडचड़े - गोंय
४, ५, ६ मे २००७,
उद्‌घाटक – श्री. दिनेश मिश्रा,
येवकार अध्यक्ष – श्री. अशोक कामत,
अध्यक्ष – श्री. जे. बी. सिक्केरा,
कार्याध्यक्ष – श्री. दिनेश मणेरकार,
कार्यदर्शी – श्री. एकनाथ नायक.

इकणुसावें संमेलन -
कुंदापुर - कर्नाटक,
७, ८ फेब्रुवारी २००६
उद्‌घाटक – श्री. दयानंद पै,
येवकार अध्यक्ष – डॉ. एच्. शांताराम,
अध्यक्ष – श्री. रमेश वेळुस्कार,
कार्याध्यक्ष – श्री. यू. एस्. शेणै.

विसावें संमेलन -
सदाशिव गड - कारवार
२९, ३० एप्रील, १ मे २०११
येवकार अध्यक्ष :
अध्यक्ष : श्रीमती मिना काकोडकार

-डॉ. तानाजी हळर्णकार

आन्तर भारती

कोंकणी भाषा

सुनामी

आयलीं गो आयलीं गो सुनामी ल्हारां आयलीं गो
धांव गो धांव गो प्राण धेवन धांव गो
मळार ऊंच मळ गो मळार ऊच पाळ गो
मळय मळय मळय पाळय एक जालें गो

ल्हारां उंचार मनीश गो मनशा मत्यार ल्हारां गो
दोळ्यां, नांकांत, तोण्णांत, कानांत भरले मुगो उदक
ल्हान, व्होड, भुरगें, म्हांतरें सग्ग जालीं बलि गो
माया ना, दया ना, मारून व्हेल्लीं ल्हारानी गो

एक आयलें तडी गो एक पळलें रानांत गो
एक गेलें कालीघाट एक आयलें अल्पळे गो
मेळलें एकल्याक पिड्य पोंद, गेल्ले एकल्याक हात पाय
गोंवटो गेल्लो थोंटो जालो हाडून घालो तडी गो

कुणबी ना, खारो ना, नायतो ना तिप्टो ना
भेद ना भाव ना सग्ग जाले एक गो
देव सत्य लोक मिथ्या हाचें भान् जालें गो
शक्तिवंत मेलो गो शक्तिशून्य उरलो गो

सुनामी हो देवालो खेळ मनुज कितें करतलो गो?
हात पाय मारून उदकांत प्राण तो सोडतलो गो
देव दुश्ट ? न्हय मनशाचीं कर्म दुश्ट जालीं गो
मारचें, मरचें, रक्त पिवंचें हेंच सहज जालें गो

होच संदेश सुनामीचो जीव मात सत्य गो
आयलीं गो आयलीं गो सुनामी ल्हारां आयलीं गो

हिन्दी अनुवाद

सुनामी

आईं री आईं री देख सुनामी लहरें आईं री
भाग री भाग री जल्दी प्राणों को ले भाग री
लहरों पर हैं मैदान, मैदानों पर हैं लहरें
लहरें मैदान, मैदान लहरें दोनों बन एक एक री

लहरों पर है मानव, मानव पर हैं लहरें
आँख, नाक, मुँह, कानों में भर आया है पानी
छोटा–बड़ा, बच्चा–बूढ़ा, हो गए सब बलि पानी में
नहीं प्रेम न दया कहीं भी सब ले भागी लहरें री

एक आ गया तट पर री, एक पड़ गया वन में री
एक चला कलीघाट एक आ गया आलप्पी
लगा किसी को पेंदा हाथ, किसी के चले गए दो हाथ
गला टूट कर लंगडाया आ पहुँचा वह तट पर री

हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, कुणबी एवं ब्राह्मण
भेद नहीं भाव एक ही सभी बन गये एकमन
ईश्वर सत्य, मिथ्या लोक, ज्ञान हो गया अतुल यहाँ
मर गए शक्तिवंत सब, रह गए शक्तिहीन यहाँ

सुनामी है ईश्वर का खेल मानव क्या कर सकता है?
हाथ पैर पटक पटक कर लहरों में मर जाता है
ईश्वर दुष्ट? नहीं, मानव के कर्म दुष्ट बन गये यहाँ
मरना, मारना, खून बहाना, यही सहज बन गया यहाँ

सुनामी का है यह संदेश, देह निराधार, प्राण सत्य
आईं री आईं री देख सुनामी लहरें आईं री

सम्पर्क : Dr. L. Suneetha Bai
Retd. Professor (Hindi), "Vrindavan" (पोस्ट बॉक्स 3101) Kakkanand P.O. Kochi-682030, (Kerala)
दूरभाष : 0484-2422350, मोबाईल : 098460-48428

नागरी लिपि का प्रयोग करें रोमन का मोह छोड़ें

(श्री प्रभु जोशी, वरिष्ठ पत्रकार इन्दौर के विचार)

भाषा की हत्या के एक योजनाकार के अगले और अंतिम चरण को कहा है कि अब इसके बाद आता है फायनल असाल्ट ऑन हिन्दी। बनाम **हिन्दी को अखबार में नागरी–लिपि के बजाय रोमन–लिपि में छापने की शुरूआत करना। अर्थात् हिन्दी पर अंतिम प्राणघातक प्रहार। बस हिन्दी की हो गयी अंत्येष्टि।** चूंकि हिन्दी को रोमन में लिख–पढ़कर बड़ी होने वाली पीढ़ी में देवनागरी में लिखी हिन्दी और छपी पुस्तकें नितांत अपठनीय हो जायेंगी। इसे ही कहते हैं भाषा को बोली में बदलना बनाम उसका **क्रियो–लीकरण** करना। अर्थात् **किसी भाषा से उसके व्याकरण और रोजमर्रा की शब्दावली को छीन लिया जाना। और बाद में इसके रोमन में छापकर, उसे डि–क्रियोल करना। या उसे उसकी मूल लिपि बदलकर रोमन में छापना।** अब यह काम भारत में होने लगा है, जिसकी शुरूआत **कोंकणी को रोमन लिपि में लिखे जाने के निर्णय से शुरू** हो चुका है। इसी युक्ति से **गुयाना में,** जहाँ 43 प्रतिशत लोग हिन्दी बोलते थे, वहाँ हिन्दी को इसी तरह से डि–क्रियोल कर दिया गया और अब **वहाँ देवनागरी की जगह रोमन–लिपि को चला दिया गया है,** जिसके कारण हिन्दी की सैकड़ों किताबें नितांत अपठनीय होने जा रही है। यही काम त्रिनीदाद में इसी षड्यंत्र के जरिये किया गया है।

(डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, अध्यक्ष, अध्ययन शाला) विक्रम विश्व विद्यालय, उज्जैन, तथा डा. रामस्वप चतुर्वेदी हिन्दी विभागाध्यक्ष, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विचार)

दृश्य–श्रव्य माध्यमों में भी हिन्दी का यह सामर्थ्य लगातार प्रकट हो रहा है। समकालीन परिदृश्य में एक मौखिक भाषा के रूप में सूचना, मनोरंजन और विज्ञापन की पहुंच बढ़ाने में हिन्दी कारगर सिद्ध हो रही है। **लेकिन उसके लिखित रूप के सामने आंज कई चुनौतियां मौजूद हैं। विज्ञापन और एमएमएस हो या टीवी चैनलों पर दिखाये जाने वाले शीर्षक कई बार उनकी भाषा तो हिन्दी ही होती है, हिन्तु लिपि रोमन। यही बात पंजाबी, बंगला आदि भाषाओं के मीडिया पर भी लागू होती है,** ऐसे में लिखित भाषा की अपनी पहचान को बरकरार रखने की चुनौती हमारे सामने है।

आज यदि हम दृश्य–श्रव्य जनसंचार माध्यमों के बीच घिरे हुए हैं तो **उसने बड़ा नुकसान भाषा के लिखित रूप को पहुंचाया है।** अब अच्छे से अच्छे उपन्यास और कहानियाँ पढ़े कम जाते हैं, उन्हें दृश्य बनाकर पेश जो किया जा रहा है। **बकौल रामवरूप चतुर्वेदी–टेलीविजन में, फिल्म में या कॉमिक में देखकर आत्मसात करने की यह जो प्रवृत्ति है इसके वर्णमाला के प्रति, पढ़ने के लिए एक प्रकार की अरूचि पैदा हो रही है और लोगों को शक है कि धीरे–धीरे वर्तनी (स्पैलिंग) का स्तर भी लगातार गिरता जा रहा है।**

समागम पत्रिका भोपाल से साभार

9वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन जोहन्सवर्ग (दक्षिण अफ्रीका) में सम्पन्न

सूचना प्रौद्योगिकी - देवनागरी लिपि और हिन्दी का सामर्थ्य विषय पर गहन और उपयोगी विचार विमर्श

9वां विश्व हिंदी सम्मेलन दिनांक 22 से 24 सितम्बर 2012 तक जोहन्सवर्ग (साऊथ अफ्रीका) में विश्व के अनेक देशों से हजारों की संख्या में पधारे हिंदी प्रेमियों, विद्वानों के बीच बड़े आकर्षक और गरिमा पूर्ण ढंग से सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में हिंदी से संबंधित कई संगोष्ठियां आयोजित की गई। इन में से एक संगोष्ठी **"सूचना प्रौद्योगिकीः देवनागरी लिपि और हिंदी का सामर्थ"** विषय पर थी। नेसलन मंडेला सभागार के नीतिकक्ष में आयोजित इस गोष्ठी में "सूचना प्रौद्योगिकी और देवनागरी लिपि के अनेक विशेषज्ञों और भारत के कई संसद सदस्यों ने भाग लिया"। **डॉ. ओम विकास** ने अपने बीज वक्तव्य में भाषा विषयक मानकीकरण में पणिनी सारिणी को ध्यान में रखते हुए 'फोनीकोड' पर कार्य किए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने सरकारी संस्थानों द्वारा विकसित फॉटों में से कम से कम 10-फॉटों को आम लोगों के लिए व्यावसायिक उपयोग हेतु जारी करने की मांग की।

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के एसोसिएट प्रोफेसर श्री जगदीप सिंह डांगी ने "सक्षम" नाम से अपने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित हिंदी वर्तनी-परीक्षक की खूबियों के बारे में जानकारी दी और प्रखर देवनागरी फॉट परिवर्तक, यूनीदेव, शब्दज्ञान, प्रखर देवनागरी लिपिक, आईब्राऊजर, शब्द अनुवादक, शब्द संग्राहक के संबंध में श्रोताओं को अवगत कराया।

मुख्य अतिथि के रूप में भारत के संसद सदस्य, श्री रघुवंश प्रसाद सिंह का कहना था कि भाषा में एक रूपता हो और आम आदमी को ध्यान में रखकर सहज तकनीकी उपकरण विकसित किए जाएं। भारत सरकार की एक संस्था सी-डेक, के वैज्ञानिक डॉ. महेश कुलकर्णी ने संस्थान द्वारा विकसित उपकरणों के बारे में जानकारी दी। संसद सदस्य अल्का बलराम क्षत्रिय ने देवनागरी लिपि के राष्ट्रीय महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए और इसे देश की एकता के लिए आवश्यक बताया। इस गोष्ठी के अध्यक्ष थे-केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष डॉ. अशोक चक्रधर। उन्होंने कम्प्यूटर पर देवनागरी लिपि के अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया और कहा कि पहले हम फोनेटिक की-बोर्ड की सहायता से रोमन वर्णमाला पर टाइप द्वारा देवनागरी लिपि के प्रयोग की बात करते थे, किंतु अब समय आ गया है कि हमें सीधे देवनागरी की-बोर्ड पर ही हिंदी में टाइप करना चाहिए।

1. इस गोष्ठी का संचालन प्रसिद्ध विद्वान और ई0 पत्रिका प्रभासाक्षी के सम्पादक डॉ. बालेन्दु दाधीच ने किया और हिंदी में कम्प्यूटर के प्रयोग पर विशेष बल दिया।

2. संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए नागरी लिपि परिषद्, नई दिल्ली के महामंत्री

और नागरी-संगम पत्रिका के प्रधान सम्पादक डॉ. परमानंद पांचाल ने देवनागरी लिपि के राष्ट्रीय महत्व पर बल देते हुए कहा कि देवनागरी लिपि विश्व की एक सबसे अधिक वैज्ञानिक और ध्वन्यात्मक लिपि है, जिसमें विश्वलिपि बनने की पूर्ण क्षमता है। उन्होंने विश्व की अन्य प्रसिद्ध लिपियों जैसे-रोमन, अरेबिक, तथा चीनी परिवार की लिपियों से तुलना करते हुए नागरी लिपि को विश्व की श्रेष्ठतम लिपि बताया। इसे भारत की राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक बताते हुए इसके समर्थन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, विनोबा भावे, न्यायमूर्ति कृष्ण स्वामी अय्यर और जस्टिस शारदा चरण मित्र प्रभृति महानुभावों के प्रयासों की चर्चा की।

3. डॉ. परमानन्द पांचालन ने कहा कि औद्योगिक क्रांति क बाद सूचना क्रांति ही विश्व की सबसे बड़ी क्रांति है। हिन्दी को सूचना प्रौद्योगिकी को मजबूत करने की आवश्यकता है। हिंदी का **संकट यह है कि हिंदी विश्व में अधिकांश लोगों द्वारा बोली तो जा रही है,** किंतु लिखी नहीं जा रही है। हिंदी के सामने टाइपिंग की बहुत बड़ी समस्या है। इसके की-बोर्ड में एकरूपता होनी चाहिए। उन्होंने 17 फरवरी 2012 के भारत सरकार के आदेशों पर भी हिंदी विशेषज्ञों का ध्यान दिलाया जिसमें कहा गया है कि भारत सरकार के कार्यालयों में प्रयोग में आने-वाले कम्प्यूटर द्विभाषिक की-बोर्ड वाले ही खरीदे जाएं। उन पर इन-स्क्रिप्ट की-बोर्ड ले-आऊट अवश्य होने चाहिए। उन्होंने बताया कि दिनांक एक अगस्त 2012 से भारत सरकार में होने वाली लिपिकरण भर्ती के लिए टाइपिंग परीक्षा इन-स्क्रिप्ट की-बोर्ड पर ही ली जाएंगी। (रेमिंगटन आदि पर नहीं)

4. डॉ. पांचाल ने संसद सदस्य, जस्टिस डॉ. एम. रामा जोइस द्वारा संसद में रखे गए उस बिल का भी उल्लेख किया, जिसमें कहा गया है कि भारत के प्रत्येक नागरिक के लिए स्कूल स्तर पर देवनागरी लिपि का ज्ञान अनिवार्य होना चाहिए"। इससे देश के सभी नागरिकों को नागरी लिपि का ज्ञान हो जाएगा जो देश की एकता में सहायक होगा।

5. डॉ. परमानंद पांचाल ने देवनागरी लिपि की कई सौ वर्ष पूर्व भारतव्यापी लोकप्रियता का उल्लेख करते हुए श्री एन. पुरुषोत्तम माल्या (कोचीन) के उस लेख का उद्धरण दिया,जिसमें कोंकणी भाषा के लिए 1665 ई0 में ही नागरी लिपि का प्रयोग किया गया था। उन्होंने खेद व्यक्त किया कि दिल्ली के एक नामचीन विश्वविद्यालय के एक हिंदी प्राध्यापक आज भी रोमन लिपि की वकालत करते देख जा सकते हैं।

6. डॉ. पांचाल ने देवनागरी लिपि के मानकीकरण को भारतीय मानक ब्यूरो (I.S.I.) द्वारा मानक रूप दिए जने का भी उल्लेख किया, जिसमें देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी के मानकीकरण को दिनांक 5.10.2012 से भारतीय मानक के रूप में मान्यता दे दी गई है, इसलिए आवश्यक है कि अब उसी मानक रूप का प्रयोग किया जाए। उन्होंने पंडित जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में हुए सन् 1961 में मुख्यमंत्री सम्मेलन का भी उल्लेख किया, जिसमें कहा गया था कि "भारत की सभी भाषाओं के लिए एक लिपि का होना वांछनीय है। नागरी लिपि भी भाषाओं में मेल-जोल बढ़ाने के लिए एक

सशक्त कड़ी बन सकेगी"।

7. अतः में डॉ. पांचाल ने महात्मा गांधी द्वारा सन् 1937 में दिए गए उस वक्तव्य की याद दिलाई जिसमें उन्होंने कहा था कि "न तो उर्दू और रोमन न रोमन में ही वह पूर्णताः और ध्वन्यात्मक क्षमता है, जो देवनागरी लिपि में है। अनेक लिपियों के ज्ञान का बोझ अनावश्यक है, जिससे आसानी से बचा जा सकता है।" आचार्य विनोबा भावे द्वारा स्थापित नागरी लिपि परिषद् देश-विदेश में आचार्य लिपि के प्रचार-प्रसार हेतु निरंतर कार्य कर रही है।

8. इस संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए संसद सदस्य सुश्री अल्का बलराम ने देश की एकता के लिए देवनागरी लिपि के प्रयोग पर विशेष बल दिया और इसे राष्ट्र हित में अपनाने का परामर्श दिया।

Shri T.L. Kapadia Public Charitable Trust

Heartly welcomes you to stay at their

AMRAT ATITHI GRUH

Kapadia Market, Kandaswamy Lane, Near to
Hanuman Vyamshala, Sultan Bazar,
Hyderabad-500 0195. (A.P.)
Phone : 475489 & 4754972

* In the Heart of City.............
* And yet Calm and quite.............
* Advance Booking Facility available.............
* Bombay Thali.............
* Homely Atmosphere.............
* Latest New Building with Modern Facilities with receiption Passenger lift, T.V. etc.............
* A/C. Room Available.............
* Hall available for small get together, marriages, conferences etc.............
* And even then lowest Service Charges only...........

गांधी ज्ञान मंदिर

योग केन्द्र कोटि, हैदराबाद – 500 095 टेलीफोन नं० 040-66735331, 24755331
www.yogasimplified.com, Email : yoganand4u@yahoo.co.in

हमारा परिचय

शिलान्यास : भारत रत्न श्री खान अब्दुल गफ्फार खान 'सीमांत गांधी' के कर–कमलों द्वारा दिनांक 27 दिसम्बर, 1969 को सम्पन्न।

उद्घाटन : गांधी जयन्ती 2 अक्टूबर, 1974 के अवसर पर डॉ. श्रीमन नारायणजी, चेयरमेन, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली के कर–कमलों द्वारा।

हमारी अन्य विशेषताएं • 38 वर्षों का विश्व रिकार्ड, 'बिना अवकाश' निरंतर 1974 से योग कक्षाएं। • प्रतिदिन प्रातः 4.30 बजे से रात्रि 8 बजे तक 9 बैच। • प्रतिदन 500 व्यक्तियों द्वारा योगाभ्यास, कुल संख्या 4 लाख। • विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकें। • विभिन्न प्रकार के रोगों की चिकित्सा/उपचार/जटिल समस्याओं का समाधान/नियत्रण/रोकथाम। • रविवारीय विशेष स्वास्थ्य सेमिनारों में सभी का स्वागत।

अन्य गतिविधियां • गांधी संग्रहालय व फोटो गैलरी, • गांधी किताब घर, • कस्तूरबा प्राकृतिक उपचार केन्द्र, • गाधी ज्ञान मंदिर आडोटोरियम।

कमल नारायण अग्रवाल
एम.डी.ट्रस्टी : एसवीपी. ट्रस्ट

धीरजलाल टी कपाड़िया
चेयरमैंन एसवीपी. ट्रस्ट

सुरेन्द्र लुणिया
ट्रस्टी व महामंत्री

डॉ. प्रवीण कपाडिया
निदेशक योग

समाचार सूचना

★ संस्कृत बनेगी नासा की भाषा

विदेशी उपयोग में अपनी भाषा की मदद देने से उन विद्वानों ने इंकार कर दिया था। इसके बाद कई अन्य वैज्ञानिक पहलू समझते हुए अमेरिका ने वहां नर्सरी क्लास से ही बच्चों को संस्कृत की शिक्षा देना शुरू कर दिया है। नासा के 'मिशन संस्कृत' की पुष्टि उसकी वेबसाइट भी करती है। उसमें स्पष्ट लिखा है कि 20 साल से नासा संस्कृत पर काफी पैसा और मेहनत कर चुकी है। साथ ही इसके कंम्प्यूटर प्रयोग के लिए सर्वश्रेष्ठ भाषा का भी उल्लेख है।

अमेरिका में स्पीच थैरेपी भी : आगरा : वैज्ञानिकों का मानना है कि संस्कृत पढ़ने से गणित और विज्ञान की शिक्षा में आसानी होती है, क्योंकि इसके पढ़ने से मन में एकाग्रता आती है। वर्णमाला भी वैज्ञानिक है। इसके उच्चारण मात्र से ही गले का स्वर स्पष्ट होता है।

रचनात्मक और कल्पना शक्ति को बढ़ावा मिलता है। स्मरण शक्ति के लिए भी संस्कृत काफी कारगर है। मिश्रा ने बताया कि कॉल सेंटर में कार्य करने वाले युवक-युवती भी संस्कृत का उच्चारण करके अपनी वाणी को शुद्ध कर रहे हैं। न्यूज रीडर, फिल्म और थियेटर के आर्टिस्ट के लिए यह एक उपचार साबित हो रहा है। अमेरिका में संस्कृत को स्पीच थेरेपी के रूप में स्वीकृति मिल चुकी है।

★ अमीर खुसरो खड़ी बोली के प्रथम कवि : प्रो. आरिफ

जश्न-ए-खुसरो में सूफी कलाम की शानदार प्रस्तुति

जबलपुर, 8 सितम्बर। 13वीं शताब्दी के महान शायर महाकवि अमीर खुसरो खड़ी बोली के प्रथम कवि हैं। खुसरो ने 'हिन्दवी' में काव्य रचना की। उनकी काव्योक्तियाँ आज भी जनमानस में लोकप्रिय हैं। तदाशय के उद्‌गार मानकुंवरबाई महाविद्यालय में उर्दू विभागाध्यक्ष प्रो. आरिफ ने गत रात्रि गढ़ा मुजावर मुहल्ला में अमीर खुसरो साहित्य मिति एवं जमायते कादरी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित जश्न-ए-खुसरो में प्रमुख वक्ता के रूप में व्यक्त किए। प्रो. आरिफ ने खुसरो की संगीत साधना पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने अनेक राग-रागनियों का विकास किया। हिन्दी साहित्य में अमीर खुसरो का योगदान अवस्मिरणीय है।

मानकुंवरबाई महाविद्यालय की हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. ऊषा दुबे ने अमीर खुसरों के काव्यांशों की मीमांसा करते हुए उन्हें 13वीं शताब्दी का महान शायर एवं महाकवि निरूपित किया। सूफीवाद तसव्वुफ के अध्येता डॉ. महमूद शेख ने अमीर खुसरो के सूफी काव्य पर प्रकाश डाला। पत्रकार सरदार ए. कादरी ने खुसरो को राष्ट्रीय एकता एवं सांस्कृतिक समन्वय का प्रणेता निरूपित किया।

जश्न-ए-खुसरो में युवा गायक बासिद अली

क़ादरी ने अमीर खुसरो के मशहूर सूफी कलाम 'छाप तिलक सब छीनी मोसे नैना मिलाके" की शानदार प्रस्तुति की। मैराज जबलपुरी, डॉ. मकबूल कादरी, शौकत अली, हाजी मुस्तफा खान ने भी सूफी कलाम पेश किये। जल्से में मदनमहल दरगाह के मुतवल्ली हाजी मुश्ताक अली कादरी, बुजुर्ग बाबा आशिक अली कादरी, हाजी सूफी लाल कादरी, मौलाना अल्हाज सैयद इकबाल अहमद रब्बानी, सैयद लियाकत अली, सज्जनादानशीन बाबर खाँ बंदानवाजी, सूफी सत्तार सुल्तानी, जव्वार हुसैन जैदी सहित बड़ी तादाद में हाजिरीन उपस्थित थे। मुबारक कादरी, महफूज अली कादरी ने मेहमान हजरात की दस्तारबंदी फरमाई। सलातो सलाम के साथ जल्से का समापन हुआ।

★ बाबा कानपुरी के सम्मान में भव्य काव्य संध्या सम्पन्न

"वोजब भी मौन हो जाता है बाबा"

हैदराबाद : 15 अक्टूबर 2012, प्रख्यात साहित्यकार, कवि तथा हास्य व्यंग्य के सशक्त हस्ताक्षर, नोएडा दिल्ली से पधारे कवि बाबा कानपुरी के सम्मान में आचार्य श्री चन्द्र कविता महाविद्यालय एवं शोध संस्थान के तत्वावधान में निर्वाण अखाड़ा, पुराना पुल के प्रांगण में काव्य संध्या का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ कवि नरेन्द्र राय नरेन ने की।

काव्य पाठ के क्रम में अतिथि कवि बाबा कानपुरी को बीच-बीच में कई बार सुना गया। उन्होंने घनाक्षरी, कुण्डलियाँ, गीत, ग़ज़ल के माध्यम से विभिन्न रसों एवं शैलियों में काव्य पाठ कर प्रबुद्ध श्रोताओं से वाहवाही हासिल की। 'खादी' शीर्षक कविता की ये पंक्तियाँ खूब सराही गयीं - "बाबा कवि बर्राय, चढ़ी जो तन में बादी। उसे छुपा लेती है यह बापू की खादी"। उनकी गज़ल के हर शेर पर दाद मिली। खास कर इन पंक्तियों पर - "कभी मैं बोलता हूँ उसमें छुपकर कभी वो मुझमें छुपकर बोलता है। वो जब भी मौन हो जाता है 'बाबा'। ये धरती और अम्बर बोलता है।"

इस अवसर पर सम्मानित अतिथियों में बिशन लाल संघी, डॉ0 सुनील उपाध्याय, पृथ्वीराज सिह, दुर्गा प्रसाद सिंह, श्रीकान्त पाण्डेय, श्याम सुन्दर शर्मा, श्याम लाल यादव, कल्याण प्रसाद जायसवाल आदि श्रोता उपस्थित थे। कवि बेणु गोपाल भट्टण के धन्यवाद ज्ञान के साथ देर रात स्वादिष्ट जलपान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

प्रस्तुति - डॉ0 बिन्दू जी महाराज
(उदासीन अखाड़ा-हैदराबाद)

★ अमेरिका के येल विश्व विद्यालय में हिन्दी में परिचर्चा

यह हिन्दी की विश्व में बढ़ती लोकप्रियता का संकेत ही है कि अमेरिका के येल विश्वविद्यालय में श्री बिखिल सूद के प्रयासों से हिन्दी में प्रतिवर्ष एक विशाल परिचर्चा का आयोजन किया जाता है जिसमें अमेरिका के अनेक विश्व विद्यालय के छात्र और प्राध्यापक बड़ी रूचि के साथ भाग लेते हैं और हिन्दी भाषा का भी प्रयोग करते हैं।

इस परिचर्या में इस वर्ष अमेरिका के येल, हावर्ड यूनि0 प्रिसटोन, कोलम्बिया, पेन्सिलीवेनिया, न्यूयार्क वि0 वि0 कोर्नेल, वेलेजलि कालेज, यू.

सी.एल.ए. वेल्सियन वि0 वि0 तथा आस्टीन के टैक्सास वि0 वि0 जैसे प्रमुख वि. विद्यालयों के स्नातक और परास्नातक स्तर के छात्र और प्रोफेसर्स भाग लेंगे।

इस परिचर्या का उद्देश्य विश्व की महत्वपूर्ण विषयों पर बौद्धिक विचारों के अभिव्यक्ति और विनियम का मंच तैयार करता है। इसका उद्देश्य विचार है, व्याकरण और शब्द सामर्थ्य का, परीक्षण नहीं।

इस वर्ष 2012 का विषय होगा – हायर एज्युकेशन इज़ नार वर्थ इट।

(टाइम्स ऑफ इंडिया से साभार)

★ हिंदी विश्वविद्यालय

मध्य प्रदेश के पहले हिंदी विश्वविद्यालय के लिए भोपाल में विदिशा रोड पर पचास एकड़ भूमि चिन्हित की गई है। विश्वविद्यालय की ओर से हिंदी में शिक्षा का 'दृष्टि पत्र' तैयार किया जा चुका है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में यहां हुई बैठक में यह जानकारी दी गई। बैठक में हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलपति मोहनलाल छीपा और मुख्य सचिव आर परशुराम भी मौजूद थे।

चौहान ने बैठक में कहा कि हिंदी विश्वविद्यालय अपनी तरह का अनूठा विश्वविद्यालय बने और यहां विज्ञान व प्रौद्योगिकी के विषयों की पढ़ाई हिंदी में हो। उन्होंने विश्वविद्यालय के भवन के लिए नियोजन पलान -बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मातृभाषा में प्रतिभा की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति होती है। बैठक में बताया गया कि विश्वविद्यालय में सभी विषयों की शिक्षा हिंदी में दी जाएगी। इसके लिए दो चरण में पाठ्यक्रम तैयार किए जाएंगे। विश्वविद्यालय हिंदी के विद्वानों का सम्मेलन भी आयोजित करेगा।

★ डॉ. मो. दि. पराड़कर नहीं रहे

मुम्बई हिंदी विद्यापीठ के कुलपति डॉ. मो. दि. पराडकर का दुःखद निधन गतमास 13 दिसम्बर, 2012 को मुम्बई में हो गया। डॉ. पराडकर हिंदी, मराठी तथा संस्कृत के प्रकांड पंडित थे और मुम्बई हिंदी विद्यापीठ के कुलपति रहे। वे अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ के कोषाध्यक्ष थे। डॉ. पराडकर नागरी लिपि परिषद् के आजीवन सदस्य थे। उनके निधन से हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को अपूरणीय क्षति हुई है। नागरी लिपि परिषद् की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि।

★ "नागरी संगम" पत्रिका के "विश्वनागरी विशेषांक" का लोकापर्ण :–

भारत की विदेश राज्य मन्त्री, श्रीमती प्रनीत कौर द्वारा जोहांसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में दिनांक 22 से 24 सितम्बर 2012 तक आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर नागरी–संगम के विशेषांक का एक बड़े जनसमूह के बीच लोकार्पण किया गया। यह पत्रिका आचार्य विनोबा भावे की सदप्रेरणा से स्थापित नागरी लिपि परिषद् की पत्रिका है, जिसमें गत 37 वर्षों से नागरी लिपि के सम्बन्ध में देश–विदेश के मूर्धन्य लेखकों के शोधपूर्ण लेख प्रकाशित होते हैं। इसके प्रधान सम्पादक, डॉ. परमानंद पांचाल हैं और सम्पादक डॉ. आनन्द स्वरूप पाठक है।

प्रो. सी. ई. जीनी
मिज़ोरम भारत

★ नौवें विश्व हिंदी सम्मेलन में, डॉ. परमानंद पांचाल की नई कृति

"हिंदी भाषा : विविध आयाम" का विदेश राज्य मंत्री, श्रीमती प्रनीत कौर द्वारा लोकार्पण

जोहान्सवर्ग (दक्षिण अफ्रीका(में 22 से 24 सितम्बर 2012 को आयोजित नौवें विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर, डॉ. परमानंद पांचाल की नई पुस्तक "हिंदी भाषाः विविध आयाम" का लोकार्पण देश-विदेश से आए सैंकड़ों विद्वानों के मध्य भारत की विदेश राज्य मंत्री, श्रीमती प्रनीत कौर द्वारा किया गया। पुस्तक डॉ. पांचाल के विविध लेखों का एक उत्तम संग्रह है, जिसमें हिंदी भाषा, राजभाषा और देवनागरी पर लिखे गए उनके 38 श्रेष्ठ लेख संकलित हैं। डॉ. पांचाल की इस कृति में हिंदी की वैश्विक स्थिति, भाषिक साम्राज्यवाद और सांस्कृतिक संकट, आर्य द्रविड़-परिवार की भाषाओं के काल्पनिक सिद्धांत, दक्खिनी हिंदी, उच्च शिक्षा और हिंदी, रोजगार और हिंदी तथा देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता जैसे शोधपूर्ण लेख संग्रहीत हैं।

डॉ. पांचाल ने हिंदी के ऐसे प्राध्यापकों की भी खबर ली है, जो आज भी हिंदी के लिए रोमन लिपि अपनाने की सलाह देते नज़र आते हैं और आज भी अंग्रेजी लेखकों द्वारा अपनाई गई "आर्य-द्रविड़" परिवार नाम से विभाजन की नीति का ही राग अलापते हैं। पुस्तक में स्व. कमलेश्वर द्वारा डॉ. पांचाल की रचनाओं पर की गई टिप्पणी भी पठनीय हैं, जिसमें उनकी कृतियों की प्रशंसा करते हुए उन्हें बेमिसाल बताया है। यह पुस्तक भरत सरकार के अनुदान से प्रकाशित हुई है, जिसे हिंदी बुक सेन्टर, नई दिल्ली ने प्रकाशित किया है।

-डॉ. श्री भगवान शर्मा,
पूर्व प्राध्यापक सेन्ट जोन्स कॉलेज
आगरा, (यू.पी.)

★ हिंदी विश्वविद्यालय अपनी तरह का अनूठा विश्वविद्यालय बने : शिवराज

मध्य प्रदेश के पहले हिंदी विश्वविद्यालय के लिए भोपाल में विदिशा रोड पर पचास एकड़ भूमि चिन्हित की गई है। विश्वविद्यालय की ओर से हिंदी में शिक्षा का 'दृष्टि पत्र' तैयार किया जा चुका है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में यहां हुई बैठक में यह जानकारी दी गई। बैठक में हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति मोहनलाल छीपा और मुख्य सचिव आर परशुराम भी मौजूद थे।

चौहान ने बैठक में कहा कि हिंदी विश्वविद्यालय अपनी तरह का अनूठा विश्वविद्यालय बने और यहां विज्ञान व प्रौद्योगिकी के विषयों की पढ़ाई हिन्दी में हो। उन्होंने विश्वविद्यालय के भवन के लिए नियोजन प्लान बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मातृभाषा में प्रतिभा की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति होती है। बैठक में बताया गया कि विश्वविद्यालय में सभी विषयों की शिक्षा हिंदी में दी जाएगी। इसके लिए दो चरण में पाठ्यक्रम तैयार किए जाएंगे। विश्वविद्यालय हिंदी के विद्वानों का सम्मेलन भी आयोजित करेगा।

★ ऑस्ट्रलिया के स्कूलों में पढ़ाई जाएगी हिंदी

ऑस्ट्रलिया ने रविवार को अपनी महात्वाकांक्षी योजना की घोषणा की, जिसके तहत देश के स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जाएगी। इसके अलावा चीन की भाषा मंदारिन पढ़ाए जाने की भी योजना है। गिलार्ड सरकार का कहना है कि एशियाई देश लगातार प्रगति कर रहे हैं और स्कूलों में इन भाषाओं को पढ़ाकर उनके साथ बेहतर संपर्क बनाने का प्रयास किया जाएगा।

हाल ही में अपने पहले भारत दौरे पर आई ऑस्ट्रलिया प्रधानमंत्री जूलिया गिलार्ड ने कहा, 'जिस समय ऑस्ट्रलिया में परिवर्तन हो रहे थे, उस समय एशिया में भी परिवर्तन हो रहे थे।

एशियाई देश न केवल लगातार प्रगति कर रहे हैं, बल्कि उनकी प्रगति की रफ्तार भी बढ़ी है।'

उन्होंने कहा कि सभी ऑस्ट्रलियाई स्कूल हिन्दी, मंदारिन, इंडोनेशियाई और जापानी भाषा की पढ़ाई के एि एशिया के कम से कम एक स्कूल के साथ मिलकर काम करेंगे। गिलार्ड ने यह भी कहा कि ऑस्ट्रेलिया सभी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध रखता है। उन्होंने कहा, 'हम संयुक्त राष्ट्र की मजबूत उपस्थिति का समर्थन करते हैं। अमेरिका हमारा मित्र है। हम चीन का आदर करते हैं और इंडोनेशिया भारत, जापान व दक्षिण कोरिया के लिए भी हमारे दरवाजे खुले हुए हैं।' एशिया पर ध्यान केंद्रित करते हुए उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में 2025 तक विश्व के अधिकांश मध्यम वर्ग के लोग निवास कर रहे होंगे। इससे एशियाई देशों के साथ संबंध को लेकर हमारे विचारों में बदलाव आएगा।

विकास शिक्षा समिति
VIKAS SHIKSHA SAMITHI

(Regd. No. 2692/1993)
#4-1-66, Near Kalika Mandir, Himayath Sagar Road, (V)
Bandlaguda Jagir, Ranga Reddy Dist. - 500 086 (A.P.)

आंध्र प्रदेश, जिला रंगारेड्डी के ग्रामीण आंचल, बण्ड्लागुड़ा जागीर में पिछले दस वर्षों से सुयोग्य तथा कर्मठ अध्यापकों को तैयार करने में विकास शिक्षा समिति ने अपनी पहचान बनायी है।

1. भारत विकास हिन्दी महाविद्यालय
2. विकास हिन्दी पण्डित ट्रेनिंग कॉलेज
3. विकास तेलुगु पण्डित ट्रेनिंग कॉलेज
4. विकास बी.एड कॉलेज

की ओर से शिलांग में आयोजित दो दिवसीय (मार्च 20 एवं 21) अखिल भारत नागरी लिपि सम्मेलन के लिए शुभ कामनाएँ प्रस्तुत करते हैं।

वी. सुनीता (अध्यक्ष) **वी. नरसिंग राव** (कोषाध्यक्ष) **जी.एन. राजेन्द्र प्रसाद** (प्रधान कार्यदर्शी)

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद तथा हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद ट्रस्ट

स्थापना - 1935 रजि. क्र. – 101 / 1960

हिन्दी प्रचार सभा द्वारा संचालित परीक्षाओं को भारत सरकार तथा आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा स्थायी मान्यता है।

सभा का कार्य क्षेत्र महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा आन्ध्र प्रदेश इन तीनों क्षेत्र में हैं।

सभा द्वारा जिन परीक्षाओं का संचालन किया जाता है उसकी समकक्षता निम्न प्रकार है :–

प्रारंभिक परीक्षाएँ 1) नागरी बोध 2) प्रवेश 3) प्रथमा 4) मध्यमा 5) उत्तमा

उच्च परीक्षाएँ 1) हिन्दी विशारद S.S.C., 2) हिन्दी भूषण Inter, 3) हिन्दी विद्वान Degree, 4) हिन्दी शिक्षक हिन्दी पंडित

• इन परीक्षाओं के साथ–साथ हिन्दी पंडित प्रशिक्षण महाविद्यालयों का भी संचालन सभा द्वारा किया जाता है। उनके नाम इस प्रकार हैं :–

1) हैदराबाद, 2) नलगोण्डा, 3) महबूबनगर, 4) पेद्दापल्ली, 5) कडपा, 6) एलूरु, 7) राजमहेन्द्री, 8) अनकापल्ली, 9) पालकोण्डा, 10) पार्वतीपुरम

उपरोक्त महाविद्यालयों को N.C.T.E. द्वारा मान्यता प्राप्त है।

हिन्दी पंडित प्रशिक्षण कर हजारों छात्रों का भविष्य संवर गया है।

उक्त हिन्दी परीक्षाओं में लाखों विद्यार्थी सम्मिलित होकर अपने जीवन–यापन के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बने हैं।

प्रो. चन्द्रदेव भगवन्तराव कवडे (अध्यक्ष) **श्री सुरेश पुरी** (परीक्षा मंत्री) **श्री एम. प्रभु** (प्रधामंत्री एवं प्रबन्धन्यासी)

पाठकों के पत्र

★ आपका पत्रांक 102 दिनांक 25-10-2012 प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

आपके पत्रानुसार **अमेरिकी विद्वान रिप्लेभूर** का लेख **'INTRODUCTION TO THE DEVANAGARI EDITION'** संलग्न कर भेज रहा हूँ।

रिप्लेमूर की पुस्तक 'DEVANAGARI EDITION' प्रकाशक श्री ओम प्रकाश एवं उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित की गई।

आप ये पूरा लेख प्रकाशित कराने की कृपा करना अगर संभव न हो तो निशान वाले पैरा अवश्य प्रकाशित करा दें।

आप जैसा करेंगे वैसा ही आस्ट्रेलिया वाले करेंगे।

आगे आप जैसा अच्छा समझें वैसा प्रकाशित करा दें।

शुभकामनाओं सहित

आपका शुभेच्छु
कैलाश चन्द्र भाटिया

★ "नागरी संगम" का जुलाई-सितंबर 2012 अंक मिला। स्नेह के लिए हार्दिक आभार। अंक के आलेख ज्ञानवर्धक व उपादेय हैं। "विश्व लिपि के संदर्भ में देवनागरी" शीर्षक आपका आलेख शोधपरक एवं नागरी लिपि की वैज्ञानिकता तथा वैश्विक परिप्रेक्ष्य में इसकी विशेषताओं को रेखांकित करता है। डॉ0 आनंद स्वरूप पाठक, डॉ0 इसपाक अली, डॉ0 लोकेश चंद्र, डॉ0 चंद्रदत्त पालीवाल, डॉ0 धर्मकीर्ति, श्री विनोद बब्बर के शोध परक आलेख नागरी लिपि का विभिन्न कोणों से मूल्यांकन-परीक्षण करते हैं। "नागरी संगम" संभवतः नागरी लिपि को समर्पित एकमात्र पत्रिका है और इसे हिमालयी ऊँचाई देने में आपका अवदान वरेण्य-प्रशंसनीय है।

भवदीय
वीरेन्द्र परमार

★ डॉ0 श्री परमानंद पांचाल

आपसे प्रेषित "विश्वनागरी विशेषांक" की प्रति प्राप्त। धन्यवाद।

नागरी लिपि विश्व की सबसे बड़ी सुन्दर लिपि है। सभी भाषाओं के लिए इस लिपि का उपयोग हो जाय तो पढ़ने में, सीखने में आसान होगा। विश्व हिन्दी सम्मेलन में इसका काफी उपयोग हुआ है। यह पढ़ने में आसान भी होगा। भाषाओं की अलग-अलग लिपियां हैं। उसको सीखने में कठिनाई होती है। परंतु नागरी लिपि द्वारा आसानी से सीख सकते हैं। देवनागरी लिपि जिस प्रकार बोली जाती है, उसी प्रकार लिखी जाती है। अन्य भाषाओं में ऐसा नहीं हे। पूरे विश्व में इसका उपयोग होगा तो विश्व एक बन जायेगा।

आपकी बहन
बी0एस0 शांता बाई
प्रधान सचिव

नागरी लिपि परिषद के प्रमुख कार्यकर्ताओं का परिचय

संरक्षक

पद्म भूषण डा. लोकेशचन्द्र

पूर्व सांसद, जे 22, हौजखास दिल्ली-110006

विशिष्ट योगदान -- तिब्बती मंगोगल, तथा चीन और जापानी भाषा संस्कृति और बौद्ध धर्म के सुख्यात विद्वान आपने 400 से अधिक किताबें लिखी हैं जैसे – तिब्बती। संस्कृत कोश मैटीरियल फोर ए हिस्ट्र आफ तिब्बेतियन लिट्रेचर बुद्धिस्टआइकोनोग्राफी आफे तिब्बत, डिक्शनरी आफ बुद्धिस्ट आइकोनोग्राफी (20 भाग)

भारत के राष्ट्रपति द्वारा 1974-80 राज्यभाषा सदस्य नामित किए गये, 1980 से 1986 तक पुनः नामित

उपाध्यक्ष : इण्डियन काउन्सिल फोर कल्चरल रिलेशन्स अध्यक्ष : नागरी लिपि परिषद्

अध्यक्ष : इण्डियन काउन्सिल आफ रिसर्च, इन्टर नेशनल अकादमी आफ इण्डियन कल्चर के डाइरेक्टर संरक्षक – नागरी लिपि परिषद

संरक्षक

श्री बलदेव राज कामराह

(**जन्म स्थान** : उच्च शरीफ़ जिला रहीम यार खाँ, पाकिस्तान)

शिक्षा : प्रारम्भिक शिक्षा पाकिस्तान से आरम्भ हुई। 1947 के विभाजन के पश्चात् माता रामेश्वरी नेहरू द्वारा पिलानी, राजस्थान में शिक्षण प्राप्त किया एवं इसी दौरान आज़ादी के तुरंत पश्चात् राष्ट्रीय नेताओं (डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल, राजकुमारी अमृत कौर एवं पंडित नेहरू) की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रशिक्षण के लिए गांधी ग्राम विश्वविद्यालय, मदुरै में स्व0 सौंद्रर्यारामचन्द्रन एवं जी0 राजचन्द्रन का निकटस्थ सानिध्य प्राप्त हुआ।
गांधी स्मारक निधि के संचालन स्व0 स्वामी विश्वानंद जी एवं सी0 ए0 मेनन का विशेष स्नेह एवं संरक्षण प्राप्त हुआ।

श्रद्धा-वंश ग्रामीणों द्वारा 10 बीघा जमीन प्राप्त कर उनके द्वारा श्रम-दान एवं हर प्रकार की सहायता प्राप्त करके गांधी ग्राम सेवा केन्द्र स्थापित किया। आज भी यह केन्द्र अति सुन्दर रमणीय एवं आदर्श व्यवस्था बनाए हुए है जिसका पूर्ण संचालन ग्रामीण सदस्यों के द्वारा हो रहा है। 1965 में केन्द्र का पूरा का पूरा भार ग्रामीणों को सौंप कर अपनी पत्नी सहित शिक्षा का क्षेत्र पंजाबी-बाग को बनाया।

विद्यापति-संस्थान नाम से पंजीकृत संस्था स्थापित की जिसके द्वारा कई स्कूलों का संचालन किया जिसमें **न्यू स्टेट एकेडमी सीनियर सैकण्ड्री स्कूल** एवं **बाल-शिक्षा निकेतन तथा कामराह इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्फोर्मेशन टैक्नोलौजी**, मुख्य रूप से जाने तो हैं। इस कार्य-क्षेत्र में रहते हुए सतत् गांधी, स्मारक निधि, हरिजन सेवक संघ, अखिल भारतीय रचनात्मक समाज एवं नागरी लिपि परिषद् के साथ सक्रिय सम्बन्ध बनाए रखा।

अध्यक्ष

श्री सी0 वी0 चारी

सर्वोदय नेता, स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज सेवक श्री सी0 वी0 चारी का जन्म 7 अक्टूबर, 1931 को हुआ। उनकी प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा देवरकोण्डा एवं नलगोण्डा हाईस्कूल में हुई। आप नलगोण्डा हाईस्कूल के छात्र संघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। आपने निजा के अत्याचारी शासन के विरुद्ध स्वमी रामानन्द तीर्थ के नेतृत्व में हैदराबाद स्टेट स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। दो बार गिरफ्तार किए गये और रिहा किए गए। आपने ग्रामों में प्रदेश कांग्रेस के असहयोग आंदोलन एवं कर न दो अभियान का प्रचार किया।

निजाम़ के पुलिस के अत्याचारों के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रदेश कांग्रेस के बोर्डर कैम्प में शामिल हुए। नलगोण्डा जिले में 1951 में आचार्य विनोबा भावे द्वारा चलाए गए भूदान आंदोलन में शामिल हुए और तब से आज तक इस से जुड़े हुए हैं। इसी प्रकार, आन्ध्र प्रदेश में सर्वोदय कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे हैं। आपने 1961 से 1972 तक आन्ध्र प्रदेश सर्वोदय मंडल के सचिव के रूप में कार्य किया। आप आन्ध्र खादी नव निर्माण संघ के व्यवस्थापक सदस्य रहे हैं। आपने इस के सचिव के रूप में खादी एवं ग्रामोद्योग की प्रगति के लिए प्रशंसनीय कार्य किया है और आज भी सहयोग दे रहे हैं।

आपने आन्ध प्रदेश के बिहार समिति आन्ध्र प्रदेश बंला देश राहत समिति, गांधी जन्म शताब्दी समारोह समिति, आन्ध प्रदेश जय प्रकार नारायण, अमृत कोष समिति के सचिव के रूप में सेवाएं दी हैं। आप दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, आन्ध्र प्रदेश के कार्यकारी सदस्य रह चुके हैं तथा हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद के निर्वाचन समिति के संयोजक बनाए गए हैं।

श्री चारी ने अनगिनत शांति एवं सद्भावना यात्राओं का नेतृत्व किया है।

श्री चारी ने मैक्सिकों, अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन एवं यूरोप के अन्य देशों का भ्रमण भी किया है।

आप आन्ध्र प्रदेश नशाबन्दी समिति के उपाध्यक्ष, अन्त्योदय मण्डल तिरूपति (खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग, भारत सरकार द्वारा प्रमाणित) के अध्यक्ष और आन्ध्र प्रदेश भूदान बोर्ड के अध्यक्ष हैं तथा नागरी प्रचार-प्रसार के कार्य में अत्यन्त रूचि रखते हैं।

पता : सर्वोदय कार्यालय,
गांधी भवन हैदराबाद-500001

कार्यकारी अध्यक्ष

श्री सत्यपाल सैनी, स्वतंत्रता सेनानी

50 गौतम नगर, दिल्ली–110049

स्वतंत्रता संग्राम में जोश खरोश एवं बडे उत्साह से भाग लिया। 1942 में जेलयात्रा की, भारत सेवक समाज में सक्रिय कार्य किया, भारतीय कृषक सहकारी समिति का गठन किया। 1983 में पंजाब में शान्ति पदयात्रा में भाग लिया। भारतीय स्वतंत्रता सेनानी समिति के सचिव रहे। नागरी लिपि परिषद के अनेक सम्मेलनों में भाग लिया।

नागरी लिपि परिषद के कार्यों में विशेष रुचि, व सक्रिय योगदान देते हैं। मन वचन कर्म से गांधीवादी विचार धारा का अनुसरण करते हैं।

वर्मा, कनाडा यू.एस.ए. नेपाल आदि देशों की यात्रा की है।

उपाध्यक्ष

प्रो0 डॉ0 शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख़

शैक्षिक योग्यताएँ : एम.ए, बी.एड., एम.फिल्; पी–एच.डी. (पुणे वि0 व0)

प्राचार्य : मौलाना आजाद शिक्षा संस्थान से संचालित लोक सेवा कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, भूषण नगर, बिन्दु राष्ट्र चौक, गारखेड़ा परिसर औरंगाबाद महाराष्ट्र आप शोध निर्देशक भी हैं।

प्राप्त पुरस्कार/सम्मान :– आपको दस से अधिक पुरस्कार/सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। और अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष हैं।

सम्पर्क :– 78/484, सिविल हड़को, अहमदनगर–414003 (महाराष्ट्र)

दूरभाष : (2041) 2429886 भ्रमण ध्वनि : 09850119687

उपाध्यक्ष

डॉ0 व्यास नारायण दुबे

ीडर, साहित्य एवं भाषा अध्ययन शाला, पं0 रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर-492010 (छ.ग)

थायी पता : बी-2/5ए, मानस कुंज, लोकमान्य गृह निर्माण समिति, रोहिणीपुरम्, रायपुर-492010 (छत्तीसगढ़)

प्रकाशन : लिखित, सह-लिखित सह-संपादित एवं संपादित कृतियों की संख्या पाँच है एवं चार दर्जन से अधिक भाषाविज्ञान-विषयक एवं इतर लेख प्रकाशित हुए हैं।

शोध-निर्देशन : भाषा विज्ञान-विषयक 33 लघुशोध-प्रबंध एवं एक शोक-प्रबंध का निर्देशन। साथ ही 06 शोध-छात्रा भाषा विज्ञान-विषयक विभिन्न शीर्षकों में कार्य कर रहे हैं।

विशिष्ट क्षेत्र : समाजभाषाविज्ञान, बोली एवं भाषा-भूगोल, अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान।

विशिष्ट प्रकाशन : छत्तीसगढ़ जनभाषा

सम्मान : आपको अनेक सम्मान प्राप्त हो चुे हैं।

HINDI MAHAVIDYALAYA

(AUTONOMOUS)

(Arts, Commerce, Science and P.G. Centre) (Affiliated to B.I.E. & O.U.)

ADMISSION NOTIFICATION (2012-13)

First Language : English
Second Language : Hindi / Sanskrit
Intermediate
1. **Arts** : History Economics, Civics (H.E.C.)
   : Hindi, History, Civics (H.H.C.)
2. **Commerce** : Commerce, Economics, Civics (C.E.C.)
3. **Science** : Mathematics, Physics, Chemistry (M.P.C.)
   : Botany, Zoology, Physics, Chemistry (B.Z.P.C.)

4. (Vocational Courses)
1. Computer Science 2. Medical Lab Technician 3. Accounting and Taxation 4. Electrical wiring and SEA 5. Hospital Administration 6. Insurance 7. D.T.P. & P.T. 8. Office Management

APPLICATIONS ARE AVAILABLE AT THE COLLEGE OFFICE
Between 9.00 AM and 3.00 PM

DEGREE
1. **B.A.** : Hindi, History, Political Science (H.H.P.)
   Hindi, Economics, Political Science (H.E.P.)
2. **B.Com** : General
3. **B.Sc.** : Mathematics, Physics, Chemistry (M.P.C.)
   Botony, Zoology, Chemistry (B.Z.C.)

4. B.S.c. (English Medium) Biotechnology, Microbiology, Chemistry, Biochemistry, Microbiology, Chemistry, Mathematis, Physics, Computer Science, Mathematics, Statistics, Computer Science

Post Graduation
M.A. : Hindi
Certificate Course : (Classes Every Sunday) Astrology, Numerology, Palmistry, Vastu Shastra

B.B.A. (O.U.)
M.B.A. (JNTU)

University Road, Nallakunta, Hyderabad-44
Phone : 040-27616330 Fax : 040-27616330
Website : www.hindimahaidyalaya.org

महामंत्री

डा. परमानन्द पांचाल

एक भाषाविद् लेखक, समीक्षक एवं इतिहासकार के रूप में डा0 परमानंद पांचाल की हिन्दी सेवाओं का विस्तार बहुआयामी और बहुक्षेत्रीय रहा है। दक्खिनी हिन्दी के ख्याति प्राप्त होने के साथ–साथ आप ने भारत के एक द्वीप 'मिनिकॉय' की भाषा 'महल' और उसकी लिपि 'दिवेही' पर गवेषणात्मक कार्य किया है। देवनागरी लिपि के प्रति समर्पित हैं। 8वें विश्व हिन्दी सम्मेलन न्यूयार्क (अमरीका) में देवनागरी के सत्र में बीज भाषण दिया तथा विश्व हिन्दी सचिवालय, (मारिशस) में नागरी लिपि पर आयोजित अन्तरर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में विशेष भाषण दिया।

यू.के. क्षेत्रीय हिन्दी सम्मेलन बर्मिंघम (इंग्लैंड; में नागरी पर भाषण दिया। भारत सरकार में निदेशक (राजभाषा) के पद पर रहे और राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी के विशेष कार्य अधिकारी (भाषाएँ) के रूप में देश–विदेश में राष्ट्रपति जी द्वारा दिए गए हिन्दी भाषणों को तैयार करने के महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व का बड़ी सफलता से निर्वाह किया। त्रिनिडाड एवं टुबेगों में आयोजित पांचवें और न्यूयार्क में आयोजित 8वें तथा दक्षिण अफ्रीका में आयोजित 9वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में भारत सरकार के प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में भाग लिया। विदेश–मंत्रालय की ओर से प्रकाशित प्रथम 'स्मारिका–1996' का सम्पादन किया। साहित्य अकादमी की कार्य कारिणी समिति के सदस्य रहें। विश्व हिन्दी सचिवाल, मारिशस में नागरी लिपि पर विशेष भाषण।

विशेष :

(i) नागरी संगम पत्रिका के प्रधान संपादक।

(ii) अध्यक्ष; मातृभाषा विकास परिषद

(iii) अध्यक्ष, अमीर खुसरो अकादमी

(iv) अध्यक्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन, दिल्ली प्रदेश

(v) अध्यक्ष साहित्य संगम, नई दिल्ली

डॉ0 पांचाल दक्खिनी हिन्दी साहित्य के प्रख्यात व्याख्याता। 20 से अधिक ग्रन्थों के रचयिता हैं। उनके 301 से अधिक लेख विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं।

पुरस्कार : राहुल सांस्कृत्यायन पुरस्कार – पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा सम्मानित हिन्दी संस्था संघ द्वारा सम्मानित, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा विद्यावाचस्पति की मानद उपाधि

हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा 21 हजार रुपया का 'साहित्यकार पुरस्कार' सम्मान, द्वितीय हिन्दी भाषा कुंभ बंगलौर द्वारा अतिशिष्टि हिन्दी सेवी पुरस्कार, भारतीय साहित्य परिषद द्वारा जैनेन्द्र कुमार सम्मान।

विदेश यात्रा – पोलैंड, यूगोस्लाविया, ग्रीस, नेपाल, फ्रांस, मैक्सिको, अर्जेन्टीना, अमरीका, दुबई, हांगकांग, इंग्लैंड, स्विटरजरलैण्ड, मोरिशस, दक्षिण अफ्रीका आदि।

पता : 232ए, पाकेट–I, फेज-I, मयूर विहार, दिल्ली–110091

फोन : 09818894001

संपादक

डॉ. आनन्द स्वरूप पाठक

एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत अंग्रेजी प्री.) पी-एच.डी.
साहित्याचार्य (संस्कृत) साहित्य रत्न
पूर्व डिप्टीडाइटेक्टर, केविनेट सेक्रेटरीएट राष्ट्रपति भवन, भारत सरकार दिल्ली
संपादक - नागरी संगम पत्रिका

ाषा शास्त्र, हिन्दी साहित्य, ब्रजभाषा साहित्य और संस्कृति तथा संस्कृत का विशेष अध्ययन एवं खन।

ारत : कस्टम हाउस विलिंगडन आइलैंड कोचीन, केरल, संघ लोक सेवा आयोग (U.P.S.C.) दिल्ली, ज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, उद्योग मंत्रालय एवं केबिनेट सेक्रेटिएट दिल्ली में सरकारी ारत रहे।

ब्रभभारती, असम प्रदीप, भागवत पत्रिका, हिन्दी संघ समाचार, नागरी संगम पत्रिकाओं का संपादन ागरी संगम पत्रिका से अंक 50 से जुडे हैं।) अनेक ग्रन्थों और पुस्तकों का संपादन।

म्मान :- दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 1992 में सम्मानित राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैलसिंह शाल, प्रतीक, सम्मान पत्र, श्रीफल आदि द्वारा सम्मानित किया।

थायी पता : पंडित निवास दलपत खिड़की मथुरा-281001

र्तमान पता : डी. 106, पुष्पांजलि एन्कलेव, पीतम पुरा, दिल्ली-110034

कोषाध्यक्ष

श्री उमेश चन्द त्यागी

ारम्भिक शिक्षा सौभाग्य से गान्धीवादी शिक्षण संस्थाओं में हुई। विश्व विद्यालायीय परीक्षाएँ दिल्ली श्व विद्यालय से प्राप्त कर गांधी वादी एवं विनोबा वादी संस्थाओं के कार्यकलापों से जुड़े।

अनेक वर्षों से ग्राम विकास, जनजाति, अनु0 जनजाति विकास कार्य में (गांधी प्रणाली से) संलग्न ं। महिलाओं के उत्थान कार्य में अनेक संस्थाओं के माध्यम से कार्यतर हैं।

राजधानी पब्लिक स्कूल, राष्ट्रशक्ति पब्लिक स्कूल आदि शिक्षण संस्थाओं की संचालन व्यवस्था े सम्बद्ध, अनेक लेख प्रकाशित नागरी लिपि परिषद के कार्यक्रमों में लगभग एक दशक से सक्रिय हयोग। नागरी लिपि परिषद् के कार्यों में तन मन धन से समर्पित।

398 हस्तसाल गाँव, नई दिल्ली-110059

कार्यालय मंत्री

श्री रामकुमार पाराशर

एम0 ए0 बी0 कॉम
पूर्व सहायक निदेशक (राजभाषा)
आयकर विभाग (भारत सरकार, दिल्ली)

हिन्दी साहित्य, हिन्दी भाषा शास्त्र एवं ब्रजभाषा में विशेष रूचि, एवं लेखन कार्य।

संपादन : अखिल भारतीय काँग्रेस सेवादल द्वारा प्रकाशित पत्रिका के संपादक मंडल के सदस्य।

संप्रति - नागरी लिपि परिषद् के सक्रिय सदस्य एव कार्यकर्त्ता

नागरी लिपि परिषद के कार्यों में विशेष रूचि एवं सहायता -

स्थायी पता : गाँव व डा0 सोंनई, जिला मथुरा - 2812
वर्तमान पता : 8, विजय ब्लाक, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, दिल्ली-1100
फोन नं0 224321

प्रोफेसर डॉ0 अब्दुल अलीम

एम0 ए0 एम0 फिल0 पीएच0 डी0 (हिन्दी), अदीब माहिर (उर्दू),
सर्टिफिकेट कोर्स (संस्कृत एवं अरबी)।

वरिष्ठ रीडर, हिन्दी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

प्रकाशित कृतियाँ और लेख - 1. नज़ीर अकबराबादी और उनकी विचारधारा

2. जनकवि नज़ीर अकबराबादी (सम्पादित)

नागरी संगम, हिन्दुस्तानी, इन्द्रप्रस्थ भारती, आजकल, अभिनव भारती, निशान्त एवं अल-हबीब आ
पत्रिकाओं में अनेक लेख प्रकाशित।

आकाशवाणी से अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों पर एक दर्जनों वार्ताएँ प्रसारित

नागरी लिपि परिषद् नई दिल्ली ब्रज कला केन्द्र आगराः राष्ट्रीय हिन्दी परिषद् मेरठः नूरूल उल
एजूकेशन सोसाइटी, अलीगढ़ मिल्ली कौसिल यू0पी0 बोर्ड ऑफ स्टडीज, हिन्दी विभाग ए0 एम0
अलीगढ़ की कार्यकारिणी के सदस्य

श्री सुरजीत सिंह जोबन

(जन्म 24 जुलाई, 1950)

- ★ एम0 ए0 हिन्दी, राजनीति शास्त्र
- ★ दैनिक नवजीवन, दैनिक जागरण, पंथक समाचार, अमृत पत्रिका, दैनिक जत्थेदार, नई दिशा, कैदी, ताण्डव, के सम्पादकीय विभाग में कार्य किया।
- ★ नवभारत टाइम्स, दैनिक नवयुग, अजीत (पंजाबी), दैनिक ट्रिब्यून (पंजाबी), जागृति, सरिता, मुक्ता, दैनिक नवजीवन में सैंकड़ों लेख व कविताएं प्रकाशित।
- ★ देश की विभिन्न संस्थाओं द्वारा - विद्यावाचस्पति, सरस्वती राष्ट्रभाषा गौरव, ज्ञानी जेल सिंह स्मृति सम्मान, विश्वकर्मा भूषण, पत्रकार थी, पत्राकार गौर आदि आदि सम्मान।
- ★ तीसरा महायुद्ध कहानी संग्रह का संयुक्त सम्पादन।
- ★ उर्मिला (खण्डकाव्य), युगद्रष्टा गुरू गोविन्द सिंह, महाबलिदानी गुरू तेगबहादुर, रामगढ़िया शिरोमणि पुस्तकें प्रकाशित।
- ★ दिल्ली हिन्दी अकादमी की संचालन समिति के सदस्य
- ★ नागरी लिपि परिषद के सक्रिय आजीवन सदस्य

आन्ध्र प्रदेश हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद की प्रादेशिक सभा

श्रीराम हिन्दी भवन, एल.एन. गुप्ता मार्ग, स्टेशन रोड, नामपल्ली, हैदराबाद – 500001

सभा द्वारा संचालित होने वाली प्रारंभिक परीक्षाएँ :

हिन्दी नागरी बोध

हिन्दी प्रवेश

हिन्दी प्रथमा

हिन्दी मध्यमा

हिन्दी उत्तमा

राष्ट्रभाषा हिन्दी की परीक्षाओं में सम्मिलित होकर राष्ट्र की एकता बनाये रखें।

जय हिन्द, जय हिन्दी

एच. हीरालाल	अरविन्द कुमार शिन्दे	समीर कुमार डे
अध्यक्ष	मंत्री	व्यवस्थापक

डॉ0 इसपाक अली

एम. ए. (भूगोल, हिन्दी, शिक्षा शास्त्र)
पी0 · एच0 डी (हिन्दी, शिक्षाशास्त्र)

प्रिन्सीपल - लाल बहादुर शास्त्री, शिक्षा महाविद्यालय, बैंगलूर

हिन्दी भाषी क्षेत्र की तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्र की पत्रिकाओं में 300 तीन सौ से अधिक लेख प्रकाशित। नागरी संगम पत्रिका में लिपि सम्बन्धी 45 से
अधिक लेख प्रकाशित भारतीय लिपियों के विशेष ज्ञाता एवं लेखक आकाशवाणी बंगलौर से कविता पाठ/वार्ताएँ/साक्षात्कार प्रसारित।

सम्मान पुरस्कार : भारत की प्रसिद्ध अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कार प्रदान किए गये। नागरी लिपि परिषद् के शोध वर्ग के निबन्ध लेखन में प्रथम सीान प्राप्तकर पुरस्कार प्राप्त किए। **विद्यावाचस्पति** की अलंकृत।

अनेक हिन्दी संस्थाओं की कार्यकारिणी सभा के सदस्य - नागरी लिपि परिषद के सक्रिय आजीवन सदस्य।

वर्तमान सम्पर्क सूत्र
प्राचार्य लाल बहादुर शास्त्री शिक्षा महाविद्यालय
113/114, एस.सी. रोड, शेशाद्रिपुरम, बैंगलूर-560020
दूरभाष : 080-23469000

डॉ. ए. एच अकेला "अकेलाभाइ"

हिन्दी उद्घोषक

आकाशवाणी शिलांग मेघालय
योग्यता : एम.ए. पीएच.डी
सचिव पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी

अनेक हिन्दी संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित "स्वातंत्रोत्तर हिन्दी साहित्य के विकास में आकाशवाणी का अवदान विषय पर पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय (नेह NEHU) द्वारा डाक्टरेट की उपाधि

हिन्दी पत्र पत्रिकाओं में अनेक लेख प्रकाशित नागरी लिपि परिषद् के आजीवन सदस्य।

प्रो. (डॉ.) सी. ई. जीनी

एम. एम. (हिन्दी, भाषा विज्ञान)
एम एड - पीएच0 डी0)
पूर्व अध्यक्ष भाषा विभाग
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान - दिल्ली

डा. जीनी मिजोरम निवासी हैं, आपकी मातृभाषा मिजो है, आप अनेक भाषाविद् हैं। सन् 1998 से 2000 तक आप चीन के पिकिंग विश्व विद्यालय बीजिंग में
विजिटिंग फैवो के रूप में कार्यरत रही हैं। 'चीन सचित्र' का निमित रूप से संपादन किया है। विश्व हिन्दी सम्मेलन जोहन्सवर्ग में सम्मानित हैं।

कृतियाँ - हिन्दी, अंग्रेजी, मिजो कोश, मिजो लोक कथाएँ, चीन का इतिहास, भारतीय भावधारा के कथाशिल्प, प्रेमचन्द्र।

आप लुगते हिंदी स्कूल मिजोरम की कार्यकारी मंडल की परामर्शदात्री हैं और हिंदी के साथ भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में देवनागरी लिपि के प्रचार-प्रसार में सक्रिय रूप से संलग्न रही हैं और मिजो भाषा के लिए देवनागरी लिपि के प्रयाग पर बल देती रही हैं। इन्होंने आइजोल, मिजोरम में देवनागरी लिपि के संबंध में कोई संगोष्ठियां भी आयोजित की हैं। नागरी लिपि परिषद की सक्रिय आजीवन सदस्य हैं। वर्तमान में प्रेमचन्द्र पीठ मिजोरम की अधिष्ठाता हैं।

संगठन मंत्री

श्री नाहर सिंह वर्मा

एम. ए. (हिंदी) साहित्य रत्न
B/K 60, पश्चिमी शालीमार बाग, दिल्ली-110088

श्री नाहर सिंह वर्मा नागरी लिपि परिषद् दिल्ली के कर्मठ कार्यकर्ता हैं और वर्तमान में संगठन मंत्री हैं। श्री वर्मा भारत सरकार में राजभाषा विभाग में राजभाषा हिंदी के विभिन्न पदों पर कार्यरत रहें। आप संसदीय राजभाषा समिति,
(गृहमंत्रालय) भारत सरकार में कई वर्षों तक उप निदेशक/वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी (राजभाषा) के पद पर रह कर राजभाषा नीति और हिंदी कार्यान्वयन सम्बन्धी कार्य किए है। संसदीय राजभाषा समिति में इन्होंने मॉरिशस, दक्षिण अफ्रीका, केन्या, फ्रांस, स्विटरलेंड, इग्लैंड, और यू. ए. ई. आदि देशों का दौरा किया।

श्री वर्मा हिंदी और नागरी लिपि को समर्पित एक कर्मठ कार्यकर्ता, कुशल वक्ता और अच्छे लेखक हैं।

बाबा कानपुरी

श्री सन्तोष कुमार शर्मा 'बाबा कानपुरी'
एम. ए. बी. एड
ग्राम सदरपुर, सैक्टर-45, नोएडा-201303 (उ.प्र.)

कृतियाँ : बाबा कवि बर्राय (1981) पीछे से खुली खिड़की (1992), चौके-छक्के (1994) व्यक्तित्व एवं कृतित्व अभिनंदन ग्रंथ (1997) गज़ल संग्रह 'छप्पर बोलता है (2002), श्री दिव्य योग रामायण (2011)

काव्यपाठ : आकाशवाणी दूरदर्शन, साधना टी.वी. ई टी.वी, जैन टी.वी. में एवं सैकड़ों राष्ट्रीय काव्य मंचों से काव्यपाठ।

साहित्य सेवा : दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन 'सनेही मंडल' के संस्थापक महामंत्री, यूएसएम पत्रिका के सह संपादक, रचना रंगोली, वार्षिक के संदापक, संबन्ध सेतु (मासिक पत्रिका) के संपादक के रूप में निरन्तर साहित्य एवं समाज सेवा।

सम्मान : हास्य सम्राट, हास्य शिरोमणि, साहित्य शिरोमणि, विप्रफुल, भूषण, महामना सम्मान, आचार्य द्विवेदी, सम्मान एवं दर्जनों संस्थाओं द्वारा अभिनन्दन।

डॉ0 ब्रजपाल सिंह संत

एच.डी. रग्ल. टी. (स्काउटिंग)
4087 रामनगर विस्तार अशोक मार्ग, लोनी रोड, शाहदरा, दिल्ली-110032

कृतियां : देश देवता, स्वाधीनता की तरंग, घट-घट में चटखोर, लाइफ नं. 1, श्री इन वन, महापुरुषों के सम्मान में, काव्य सप्तक, संत गंगादास का काव्य मार बेटा छक्का, जमाना बदल गया, सच बोल मेरा बाप, रेलगाड़ी के पहिए आदि।

सम्मान : श्री साहित्य शिरोमणि हास्य व्यंग्य, ओज मंचीय काव्यपाठ।

श्री ओमप्रकाश आचार्य

पूर्व हिन्दी अधिकारी
रक्षा लेखा विभाग रक्षा लेखा नियंत्रक (वायु सेना) - रक्षा मंत्रालय

हिन्दी साहित्य, हिन्दी भाषा एव वैदिक धर्म तथा दर्शन में विशेष अभिरूचि।

सम्प्रति : नागरी लिपि परिषद में कार्यालय मंत्री एवं सक्रिय सदस्य। परिषद् द्वारा प्रकाशित 'नागरी संगम' पत्रिका के प्रबन्ध सम्पादक। नागरी लिपि परिषद कार्यालय के समस्त कार्यों का निर्वहन।

स्थायी पता : ई-62, प्रताप नगर, मयूर विहार फेज-I, दिल्ली-110091
फोन : 22754269 मोबाईल : 9958769599

BANK SURPASSES

₹2000 CRORE BUSINESS

REACHING ANOTHER SUMMIT

2000 crore and lots more...

Mahesh Bank is growing from strength to strength - the rising business which has now crossed ₹2000 crore reflects its unique place. What's more, the bank has also introduced Direct RTGS / NEFT facility, RuPay ATM Card facility, Internet Banking, Mutual Funds, Point of Sale Services (POS) and added many innovative products.

Contemplating to expand branch network as RBI has acceded to the request of the Bank to extend its area of operation in the entire States of Maharashtra, Rajasthan & Gujarat.

It's all possible owing to the confidence reposed by its key pillars of strength - customers, shareholders & well-wishers. The bank takes this opportunity to thank all for inspiring to succeed and supporting us with their patronage.

A big 'Thank You' once again to all, who made it possible.

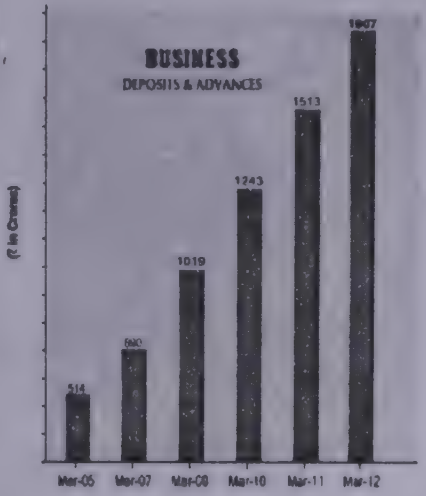

BOARD OF DIRECTORS

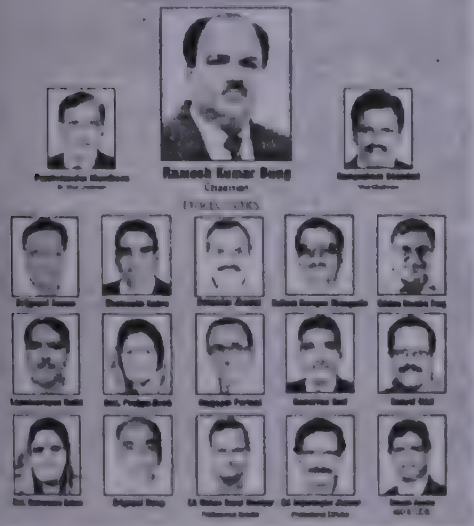

SALIENT FEATURES

- Network of 39 Branches with anywhere banking facility
- Extending expeditious and courteous service to more than 3 Lakh Customers.
- Avail Rupay ATM Card facility
- Direct RTGS / NEFT Facility from own platform.
- Technologically innovative "Net Banking" facility.
- Bank's Head Office has Accrediation of ISO 9001:2008 Certification
- Remittances from abroad through Western Union Money Transfer
- Tie up with Reliance for Mutal Funds Business.
- Life Insurance Solutions.
- Point of Sale services (POS) for Traders.
- e-Tax payment and e-Seva facility at select branches.
- Educational loans upto ₹20.00 Lakhs*.
- Acceptance of tax saving deposits under section 80C of Income Tax Act.
- Recipient of award from Banking Frontiers, Mumbai for "Operational Efficiency".

* Conditions apply

महेश बैंक

MAHESH BANK

THE A.P. MAHESH CO-OP. URBAN BANK LTD. (MULTI - STATE SCHEDULED BANK)

ESTD. 1978

H.O. : 5-3-989, 3rd Floor, Sherza Estate, N.S.Road, Osmangunj, Hyderabad - 500 095 (A.P.) INDIA

Phones : 040 - 24615296/5299, 23437100/101/102/103 & 105 Fax: 040-24616427

39 NET RTGS 100%

अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन

पंणजी, गोवा

वर्ष 2013 के अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

अंत्योदय मण्डल

खादी कमीशन द्वारा प्रमाणित

गान्धी भवन, हैदराबाद

जी. वी. सुब्बाराव

अध्यक्ष

बी.एस. प्रकाश राव

प्रबंध न्यासी

प्रो. वी. सुब्रहमन्यम्

मंत्री

AMBA HOSPITAL

अम्बा हास्पिटल

बहुविशिष्टता तथा रोग-निदान सेवा केंद्र

सन् 1982 ई. में **डॉ. सुरेश शुक्ला,** एम.बी.बी.एस., डी.ए.सी.
(दिल्ली) द्वारा स्थापित

1081, अम्बा निवास, विजयनगर कॉलोनी,
हैदराबाद-500 057 (आं. प्र.)
फोन : 23344162, 55500276
(निवास : 23340477 (अस्पताल)

चौबीसों घंटे विभिन्न सेवाएँ उपलब्ध एवं अम्बा प्रसाद चैरिटेबल ट्रस्ट

एक ऐसी परोपकारिणी संस्था है जो ज़रूरतमंदों की सेवा में सदा तत्पर और नगरद्वय में निःशुल्क चिकित्सा शिविरों का आयोजन करती है।

510, रीता शुक्ला, एम.बी.बी.एस., डी.जी.ओ.

35वां अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन
के अवसर पर

शुभ कामनाएं

देश की सभी भाषाएं नागरी लिपि में लिखी जाएं।

-विनोबा

सर्व सेवा ट्रस्ट

गाँधी दर्शन, हैदराबाद

ट्रस्टीया :-
सी. वी. चारी, आशीश चौधरी,
सुरेन्द्र लूणिया, डा. एस के वर्मा
अशोक कुंडलिया

विजय भास्कर

मैनेजर

हिन्दी अकादमी, दिल्ली

(राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार)
समुदाय भवन, पदमनगर, किशनगंज, दिल्ली-7
दूरभाष - 23690274, 23693118, 23694562, फैक्स- 23696897
E-mail hindiacademydelhi@gmail.com, hindiacademy_delhi@vsnl.net

अकादमी के प्रकाशन

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक/संपादक/अनुवादक	मूल्य
1.	दिल्ली जो एक शहर है	महेश्वर दयाल	325.00
2.	यादगारे गालिब	मौ. अल्ताफ हुसैन 'हाली'	125.00
3.	जिक्रेमीर	अनु. अब्दुल बिस्मिल्लाह भाषातरकार, अजमल अजमली संपादकः श्रीकृष्णदास	100.00
4.	भारतीय संस्कृति मुगलविरासत औरंगजेब के फरमान	डॉ. विश्वभरनाथ पांडे	45.00
5.	राष्ट्र भाषा हिन्दी का स्वरूप, विकास और समस्याएँ	डॉ. बिजग्रेन्द्र स्नातक	12.00
6.	मंझधार और किनारा	सुहेल एजाज सिदि्दकी	100.00
7.	महाप्राण गांधी	उमेश सहगल अनु. डॉ. रामप्रकाश	125.00
8.	डॉ. जाकिर हुसैन	ज़िया उल हसन फारूकी	50.00
9.	कविता-दशक	संपा. डॉ. केदारनाथ सिंह	75.00
10.	समीक्षा-दशक	संपा. प्रो. निर्मला जैन	75.00
11.	भाषा-विमर्श	संपा. डॉ. मुकुंद द्विवेदी	75.00
12.	भारतीय भाषाएँ और राष्ट्रीय अस्मिता	संपा. डॉ. मुकुंद द्विवेदी	160.00
13.	दिल्ली और हिन्दी साहित्य	संपा. सचिव हिन्दी अकादमी, दिल्ली	300.00
14.	शताब्दी का निबन्ध	संपा. डॉ. मुकुंद द्विवेदी	550.00
15.	हिन्दी गद्य एक अन्य विधाएं	संपा. डॉ. मुजीब रिजवी डॉ. हीरालाल बाछोतिया	450.00
16.	सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा	मोहनदास करमचन्द गांधी अनु. काशिनाथ त्रिवेदी	140.00
17.	हिन्द स्वराज	मोहनदास करमचन्द गांधी अनु. अमृतलाल ठाकोरदास नाणावटी	45.00
18.	नमक के स्वाद जैसा कुछ 'कविता संग्रह'	ऋतु कुमार ऋतु	100.00
19.	परंपरा और प्रतिरोध	सदानन्द साही	125.00
20.	हिन्दी काव्य चिंतन कि परंपरा	दीपक *प्रकाश* त्यागी	100.00
21.	देशान्तर (प्रवासी भारतीयों की कहानियाँ)	संपा. तेजेन्द्र शर्मा	170.00
22.	देशान्तर (प्रवासी भारतीयों की कविताएँ)	संपा. उषा राजे सक्सेना	शीघ्रप्रकाशय

उपर्युक्त सभी पुस्तकें अकादमी के हिन्दी प्रसार केन्द्रों से या अग्रिम धनराशि (मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा सचिव 'हिन्दी अकादमी, दिल्ली के नाम) भेज कर मंगवायी जा सकती हैं। कृपया अधिक जानकारी के लिए पत्रिका/प्रकाशन (विक्रय) अनुभाग, हिन्दी अकादमी, दिल्ली (मुख्यालय), पदमनगर, किशनगंज, दिल्ली-7 से सम्पर्क करें।

इन्द्रप्रस्थ भारती (त्रैमासिक पत्रिका)
(मूल्य एक प्रति-25/- रू. वार्षिक शुल्क-100 रू. त्रैवार्षिक शुल्क-300/- रू)

डॉ. हरिसुमन बिष्ट
सचिव हिन्दी अकादमी, दिल्ली
एवं संपादक, इन्द्रप्रस्थ भारती

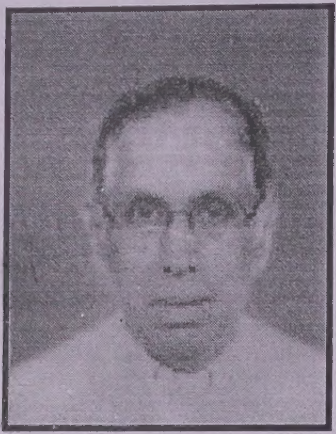

फादर माउसिन हो डी अतैडे (गोवा)

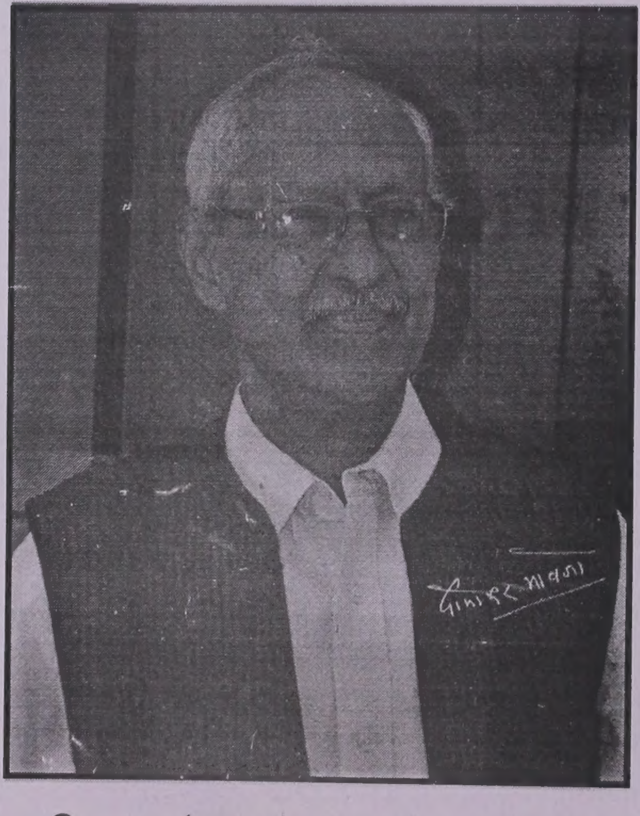

श्री दामोदर मावजो (गोवा)

BOOKS IN ENGLISH

BINODINI *(Chokher Bali, Bengali Classic)*
Tr. Krishna Kripalani Pp.viii+247 **Rs.90/-**

CHATURANGA *(Quartet, Bengali Classic)*
Tr. Asok Mitra Pp.viii+92, **Rs.50/-**

GORA *(Bengali Classic)*
Tr. Sujit Mukherjee Pp.xxiv+498, **Rs.125/-**

ENGLISH WRITINGS OF R.N. TAGORE VOL-1
(Poems) Ed. Sisir Kumar Das, Pp.670, **Rs.450/-**

ENGLISH WRITINGS OF R.N. TAGORE VOL-2
(Plays, Stories, Essays), Ed. Sisir Kumar Das
Pp.780, **Rs.450/-**

ENGLISH WRITINGS OF R.N. TAGORE VOL-3
(Miscellany), Ed. Sisir Kumar Das
Pp.1020, **Rs.650/-**

ENGLISH WRITINGS OF R.N. TAGORE VOL-4
(Miscellany), Ed.Nityapriya Ghosh, Pp.811, **Rs.650/-**

TAGORE WITHOUT BOUNDS *(Samvatsar Lecture)*
By Subhas Mukhopadhyay, Pp.58, **Rs.25/-**

RABINDRANATH TAGORE: A CENTENARY VOLUME
(1861-1961) *(A valuable study on the many aspects of Tagore's personality and genius)*
Pp.xxvi+534, **Rs.450/-**

BOOKS IN HINDI

RABINDRANATH KI KAHANIYAN BHAG-1
Tr. Ramsingh Tomar, Pp.364, **Rs.125/-**

RABINDRANATH KI KAHANIYAN BHAG-2
Tr. Kankia Tomar, Pp.272, **Rs.100/-**

ANKH KI KIRKIREE *(Chokher Bali)*
Tr. Hans Kumar Tiwari, Pp.196, **Rs.75/-**

YOGAYOG *(Bengali Novel Jogajog)*
Tr. Ila Chandra Joshi, Pp.231, **Rs.60/-**

GORA *(Bangali Novel)*
Tr. Sachidanand Vatsyayan, Pp.404, **Rs.125/-**

RABINDRANATH KA BAL SAHITYA BHAG-1
Tr. Yugjit Nawalpuri, Pp.160 , **Rs.35/-**

RABINDRANATH KA BAL SAHITYA BHAG-2
Tr. Yugjit Nawalpuri, Pp.170, **Rs.35/-**

RABINDRANATH KI KAVITAYEN
Tr. Hazari Pd. Dwivedi, Ramdhari Singh Dinkar, Hans Kumar Tiwari, Bhawani Prasad Mishra
Pp.304, **HB Rs.125/-, PB Rs.90/-**

RABINDRANATH KE NATAK BHAG1
Tr. Prafulchandra Ojha, Bharat Bhushan Aggarwal & Hans Kumar Tiwari, Pp.308, **Rs.150/-**

RABINDRANATH KE NATAK BHAG2
Tr. Sachidanand Vatsyayan, Bharat Bhushan Aggarwal, Hazari Prasad Dwivedi & Prafulchandra Ojha, Pp.244, **Rs.140/-**

साहित्य

Sahitya Akademi

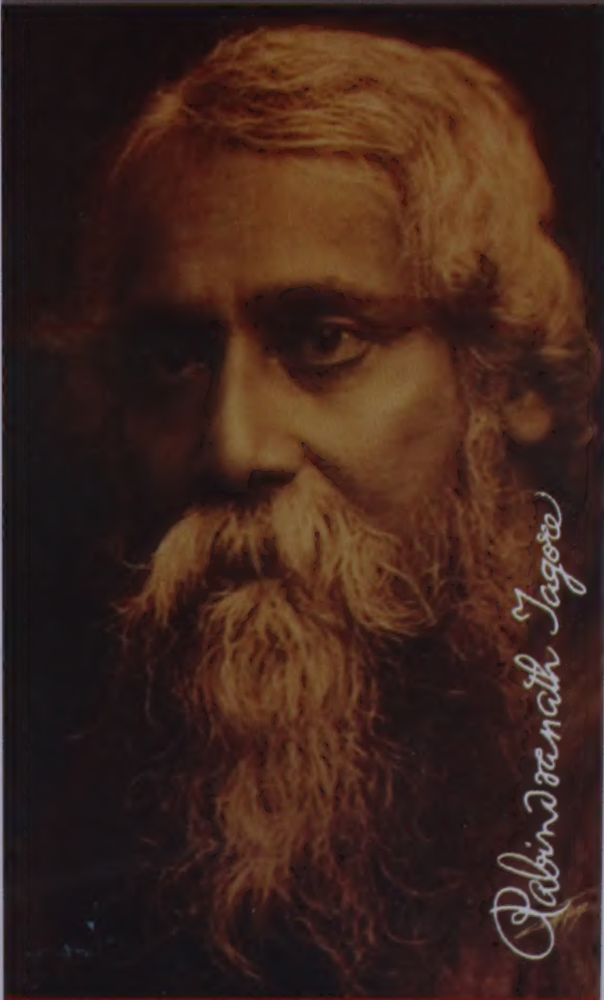

For all your orders mail to: **Sahitya Akademi** (Sales Wing) SWATI, Mandir Marg, New Delhi 110 001, India

R.No. 45855/78

सन् 1968 में पंजीकृत विद्यापति संस्थान द्वारा संचालित
दिल्ली विद्यालयों के अतिरिक्त भारत व हरियाणा
सरकार व AICTE & NCTE से मान्यता प्राप्त

के०आई०आई०टी० (KIIT)

(KAMRAH INTERNATIONAL INSTITUTE OF TECHNOLOGY)

M.D. UNIVERSITY-AFFILIATED REGULAR COLLEGES at Sohna Road, (Bhondsi) Gurgaon

MBA, MCA, BBA, BCA & BBA (BE)

M.Tech, B.Tech (Civil & Mech.), CSE, ECE, EEE

M.Ed., B.Ed. B.El.Ed.

KIIT GIRLS HOSTEL

KIIT BOYS HOSTEL

KIIT WORLD SCHOOL, PITAMPURA NEW DELHI

Contact: 0124-2265266, 3949342, 4709010, 09811626767, Visit us at www.kiit.in or write to brk1928@gmail.com

नागरी लिपि परिषद् के लिए डॉ० परमानन्द पांचाल मंत्री द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा
गुप्ता इंटरप्राइजेज 2023, कूचा चेलान, दरियागंज, नई दिल्ली-2 द्वारा मुद्रित